ज्योतिष संजीवनी

Name - Sample

Date - 18/12/1973 **Time - 01:45:00**

POB - Ballia (up), INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

MindSutra Software Technologies

www.mindsutra.com, www.webjyotishi.com

Contact - 9818193410, 9350247058

© Mindsutra's StarLight Premium 11

श्री गणेशाय नमः

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	18 दिसम्बर 1973
जन्म समय	01:45:00
जन्म दिन	मंगलवार
जन्म स्थान	Ballia (up)
राज्य	
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	01:51:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	07:36:55 hrs
इष्ट काल	47: 52: 16 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	2030
शक संवत	1895
संवत्सर	प्रमादी
ऋतु	हेमन्त
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
वार	सोमवार
तिथि	नवमी
नक्षत्र (पद)	हस्ता (2)
योग	सौभाग्य
करन	गरिज

अवकहड़ा चक्र

पाया	स्वर्ण
वर्ण	वैश्य
वश्य	द्विपद
योनि	महिष (स्त्री)
गण	देव
नाड़ी	आदि
रज्जु	कंठ
तत्व	अग्नि
तत्वाधिपति	मंगल
विहग	वायस
नाड़ी पद	मध्य
वेध	शतभिषा
आद्याक्षर	श
दशा बैलेंस	चन्द्रमा – 5व05मा026दि0
वर्तमान दशा	शनि–बुध–बुध
भयात	27: 30: 35 Ghati
भभोग	61: 31: 25 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	धनु
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	धनु
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:29:36
देकानेट	3
फेस	VI
सूर्योदय	06:36:32AM
सूर्यास्त	05:03:05PM
जन्मदिन का ग्रह	चन्द्रमा
जन्मसमय का ग्रह	शनि

लग्न
कन्या

राशि
कन्या

नक्षत्र – पद
हस्ता – 2

लग्नाधिपति
बुध

राशिपति
बुध

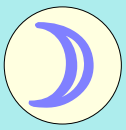

नक्षत्रपति
चन्द्रमा

घात चक्र

भद्रा अशुभ मास	शनिवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मिथुन अशुभ राशि	मीन अशुभ लग्न	5, 10, 15 अशुभ तिथि
श्रावण अशुभ नक्षत्र	सुकर्मन अशुभ योग	कौलव अशुभ करन

शुभ बिन्दु

9 मूलांक	5 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
2, 4 शत्रु अंक	18, 21, 23, 27, 30, 32, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार शुभ दिन
बुध, शुक्र शुभ ग्रह	मंगल, गुरू अशुभ ग्रह	धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र राशि
धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
हीरा भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूरस शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रव्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य	धनु 02:15:49 मूला (1) सम राशि	चन्द्रमा	कन्या 16:00:57 हस्ता (2) मित्र राशि
मंगल	मेष 04:42:18 अश्विनी (2) स्व नक्षत्र	बुध (अ.)	वृश्चिक 19:51:24 ज्येष्ठा (1) स्व राशि
गुरू	मकर 17:56:39 श्रवण (3) स्व नक्षत्र	शुक्र	मकर 13:00:16 श्रवण (1) नीच राशि
शनि (व.)	मिथुन 08:12:33 अरिद्रा (1) मित्र राशि	राहु	धनु 05:10:35 मूला (2) मित्र राशि
केतु	मिथुन 05:10:35 मृगशिर (4) सम राशि	हर्षल	तुला 03:20:59 चित्रा (4) सम राशि
नेपच्यून	वृश्चिक 14:20:41 अनुराधा (4) सम राशि	प्लूटो	कन्या 13:11:14 हस्ता (1) सम राशि
लग्न	कन्या 28:15:29 चित्रा (2) ---	10वां कस्प	मिथुन 28:56:27 पुनर्वसु (3) ---

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह	व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC लग्न		♍ कन्या	28:15:29	चित्रा (14)	2		
☉ सूर्य		♐ धनु	02:15:49	मूला (19)	1	दारा	मित्र राशि
☽ चन्द्रमा		♍ कन्या	16:00:57	हस्ता (13)	2	भ्रात्रि	स्व नक्षत्र
♂ मंगल		♈ मेष	04:42:18	अश्विनी (1)	2	ज्ञाति	स्व राशि
☿ बुध	अ.	♏ वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (18)	1	आत्म	स्व नक्षत्र
♃ गुरू		♑ मकर	17:56:39	श्रवण (22)	3	अमात्य	नीच राशि
♀ शुक्र		♑ मकर	13:00:16	श्रवण (22)	1	मात्रि	मित्र राशि
♄ शनि	व.	♊ मिथुन	08:12:33	अरिद्रा (6)	1	अपत्या	मित्र राशि
☊ राहु		♐ धनु	05:10:35	मूला (19)	2		सम राशि
☋ केतु		♊ मिथुन	05:10:35	मृगशिर (5)	4		सम राशि
⚷ हर्षल		♎ तुला	03:20:59	चित्रा (14)	4		सम राशि
♆ नेपच्यून		♏ वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (17)	4		सम राशि
♇ प्लूटो		♍ कन्या	13:11:14	हस्ता (13)	1		सम राशि

नोट : – (व.) – वक्री, (अ.) – अस्त

लग्न कुण्डली

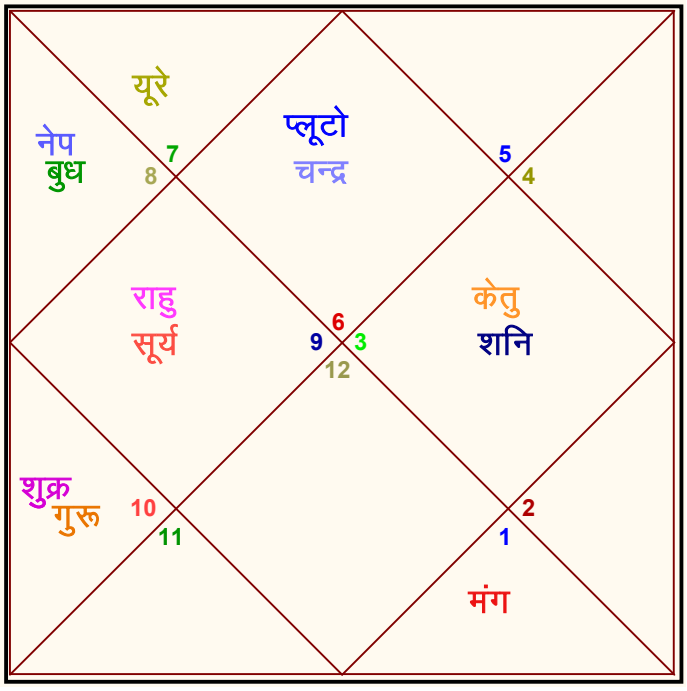

नवांश कुण्डली

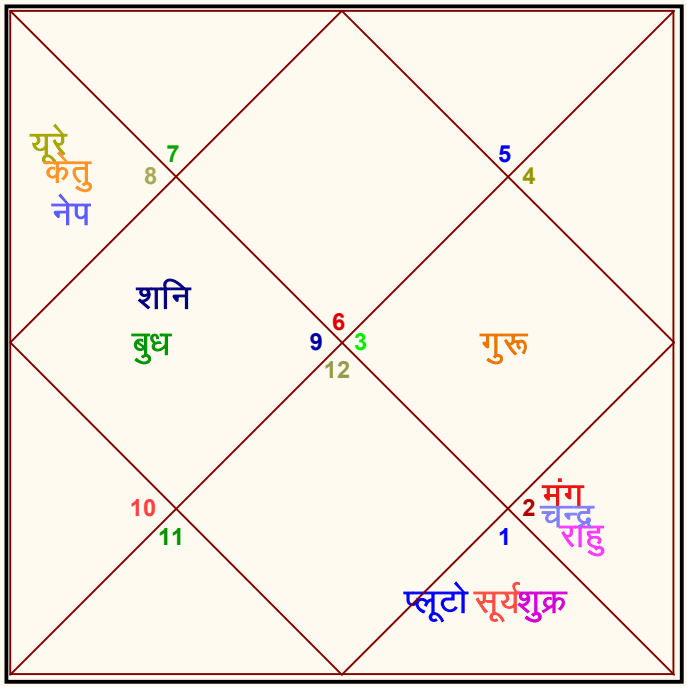

षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

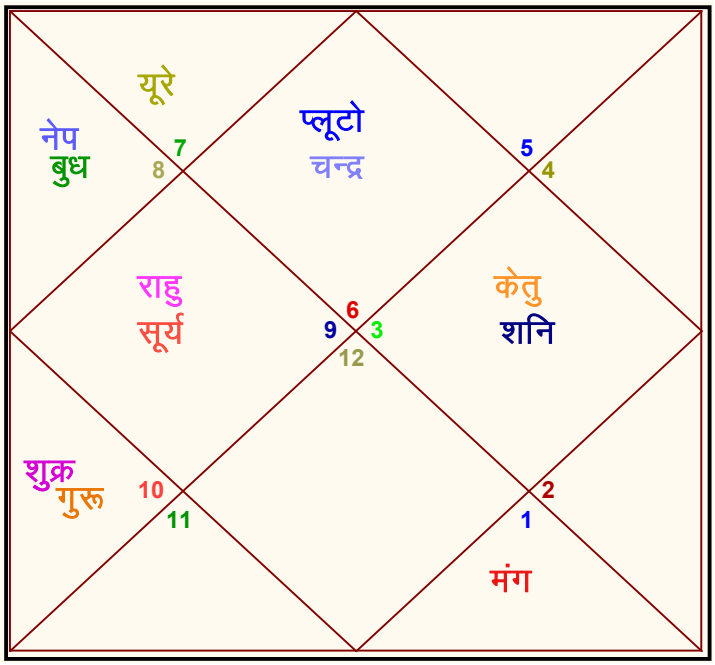

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

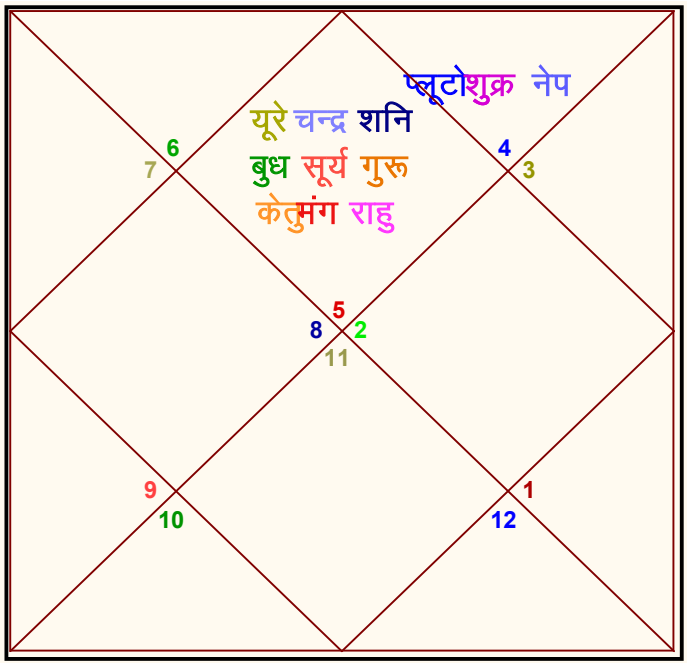

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

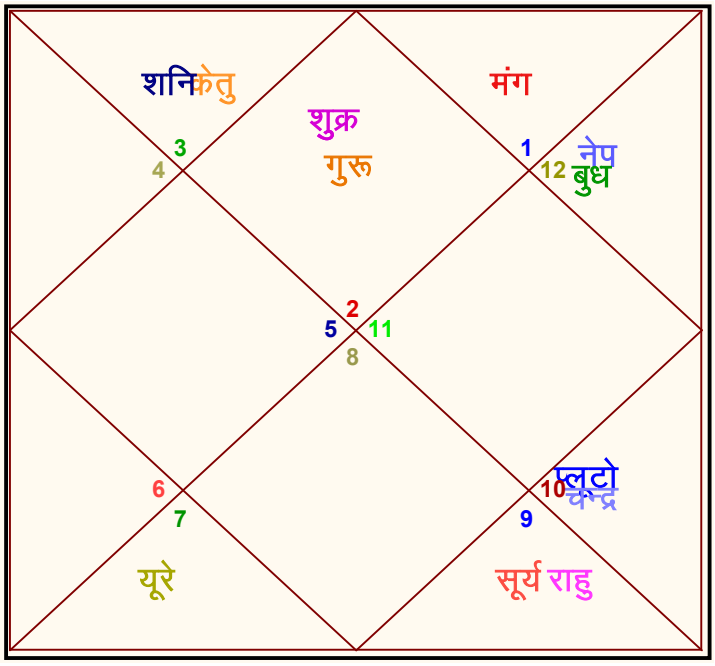

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई–बहनों, चचेरे भाई–बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

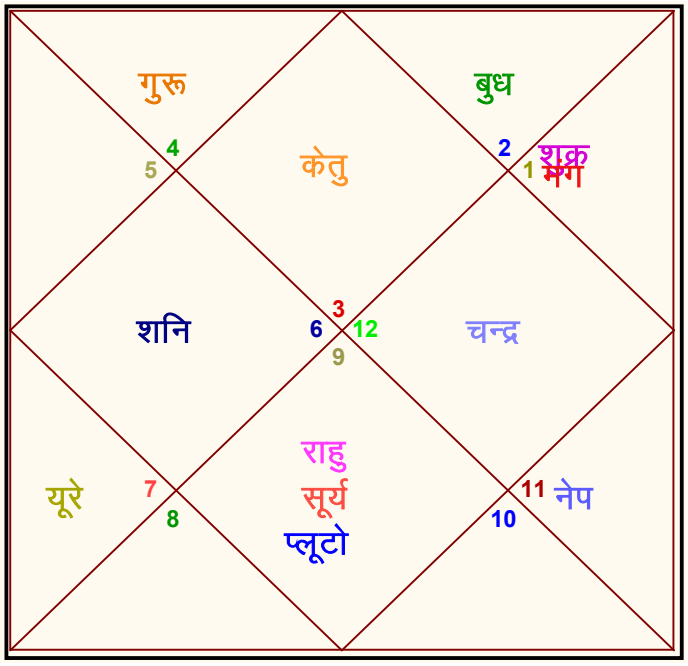

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

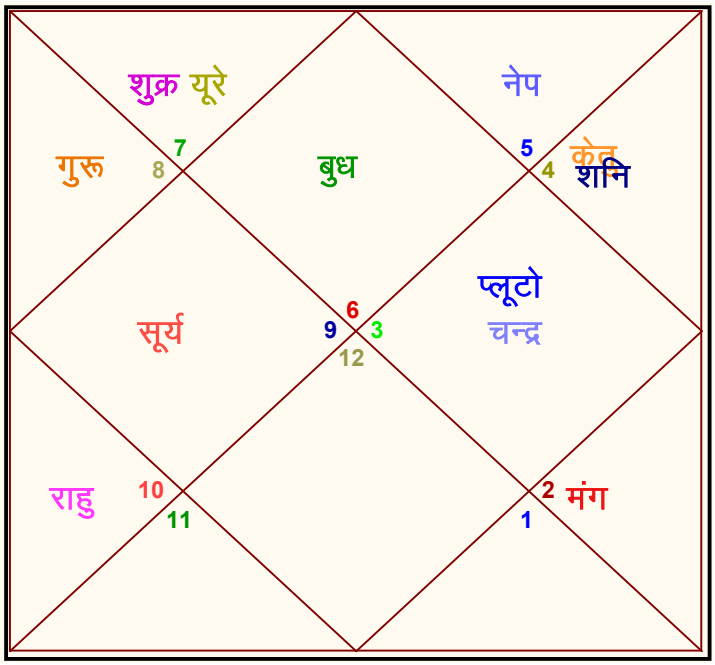

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

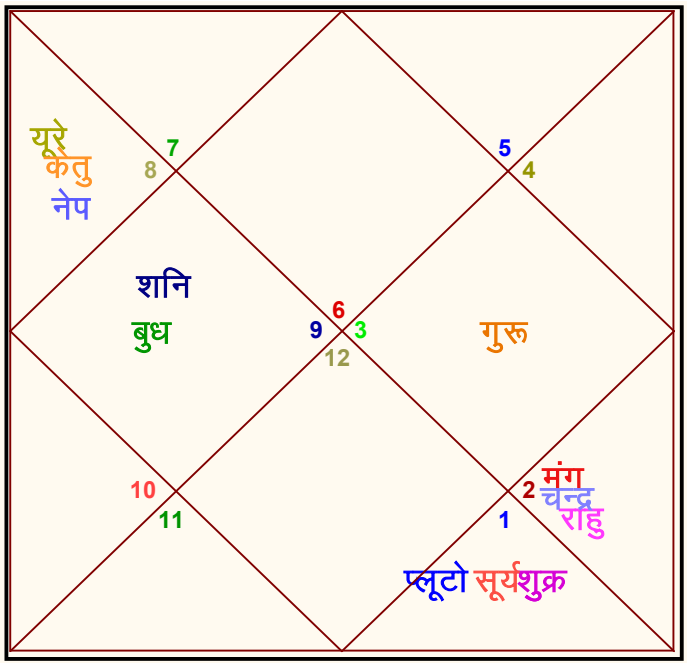

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

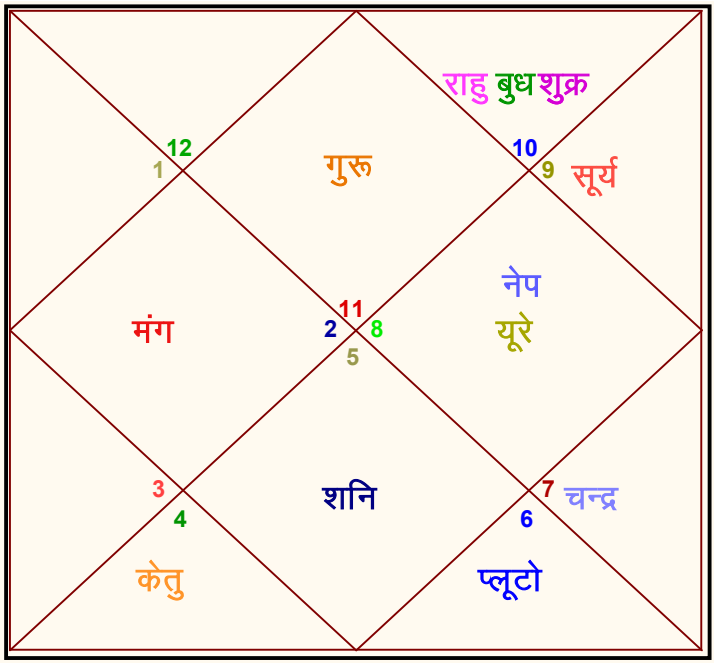

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

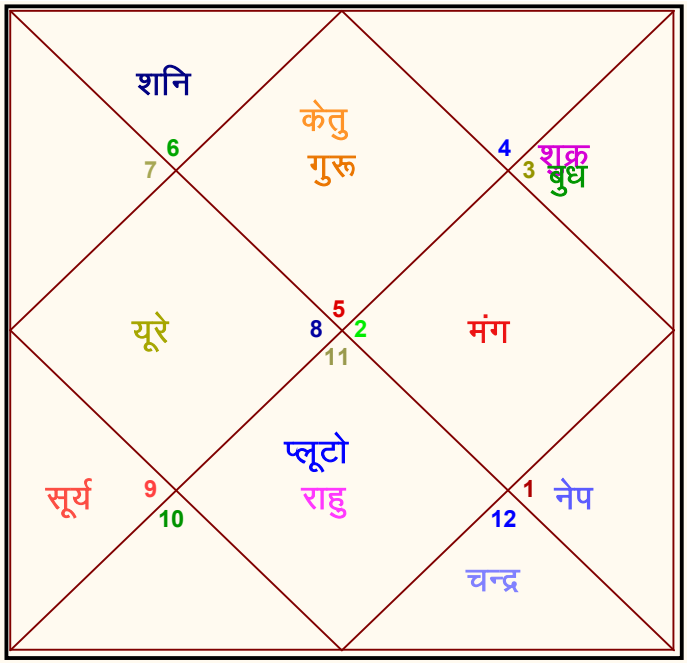

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता–पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता–पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

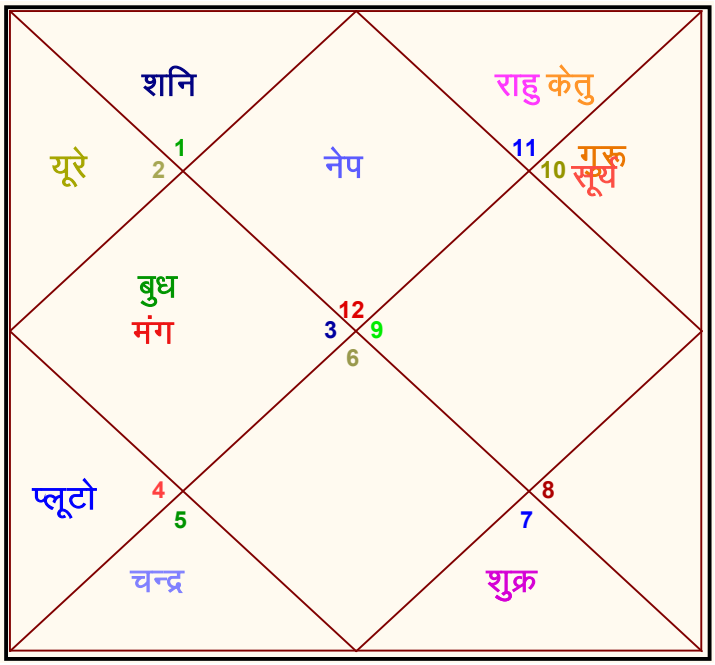

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के ऑटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

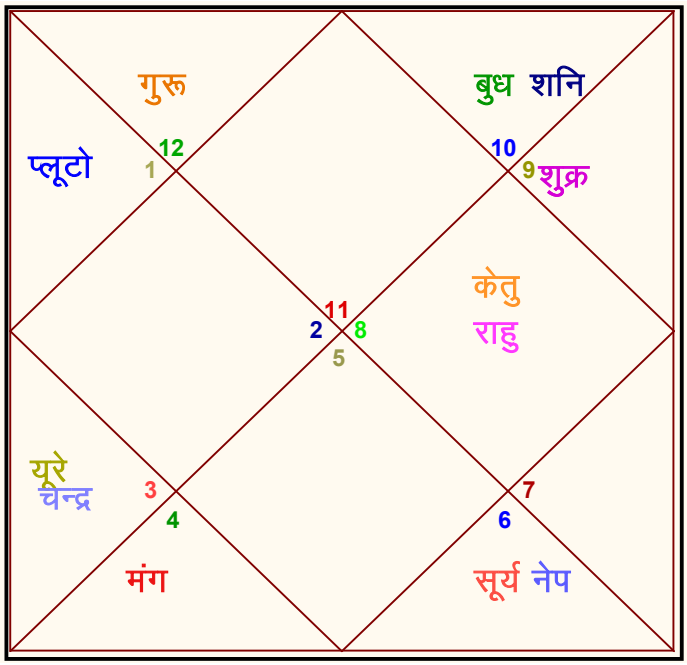

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

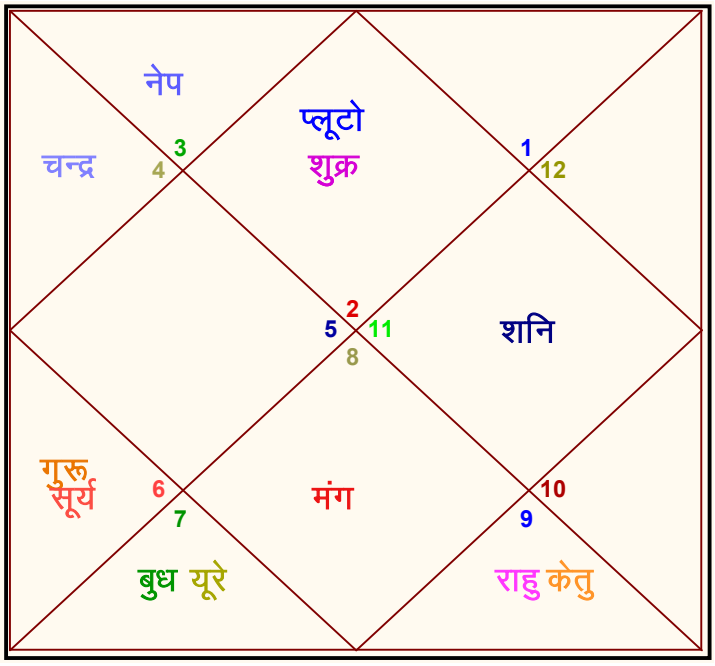

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

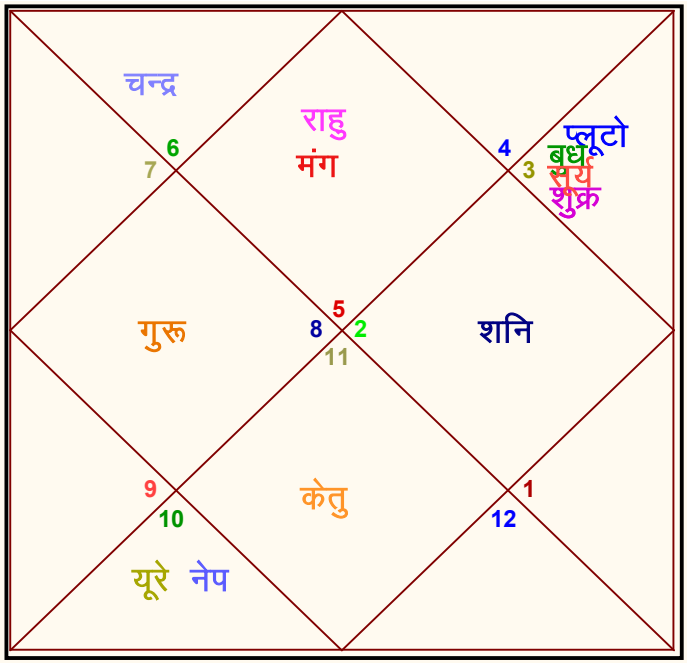

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

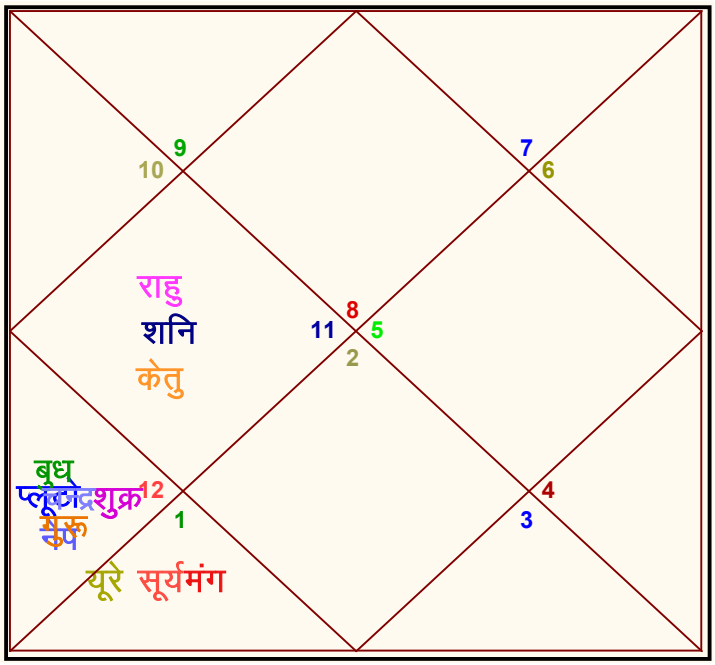

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

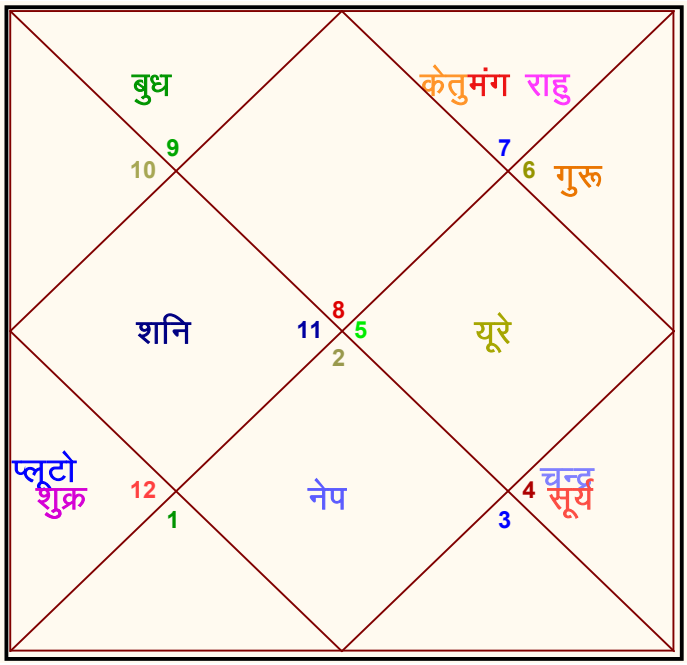

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

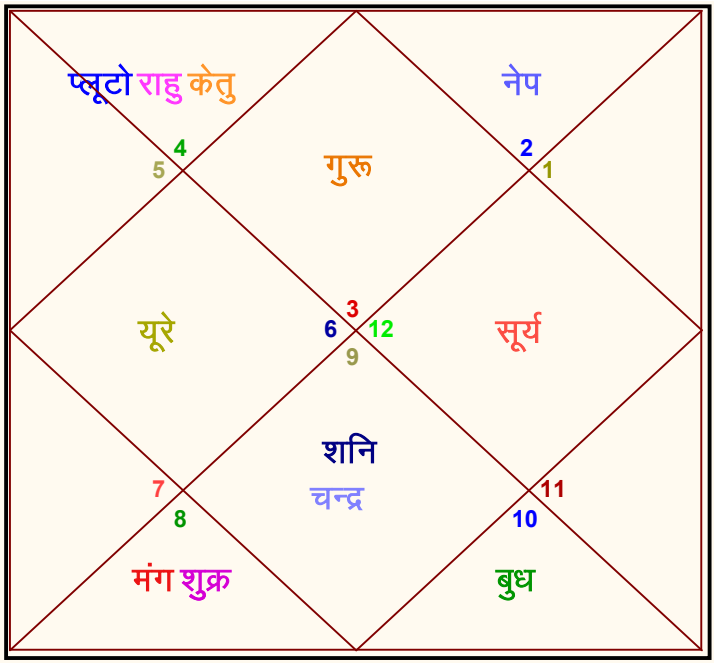

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

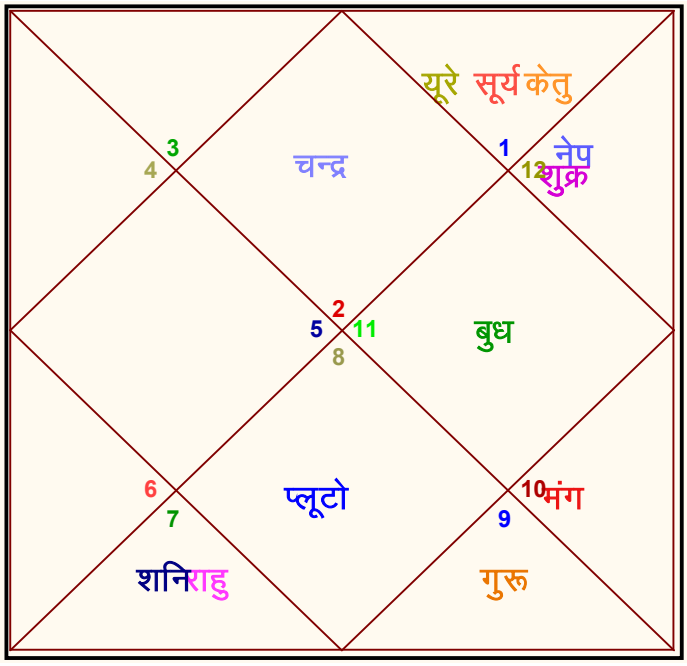

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षोडश वर्ग कुण्डली

पंचमांश कुण्डली (डी 5)

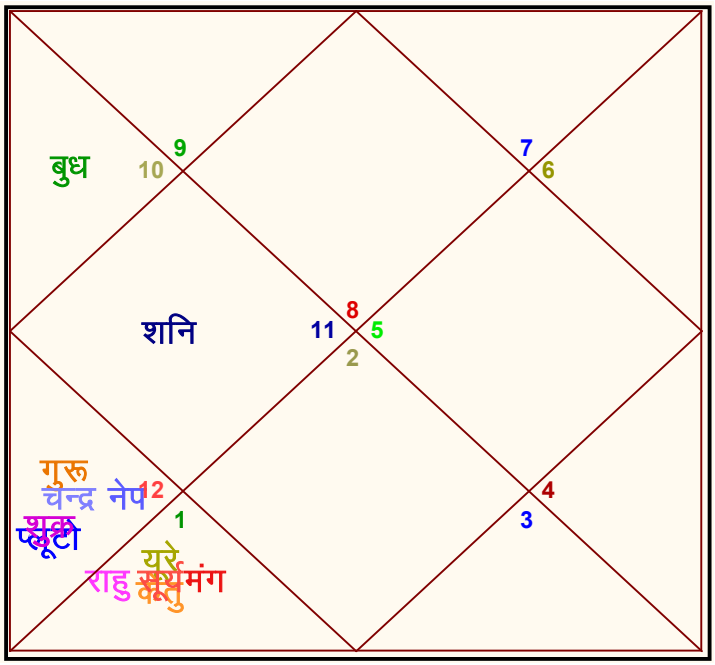

पंचांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 5 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 6 डिग्री में मापता है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। यह मुख्य रूप से जीवन के विभिन्न पहलुओं में किसी व्यक्ति की छिपी हुई प्रतिभा और क्षमता में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह उन ज्योतिषियों के लिए उपयोगी जानकारी हो सकती है जो लोगों को उनके विशेष कौशल और गुणों की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने में मार्गदर्शन करते हैं।

षष्टमांश कुण्डली (डी 6)

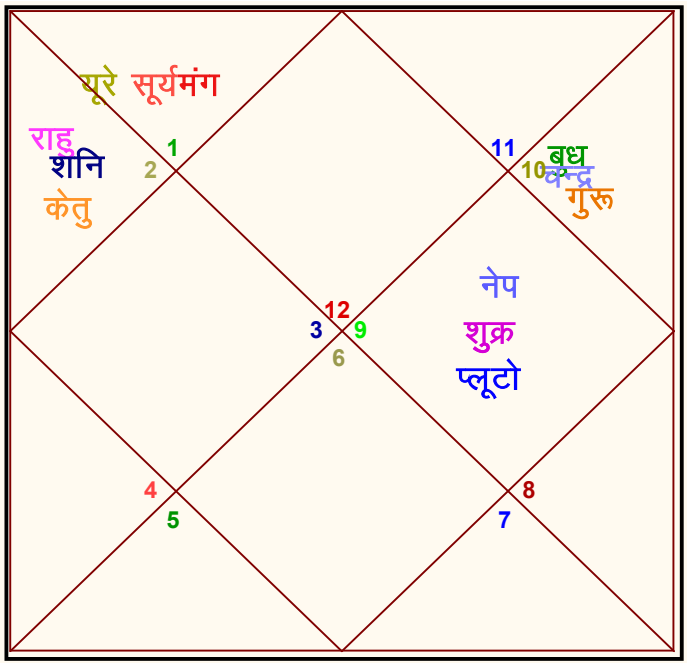

षष्टांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 6 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 5 डिग्री है। इस कुण्डली का पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। इसका प्राथमिक उद्देश्य किसी व्यक्ति की छिपी हुई शक्तियों और जीवन के कई हिस्सों में खामियों को प्रकट करना है। षष्ठांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनकी क्षमता की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने के साथ–साथ समस्याओं पर काबू पाने में मार्गदर्शन करने में सहायता कर सकता है।

अष्टमांश कुण्डली (डी 8)

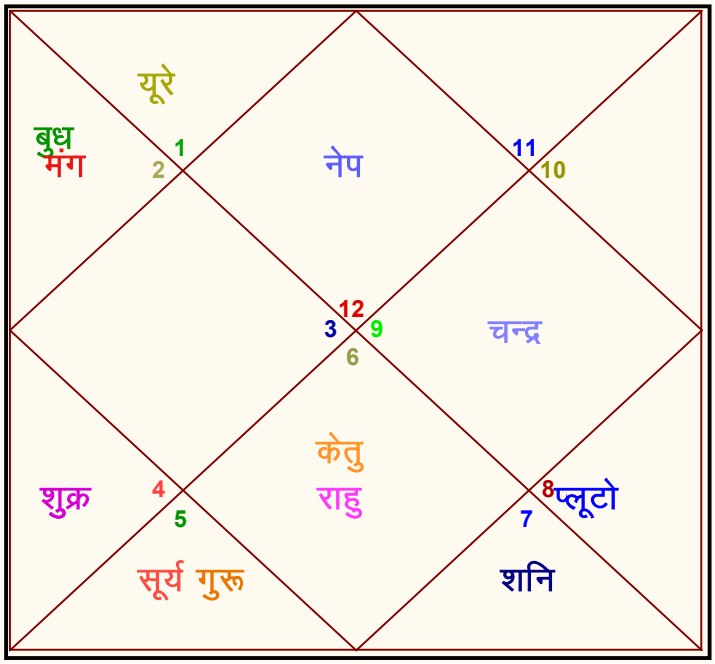

अष्टांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 8 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.75 डिग्री है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में शायद ही कभी उपयोग किया जाता है और वर्तमान अभ्यास में इसका बहुत कम उपयोग होता है। यह आमतौर पर किसी व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताओं और उनके जीवन पथ से जुड़ी विशेषताओं का पता लगाने के लिए उपयोग किया जाता है। अष्टांश कुण्डली ज्योतिषियों को लोगों को उनके जीवन के कई पहलुओं को समझने और सुधारने में मदद करने के लिए अधिक जानकारी दे सकता है।

एकादशांश कुण्डली (डी 11)

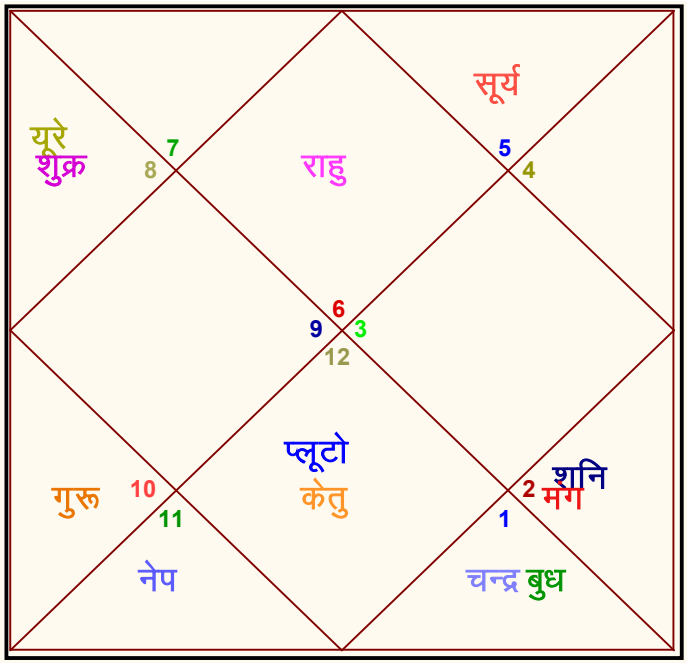

एकादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 11 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 2.73 डिग्री के आसपास फैला हुआ है। हांलाकि यह प्रायः पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में नियोजित नहीं होता है, यह वर्तमान अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। सामान्यतः इसका उपयोग किसी व्यक्ति की उपलब्धियों और जीवन के कई पहलुओं में सफलता, विशेष रूप से उनकी नौकरी और करियर में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। एकादशांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनके चुने हुए क्षेत्र में उनकी अधिकतम क्षमता तक पहुंचने में सहायता करने के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकता है।

षडबल और भावबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	17.42	15.66	37.77	38.38	04.31	35.33	16.07
सप्त वर्ग बल	135.00	93.75	157.50	131.25	110.63	110.63	65.63
युग्म अयुग्म बल	30.00	30.00	15.00	15.00	15.00	15.00	30.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	15.00	30.00	30.00	60.00
द्रेक्कन बल	15.00	00.00	15.00	15.00	00.00	00.00	00.00
स्थान बल	**257.42**	**199.41**	**255.27**	**214.63**	**159.94**	**190.96**	**171.69**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	156.01	149.93	265.90	130.08	96.93	143.58	178.85
दिग बल	**08.89**	**25.69**	**31.92**	**42.80**	**23.44**	**55.31**	**36.68**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	25.41	51.38	106.40	122.29	66.97	110.62	122.28
नतोन्नत बल	09.58	50.42	50.42	09.58	00.00	09.58	50.42
पक्ष बल	34.58	25.42	34.58	25.42	25.42	25.42	34.58
त्रिभाग बल	00.00	00.00	00.00	00.00	60.00	60.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00
मास बल	00.00	00.00	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	45.00	00.00	00.00	00.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	00.30	34.23	43.09	57.64	07.83	06.24	00.12
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**104.47**	**110.06**	**173.09**	**122.64**	**93.25**	**101.24**	**100.12**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	93.28	110.06	258.35	109.50	83.26	101.24	149.44
चेष्टा बल	**00.30**	**25.42**	**07.50**	**30.00**	**45.00**	**45.00**	**60.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	00.60	84.72	18.75	60.00	90.00	150.00	150.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-31.39**	**-02.62**	**-10.34**	**-23.64**	**-17.60**	**-19.69**	**00.23**
कुल षड्बल	**399.69**	**409.39**	**474.58**	**412.14**	**338.31**	**415.68**	**377.30**
षड्बल (रूप में)	**6.66**	**6.82**	**7.91**	**6.87**	**5.64**	**6.93**	**6.29**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	102.48	113.72	158.19	98.13	86.75	125.96	125.77
तुलनात्मक स्थिति	**5**	**4**	**1**	**3**	**7**	**2**	**6**
इष्ट फल	**04.96**	**19.95**	**16.83**	**33.93**	**13.93**	**39.88**	**31.05**
कष्ट फल	**55.04**	**40.05**	**43.17**	**26.07**	**46.07**	**20.12**	**28.95**
दिप्ति बल	**100.00**	**25.42**	**40.81**	**26.59**	**15.23**	**52.01**	**58.02**

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं
भावाधिपति बल	412.14	415.68	474.58	338.31	377.30	377.30	338.31	474.58	415.68	412.14	409.39	399.69
भाव दिग्बल	60.00	50.00	20.00	00.00	50.00	10.00	30.00	40.00	50.00	30.00	10.00	40.00
भाव दृष्टिबल	-09.32	26.29	-27.68	-21.62	-14.73	-13.15	-22.75	24.81	-23.33	-07.66	-09.70	-01.82
भावबल योग	**462.82**	**491.97**	**466.91**	**316.69**	**412.57**	**374.15**	**345.57**	**539.39**	**442.35**	**434.49**	**409.69**	**437.87**
भावबल (रूप में)	**7.71**	**8.20**	**7.78**	**5.28**	**6.88**	**6.24**	**5.76**	**8.99**	**7.37**	**7.24**	**6.83**	**7.30**
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**2**	**3**	**12**	**8**	**10**	**11**	**1**	**5**	**7**	**9**	**6**

विंशोत्तरी दशा (1)

Moon (5 y.5 m.26 d.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (023:29:36)

अयनांश

चन्द्रमा (10 वर्ष)

18/12/1973 To 14/06/1979

1st भाव स्वनक्षत्र विशेष	कन्या राशि हस्ता (2) नक्षत्र	सम संबंध 11 भावपति
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	-------	-------
राहु	-------	-------
गुरू	-------	-------
शनि	14-04-1975	00.00
बुध	13-09-1976	01.32
केतु	14-04-1977	02.74
शुक्र	13-12-1978	03.32
सूर्य	14-06-1979	04.99

मंगल (7 वर्ष)

14/06/1979 To 14/06/1986

8th भाव स्वराशि विशेष	मेष राशि अश्वि. (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 8 , 3 भावपति
मंगल	10-11-1979	05.49
राहु	28-11-1980	05.90
गुरू	04-11-1981	06.95
शनि	13-12-1982	07.88
बुध	10-12-1983	08.99
केतु	08-05-1984	09.98
शुक्र	08-07-1985	10.39
सूर्य	13-11-1985	11.55
चन्द्रमा	14-06-1986	11.90

राहु (18 वर्ष)

14/06/1986 To 13/06/2004

4th भाव वक्री विशेष	धनु राशि मूला (2) नक्षत्र	सम संबंध भावपति
राहु	24-02-1989	12.49
गुरू	20-07-1991	15.19
शनि	26-05-1994	17.59
बुध	13-12-1996	20.44
केतु	31-12-1997	22.99
शुक्र	31-12-2000	24.04
सूर्य	25-11-2001	27.04
चन्द्रमा	26-05-2003	27.94
मंगल	13-06-2004	29.44

गुरू (16 वर्ष)

13/06/2004 To 13/06/2020

5th भाव नीच विशेष	मकर राशि श्रव. (3) नक्षत्र	सम संबंध 4 , 7 भावपति
गुरू	01-08-2006	30.49
शनि	12-02-2009	32.62
बुध	20-05-2011	35.15
केतु	25-04-2012	37.42
शुक्र	25-12-2014	38.35
सूर्य	13-10-2015	41.02
चन्द्रमा	12-02-2017	41.82
मंगल	19-01-2018	43.15
राहु	13-06-2020	44.09

शनि (19 वर्ष)

13/06/2020 To 14/06/2039

10th भाव वक्री विशेष	मिथुन राशि अरि. (1) नक्षत्र	मित्र संबंध 5 , 6 भावपति
शनि	17-06-2023	46.49
बुध	24-02-2026	49.50
केतु	05-04-2027	52.19
शुक्र	05-06-2030	53.30
सूर्य	17-05-2031	56.46
चन्द्रमा	16-12-2032	57.41
मंगल	25-01-2034	59.00
राहु	01-12-2036	60.10
गुरू	14-06-2039	62.95

बुध (17 वर्ष)

14/06/2039 To 13/06/2056

3rd भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबंध 10 , 1 भावपति
बुध	10-11-2041	65.49
केतु	07-11-2042	67.90
शुक्र	07-09-2045	68.89
सूर्य	14-07-2046	71.72
चन्द्रमा	13-12-2047	72.57
मंगल	10-12-2048	73.99
राहु	29-06-2051	74.98
गुरू	04-10-2053	77.53
शनि	13-06-2056	79.80

विंशोत्तरी दशा (2)

केतु (7 वर्ष)

13/06/2056 To 14/06/2063

10th भाव वक्री विशेष	मिथुन राशि मृग. (4) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध भावपति
केतु	10-11-2056	82.49
शुक्र	10-01-2058	82.90
सूर्य	17-05-2058	84.06
चन्द्रमा	16-12-2058	84.41
मंगल	14-05-2059	85.00
राहु	01-06-2060	85.40
गुरू	08-05-2061	86.45
शनि	17-06-2062	87.39
बुध	14-06-2063	88.50

शुक्र (20 वर्ष)

14/06/2063 To 14/06/2083

5th भाव विशेष	मकर राशि श्रव. (1) नक्षत्र	सम संबंन्ध 9 , 2 भावपति
शुक्र	13-10-2066	89.49
सूर्य	13-10-2067	92.82
चन्द्रमा	14-06-2069	93.82
मंगल	14-08-2070	95.49
राहु	14-08-2073	96.65
गुरू	13-04-2076	99.65
शनि	14-06-2079	102.32
बुध	14-04-2082	105.49
केतु	14-06-2083	108.32

सूर्य (6 वर्ष)

14/06/2083 To 14/06/2089

4th भाव विशेष	धनु राशि मूला (1) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध 12 भावपति
सूर्य	01-10-2083	109.49
चन्द्रमा	01-04-2084	109.79
मंगल	07-08-2084	110.29
राहु	02-07-2085	110.64
गुरू	20-04-2086	111.54
शनि	02-04-2087	112.34
बुध	06-02-2088	113.29
केतु	13-06-2088	114.14
शुक्र	14-06-2089	114.49

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	शनि	13:06:2020 (16:22:55)	14:06:2039 (05:31:03)
अन्तर्रदशा	बुध	17:06:2023 (06:31:03)	24:02:2026 (17:31:03)
प्रत्यन्तर्रदशा	बुध	17:06:2023 (06:31:03)	03:11:2023 (10:52:33)
सूक्ष्मदशा	गुरू	23:09:2023 (20:36:17)	12:10:2023 (09:59:09)
प्राणदशा	राहु	09:10:2023 (15:10:43)	12:10:2023 (09:59:09)

नोट : – सभी दिए गये समय दशा के समाप्ति काल के हैं।

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन र दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भ करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वार करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

चन्द्रमा दशा

(18:12:1973 To 14:06:1979)

चन्द्रमा अन्तर

चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर

मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--

राहु अन्तर

राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--

गुरू अन्तर

गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--

शनि अन्तर

(18:12:1973 To 14:04:1975)

शनि	-------	--
बुध	05-03-1974	00.00
केतु	08-04-1974	00.21
शुक्र	13-07-1974	00.31
सूर्य	11-08-1974	00.57
चन्द्रमा	28-09-1974	00.65
मंगल	01-11-1974	00.78
राहु	27-01-1975	00.87
गुरू	14-04-1975	01.11

बुध अन्तर

(14:04:1975 To 13:09:1976)

बुध	26-06-1975	01.32
केतु	26-07-1975	01.52
शुक्र	20-10-1975	01.60
सूर्य	15-11-1975	01.84
चन्द्रमा	28-12-1975	01.91
मंगल	28-01-1976	02.03
राहु	14-04-1976	02.11
गुरू	23-06-1976	02.32
शनि	13-09-1976	02.51

केतु अन्तर

(13:09:1976 To 14:04:1977)

केतु	25-09-1976	02.74
शुक्र	31-10-1976	02.77
सूर्य	10-11-1976	02.87
चन्द्रमा	28-11-1976	02.90
मंगल	11-12-1976	02.95
राहु	12-01-1977	02.98
गुरू	09-02-1977	03.07
शनि	15-03-1977	03.15
बुध	14-04-1977	03.24

शुक्र अन्तर

(14:04:1977 To 13:12:1978)

शुक्र	24-07-1977	03.32
सूर्य	24-08-1977	03.60
चन्द्रमा	13-10-1977	03.68
मंगल	18-11-1977	03.82
राहु	17-02-1978	03.92
गुरू	09-05-1978	04.17
शनि	14-08-1978	04.39
बुध	08-11-1978	04.65
केतु	13-12-1978	04.89

सूर्य अन्तर

(13:12:1978 To 14:06:1979)

सूर्य	22-12-1978	04.99
चन्द्रमा	07-01-1979	05.01
मंगल	17-01-1979	05.05
राहु	14-02-1979	05.08
गुरू	10-03-1979	05.16
शनि	08-04-1979	05.23
बुध	04-05-1979	05.30
केतु	14-05-1979	05.38
शुक्र	14-06-1979	05.40

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(14:06:1979 To 14:06:1986)

मंगल अन्तर

(14:06:1979 To 10:11:1979)		
मंगल	22-06-1979	05.49
राहु	15-07-1979	05.51
गुरू	04-08-1979	05.57
शनि	27-08-1979	05.63
बुध	17-09-1979	05.69
केतु	26-09-1979	05.75
शुक्र	21-10-1979	05.77
सूर्य	28-10-1979	05.84
चन्द्रमा	10-11-1979	05.86

राहु अन्तर

(10:11:1979 To 28:11:1980)		
राहु	06-01-1980	05.90
गुरू	27-02-1980	06.05
शनि	27-04-1980	06.19
बुध	21-06-1980	06.36
केतु	13-07-1980	06.51
शुक्र	15-09-1980	06.57
सूर्य	04-10-1980	06.75
चन्द्रमा	06-11-1980	06.80
मंगल	28-11-1980	06.89

गुरू अन्तर

(28:11:1980 To 04:11:1981)		
गुरू	12-01-1981	06.95
शनि	07-03-1981	07.07
बुध	25-04-1981	07.22
केतु	15-05-1981	07.35
शुक्र	10-07-1981	07.41
सूर्य	27-07-1981	07.56
चन्द्रमा	25-08-1981	07.61
मंगल	14-09-1981	07.69
राहु	04-11-1981	07.74

शनि अन्तर

(04:11:1981 To 13:12:1982)		
शनि	07-01-1982	07.88
बुध	05-03-1982	08.06
केतु	29-03-1982	08.21
शुक्र	04-06-1982	08.28
सूर्य	24-06-1982	08.46
चन्द्रमा	28-07-1982	08.52
मंगल	21-08-1982	08.61
राहु	20-10-1982	08.67
गुरू	13-12-1982	08.84

बुध अन्तर

(13:12:1982 To 10:12:1983)		
बुध	03-02-1983	08.99
केतु	24-02-1983	09.13
शुक्र	25-04-1983	09.19
सूर्य	13-05-1983	09.35
चन्द्रमा	12-06-1983	09.40
मंगल	03-07-1983	09.48
राहु	27-08-1983	09.54
गुरू	14-10-1983	09.69
शनि	10-12-1983	09.82

केतु अन्तर

(10:12:1983 To 08:05:1984)		
केतु	19-12-1983	09.98
शुक्र	13-01-1984	10.00
सूर्य	20-01-1984	10.07
चन्द्रमा	02-02-1984	10.09
मंगल	10-02-1984	10.13
राहु	04-03-1984	10.15
गुरू	24-03-1984	10.21
शनि	16-04-1984	10.27
बुध	08-05-1984	10.33

शुक्र अन्तर

(08:05:1984 To 08:07:1985)		
शुक्र	18-07-1984	10.39
सूर्य	08-08-1984	10.58
चन्द्रमा	13-09-1984	10.64
मंगल	08-10-1984	10.74
राहु	11-12-1984	10.81
गुरू	05-02-1985	10.98
शनि	14-04-1985	11.14
बुध	13-06-1985	11.32
केतु	08-07-1985	11.49

सूर्य अन्तर

(08:07:1985 To 13:11:1985)		
सूर्य	14-07-1985	11.55
चन्द्रमा	25-07-1985	11.57
मंगल	02-08-1985	11.60
राहु	21-08-1985	11.62
गुरू	07-09-1985	11.67
शनि	27-09-1985	11.72
बुध	15-10-1985	11.78
केतु	23-10-1985	11.83
शुक्र	13-11-1985	11.85

चन्द्रमा अन्तर

(13:11:1985 To 14:06:1986)		
चन्द्रमा	01-12-1985	11.90
मंगल	13-12-1985	11.95
राहु	14-01-1986	11.99
गुरू	11-02-1986	12.07
शनि	17-03-1986	12.15
बुध	16-04-1986	12.25
केतु	29-04-1986	12.33
शुक्र	03-06-1986	12.36
सूर्य	14-06-1986	12.46

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(14:06:1986 To 13:06:2004)

राहु अन्तर

(14:06:1986 To 24:02:1989)

राहु	09-11-1986	12.49
गुरू	20-03-1987	12.89
शनि	23-08-1987	13.25
बुध	10-01-1988	13.68
केतु	07-03-1988	14.06
शुक्र	19-08-1988	14.22
सूर्य	07-10-1988	14.67
चन्द्रमा	29-12-1988	14.81
मंगल	24-02-1989	15.03

गुरू अन्तर

(24:02:1989 To 20:07:1991)

गुरू	21-06-1989	15.19
शनि	07-11-1989	15.51
बुध	11-03-1990	15.89
केतु	01-05-1990	16.23
शुक्र	24-09-1990	16.37
सूर्य	07-11-1990	16.77
चन्द्रमा	19-01-1991	16.89
मंगल	11-03-1991	17.09
राहु	20-07-1991	17.23

शनि अन्तर

(20:07:1991 To 26:05:1994)

शनि	01-01-1992	17.59
बुध	28-05-1992	18.04
केतु	28-07-1992	18.44
शुक्र	17-01-1993	18.61
सूर्य	10-03-1993	19.08
चन्द्रमा	05-06-1993	19.23
मंगल	05-08-1993	19.46
राहु	08-01-1994	19.63
गुरू	26-05-1994	20.06

बुध अन्तर

(26:05:1994 To 13:12:1996)

बुध	05-10-1994	20.44
केतु	29-11-1994	20.80
शुक्र	03-05-1995	20.95
सूर्य	18-06-1995	21.37
चन्द्रमा	04-09-1995	21.50
मंगल	28-10-1995	21.71
राहु	16-03-1996	21.86
गुरू	18-07-1996	22.24
शनि	13-12-1996	22.58

केतु अन्तर

(13:12:1996 To 31:12:1997)

केतु	05-01-1997	22.99
शुक्र	09-03-1997	23.05
सूर्य	29-03-1997	23.22
चन्द्रमा	30-04-1997	23.28
मंगल	22-05-1997	23.36
राहु	18-07-1997	23.43
गुरू	08-09-1997	23.58
शनि	07-11-1997	23.72
बुध	31-12-1997	23.89

शुक्र अन्तर

(31:12:1997 To 31:12:2000)

शुक्र	02-07-1998	24.04
सूर्य	26-08-1998	24.54
चन्द्रमा	25-11-1998	24.69
मंगल	28-01-1999	24.94
राहु	11-07-1999	25.11
गुरू	04-12-1999	25.56
शनि	26-05-2000	25.96
बुध	28-10-2000	26.44
केतु	31-12-2000	26.86

सूर्य अन्तर

(31:12:2000 To 25:11:2001)

सूर्य	17-01-2001	27.04
चन्द्रमा	13-02-2001	27.08
मंगल	04-03-2001	27.16
राहु	23-04-2001	27.21
गुरू	06-06-2001	27.35
शनि	28-07-2001	27.47
बुध	12-09-2001	27.61
केतु	01-10-2001	27.74
शुक्र	25-11-2001	27.79

चन्द्रमा अन्तर

(25:11:2001 To 26:05:2003)

चन्द्रमा	10-01-2002	27.94
मंगल	11-02-2002	28.06
राहु	04-05-2002	28.15
गुरू	16-07-2002	28.38
शनि	10-10-2002	28.58
बुध	27-12-2002	28.81
केतु	28-01-2003	29.03
शुक्र	29-04-2003	29.11
सूर्य	26-05-2003	29.36

मंगल अन्तर

(26:05:2003 To 13:06:2004)

मंगल	18-06-2003	29.44
राहु	14-08-2003	29.50
गुरू	04-10-2003	29.66
शनि	04-12-2003	29.80
बुध	27-01-2004	29.96
केतु	19-02-2004	30.11
शुक्र	23-04-2004	30.17
सूर्य	12-05-2004	30.35
चन्द्रमा	13-06-2004	30.40

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(13:06:2004 To 13:06:2020)

गुरू अन्तर

(13:06:2004 To 01:08:2006)

गुरू	25-09-2004	30.49
शनि	27-01-2005	30.77
बुध	17-05-2005	31.11
केतु	02-07-2005	31.41
शुक्र	08-11-2005	31.54
सूर्य	17-12-2005	31.89
चन्द्रमा	20-02-2006	32.00
मंगल	07-04-2006	32.18
राहु	01-08-2006	32.30

शनि अन्तर

(01:08:2006 To 12:02:2009)

शनि	26-12-2006	32.62
बुध	06-05-2007	33.02
केतु	29-06-2007	33.38
शुक्र	30-11-2007	33.53
सूर्य	15-01-2008	33.95
चन्द्रमा	01-04-2008	34.08
मंगल	25-05-2008	34.29
राहु	12-10-2008	34.44
गुरू	12-02-2009	34.82

बुध अन्तर

(12:02:2009 To 20:05:2011)

बुध	09-06-2009	35.15
केतु	28-07-2009	35.48
शुक्र	12-12-2009	35.61
सूर्य	23-01-2010	35.99
चन्द्रमा	02-04-2010	36.10
मंगल	20-05-2010	36.29
राहु	21-09-2010	36.42
गुरू	09-01-2011	36.76
शनि	20-05-2011	37.06

केतु अन्तर

(20:05:2011 To 25:04:2012)

केतु	09-06-2011	37.42
शुक्र	05-08-2011	37.48
सूर्य	22-08-2011	37.63
चन्द्रमा	19-09-2011	37.68
मंगल	09-10-2011	37.76
राहु	29-11-2011	37.81
गुरू	14-01-2012	37.95
शनि	08-03-2012	38.07
बुध	25-04-2012	38.22

शुक्र अन्तर

(25:04:2012 To 25:12:2014)

शुक्र	05-10-2012	38.35
सूर्य	23-11-2012	38.80
चन्द्रमा	12-02-2013	38.93
मंगल	10-04-2013	39.15
राहु	03-09-2013	39.31
गुरू	11-01-2014	39.71
शनि	14-06-2014	40.07
बुध	30-10-2014	40.49
केतु	25-12-2014	40.87

सूर्य अन्तर

(25:12:2014 To 13:10:2015)

सूर्य	09-01-2015	41.02
चन्द्रमा	02-02-2015	41.06
मंगल	19-02-2015	41.13
राहु	04-04-2015	41.17
गुरू	13-05-2015	41.29
शनि	28-06-2015	41.40
बुध	09-08-2015	41.53
केतु	26-08-2015	41.64
शुक्र	13-10-2015	41.69

चन्द्रमा अन्तर

(13:10:2015 To 12:02:2017)

चन्द्रमा	23-11-2015	41.82
मंगल	21-12-2015	41.93
राहु	04-03-2016	42.01
गुरू	08-05-2016	42.21
शनि	24-07-2016	42.39
बुध	01-10-2016	42.60
केतु	29-10-2016	42.79
शुक्र	19-01-2017	42.87
सूर्य	12-02-2017	43.09

मंगल अन्तर

(12:02:2017 To 19:01:2018)

मंगल	04-03-2017	43.15
राहु	24-04-2017	43.21
गुरू	08-06-2017	43.35
शनि	01-08-2017	43.47
बुध	19-09-2017	43.62
केतु	09-10-2017	43.75
शुक्र	04-12-2017	43.81
सूर्य	21-12-2017	43.96
चन्द्रमा	19-01-2018	44.01

राहु अन्तर

(19:01:2018 To 13:06:2020)

राहु	30-05-2018	44.09
गुरू	24-09-2018	44.45
शनि	10-02-2019	44.77
बुध	14-06-2019	45.15
केतु	04-08-2019	45.49
शुक्र	28-12-2019	45.63
सूर्य	10-02-2020	46.03
चन्द्रमा	23-04-2020	46.15
मंगल	13-06-2020	46.35

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(13:06:2020 To 14:06:2039)

शनि अन्तर

(13:06:2020 To 17:06:2023)

शनि	05-12-2020	46.49
बुध	09-05-2021	46.96
केतु	12-07-2021	47.39
शुक्र	11-01-2022	47.57
सूर्य	07-03-2022	48.07
चन्द्रमा	07-06-2022	48.22
मंगल	10-08-2022	48.47
राहु	21-01-2023	48.64
गुरू	17-06-2023	49.10

बुध अन्तर

(17:06:2023 To 24:02:2026)

बुध	03-11-2023	49.50
केतु	30-12-2023	49.88
शुक्र	11-06-2024	50.03
सूर्य	31-07-2024	50.48
चन्द्रमा	21-10-2024	50.62
मंगल	17-12-2024	50.84
राहु	14-05-2025	51.00
गुरू	22-09-2025	51.40
शनि	24-02-2026	51.76

केतु अन्तर

(24:02:2026 To 05:04:2027)

केतु	20-03-2026	52.19
शुक्र	26-05-2026	52.25
सूर्य	15-06-2026	52.44
चन्द्रमा	19-07-2026	52.49
मंगल	12-08-2026	52.59
राहु	11-10-2026	52.65
गुरू	04-12-2026	52.82
शनि	06-02-2027	52.96
बुध	05-04-2027	53.14

शुक्र अन्तर

(05:04:2027 To 05:06:2030)

शुक्र	14-10-2027	53.30
सूर्य	11-12-2027	53.82
चन्द्रमा	17-03-2028	53.98
मंगल	23-05-2028	54.25
राहु	13-11-2028	54.43
गुरू	16-04-2029	54.91
शनि	16-10-2029	55.33
बुध	29-03-2030	55.83
केतु	05-06-2030	56.28

सूर्य अन्तर

(05:06:2030 To 17:05:2031)

सूर्य	22-06-2030	56.46
चन्द्रमा	21-07-2030	56.51
मंगल	10-08-2030	56.59
राहु	01-10-2030	56.65
गुरू	16-11-2030	56.79
शनि	10-01-2031	56.91
बुध	28-02-2031	57.06
केतु	21-03-2031	57.20
शुक्र	17-05-2031	57.25

चन्द्रमा अन्तर

(17:05:2031 To 16:12:2032)

चन्द्रमा	05-07-2031	57.41
मंगल	07-08-2031	57.55
राहु	02-11-2031	57.64
गुरू	18-01-2032	57.87
शनि	19-04-2032	58.09
बुध	10-07-2032	58.34
केतु	13-08-2032	58.56
शुक्र	17-11-2032	58.65
सूर्य	16-12-2032	58.92

मंगल अन्तर

(16:12:2032 To 25:01:2034)

मंगल	09-01-2033	59.00
राहु	11-03-2033	59.06
गुरू	03-05-2033	59.23
शनि	07-07-2033	59.38
बुध	02-09-2033	59.55
केतु	25-09-2033	59.71
शुक्र	02-12-2033	59.77
सूर्य	22-12-2033	59.96
चन्द्रमा	25-01-2034	60.01

राहु अन्तर

(25:01:2034 To 01:12:2036)

राहु	30-06-2034	60.10
गुरू	16-11-2034	60.53
शनि	29-04-2035	60.91
बुध	24-09-2035	61.36
केतु	23-11-2035	61.77
शुक्र	15-05-2036	61.93
सूर्य	06-07-2036	62.41
चन्द्रमा	01-10-2036	62.55
मंगल	01-12-2036	62.79

गुरू अन्तर

(01:12:2036 To 14:06:2039)

गुरू	03-04-2037	62.95
शनि	28-08-2037	63.29
बुध	06-01-2038	63.69
केतु	01-03-2038	64.05
शुक्र	02-08-2038	64.20
सूर्य	17-09-2038	64.62
चन्द्रमा	03-12-2038	64.75
मंगल	26-01-2039	64.96
राहु	14-06-2039	65.11

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(14:06:2039 To 13:06:2056)

बुध अन्तर

(14:06:2039 To 10:11:2041)

बुध	16-10-2039	65.49
केतु	07-12-2039	65.83
शुक्र	01-05-2040	65.97
सूर्य	14-06-2040	66.37
चन्द्रमा	27-08-2040	66.49
मंगल	17-10-2040	66.69
राहु	26-02-2041	66.83
गुरू	24-06-2041	67.19
शनि	10-11-2041	67.52

केतु अन्तर

(10:11:2041 To 07:11:2042)

केतु	01-12-2041	67.90
शुक्र	30-01-2042	67.95
सूर्य	17-02-2042	68.12
चन्द्रमा	19-03-2042	68.17
मंगल	10-04-2042	68.25
राहु	03-06-2042	68.31
गुरू	21-07-2042	68.46
शनि	16-09-2042	68.59
बुध	07-11-2042	68.75

शुक्र अन्तर

(07:11:2042 To 07:09:2045)

शुक्र	28-04-2043	68.89
सूर्य	19-06-2043	69.36
चन्द्रमा	13-09-2043	69.50
मंगल	12-11-2043	69.74
राहु	16-04-2044	69.90
गुरू	01-09-2044	70.33
शनि	12-02-2045	70.71
बुध	09-07-2045	71.15
केतु	07-09-2045	71.56

सूर्य अन्तर

(07:09:2045 To 14:07:2046)

सूर्य	22-09-2045	71.72
चन्द्रमा	18-10-2045	71.76
मंगल	05-11-2045	71.83
राहु	22-12-2045	71.88
गुरू	01-02-2046	72.01
शनि	22-03-2046	72.13
बुध	05-05-2046	72.26
केतु	23-05-2046	72.38
शुक्र	14-07-2046	72.43

चन्द्रमा अन्तर

(14:07:2046 To 13:12:2047)

चन्द्रमा	26-08-2046	72.57
मंगल	25-09-2046	72.69
राहु	12-12-2046	72.77
गुरू	19-02-2047	72.98
शनि	12-05-2047	73.17
बुध	24-07-2047	73.40
केतु	23-08-2047	73.60
शुक्र	17-11-2047	73.68
सूर्य	13-12-2047	73.92

मंगल अन्तर

(13:12:2047 To 10:12:2048)

मंगल	03-01-2048	73.99
राहु	27-02-2048	74.05
गुरू	15-04-2048	74.19
शनि	12-06-2048	74.33
बुध	02-08-2048	74.48
केतु	23-08-2048	74.62
शुक्र	23-10-2048	74.68
सूर्य	10-11-2048	74.85
चन्द्रमा	10-12-2048	74.90

राहु अन्तर

(10:12:2048 To 29:06:2051)

राहु	29-04-2049	74.98
गुरू	31-08-2049	75.36
शनि	25-01-2050	75.70
बुध	06-06-2050	76.11
केतु	30-07-2050	76.47
शुक्र	02-01-2051	76.62
सूर्य	17-02-2051	77.04
चन्द्रमा	06-05-2051	77.17
मंगल	29-06-2051	77.38

गुरू अन्तर

(29:06:2051 To 04:10:2053)

गुरू	17-10-2051	77.53
शनि	25-02-2052	77.83
बुध	22-06-2052	78.19
केतु	09-08-2052	78.51
शुक्र	26-12-2052	78.64
सूर्य	05-02-2053	79.02
चन्द्रमा	15-04-2053	79.14
मंगल	02-06-2053	79.32
राहु	04-10-2053	79.46

शनि अन्तर

(04:10:2053 To 13:06:2056)

शनि	09-03-2054	79.80
बुध	26-07-2054	80.22
केतु	21-09-2054	80.60
शुक्र	04-03-2055	80.76
सूर्य	22-04-2055	81.21
चन्द्रमा	13-07-2055	81.34
मंगल	08-09-2055	81.57
राहु	03-02-2056	81.73
गुरू	13-06-2056	82.13

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(13:06:2056 To 14:06:2063)

केतु अन्तर

(13:06:2056 To 10:11:2056)		
केतु	22-06-2056	82.49
शुक्र	17-07-2056	82.51
सूर्य	24-07-2056	82.58
चन्द्रमा	06-08-2056	82.60
मंगल	14-08-2056	82.63
राहु	06-09-2056	82.66
गुरू	26-09-2056	82.72
शनि	19-10-2056	82.77
बुध	10-11-2056	82.84

शुक्र अन्तर

(10:11:2056 To 10:01:2058)		
शुक्र	20-01-2057	82.90
सूर्य	10-02-2057	83.09
चन्द्रमा	18-03-2057	83.15
मंगल	11-04-2057	83.25
राहु	14-06-2057	83.31
गुरू	10-08-2057	83.49
शनि	16-10-2057	83.65
बुध	16-12-2057	83.83
केतु	10-01-2058	84.00

सूर्य अन्तर

(10:01:2058 To 17:05:2058)		
सूर्य	16-01-2058	84.06
चन्द्रमा	27-01-2058	84.08
मंगल	03-02-2058	84.11
राहु	22-02-2058	84.13
गुरू	11-03-2058	84.18
शनि	01-04-2058	84.23
बुध	19-04-2058	84.28
केतु	26-04-2058	84.33
शुक्र	17-05-2058	84.35

चन्द्रमा अन्तर

(17:05:2058 To 16:12:2058)		
चन्द्रमा	04-06-2058	84.41
मंगल	17-06-2058	84.46
राहु	18-07-2058	84.50
गुरू	16-08-2058	84.58
शनि	19-09-2058	84.66
बुध	19-10-2058	84.75
केतु	31-10-2058	84.84
शुक्र	06-12-2058	84.87
सूर्य	16-12-2058	84.97

मंगल अन्तर

(16:12:2058 To 14:05:2059)		
मंगल	25-12-2058	85.00
राहु	16-01-2059	85.02
गुरू	05-02-2059	85.08
शनि	01-03-2059	85.14
बुध	22-03-2059	85.20
केतु	31-03-2059	85.26
शुक्र	24-04-2059	85.28
सूर्य	02-05-2059	85.35
चन्द्रमा	14-05-2059	85.37

राहु अन्तर

(14:05:2059 To 01:06:2060)		
राहु	11-07-2059	85.40
गुरू	31-08-2059	85.56
शनि	31-10-2059	85.70
बुध	24-12-2059	85.87
केतु	15-01-2060	86.02
शुक्र	19-03-2060	86.08
सूर्य	08-04-2060	86.25
चन्द्रमा	10-05-2060	86.31
मंगल	01-06-2060	86.39

गुरू अन्तर

(01:06:2060 To 08:05:2061)		
गुरू	17-07-2060	86.45
शनि	09-09-2060	86.58
बुध	27-10-2060	86.73
केतु	16-11-2060	86.86
शुक्र	12-01-2061	86.91
सूर्य	29-01-2061	87.07
चन्द्रमा	26-02-2061	87.12
मंगल	18-03-2061	87.19
राहु	08-05-2061	87.25

शनि अन्तर

(08:05:2061 To 17:06:2062)		
शनि	11-07-2061	87.39
बुध	07-09-2061	87.56
केतु	30-09-2061	87.72
शुक्र	07-12-2061	87.79
सूर्य	27-12-2061	87.97
चन्द्रमा	30-01-2062	88.03
मंगल	22-02-2062	88.12
राहु	24-04-2062	88.18
गुरू	17-06-2062	88.35

बुध अन्तर

(17:06:2062 To 14:06:2063)		
बुध	07-08-2062	88.50
केतु	28-08-2062	88.64
शुक्र	27-10-2062	88.69
सूर्य	15-11-2062	88.86
चन्द्रमा	15-12-2062	88.91
मंगल	05-01-2063	88.99
राहु	28-02-2063	89.05
गुरू	17-04-2063	89.20
शनि	14-06-2063	89.33

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(14:06:2063 To 14:06:2083)

शुक्र अन्तर

(14:06:2063 To 13:10:2066)

शुक्र	03-01-2064	89.49
सूर्य	04-03-2064	90.04
चन्द्रमा	13-06-2064	90.21
मंगल	23-08-2064	90.49
राहु	22-02-2065	90.68
गुरू	03-08-2065	91.18
शनि	12-02-2066	91.63
बुध	03-08-2066	92.15
केतु	13-10-2066	92.63

सूर्य अन्तर

(13:10:2066 To 13:10:2067)

सूर्य	01-11-2066	92.82
चन्द्रमा	01-12-2066	92.87
मंगल	22-12-2066	92.95
राहु	15-02-2067	93.01
गुरू	05-04-2067	93.16
शनि	02-06-2067	93.30
बुध	23-07-2067	93.45
केतु	14-08-2067	93.60
शुक्र	13-10-2067	93.65

चन्द्रमा अन्तर

(13:10:2067 To 14:06:2069)

चन्द्रमा	03-12-2067	93.82
मंगल	08-01-2068	93.96
राहु	08-04-2068	94.06
गुरू	28-06-2068	94.31
शनि	03-10-2068	94.53
बुध	28-12-2068	94.79
केतु	02-02-2069	95.03
शुक्र	14-05-2069	95.13
सूर्य	14-06-2069	95.40

मंगल अन्तर

(14:06:2069 To 14:08:2070)

मंगल	09-07-2069	95.49
राहु	10-09-2069	95.56
गुरू	06-11-2069	95.73
शनि	13-01-2070	95.89
बुध	14-03-2070	96.07
केतु	08-04-2070	96.24
शुक्र	18-06-2070	96.30
सूर्य	09-07-2070	96.50
चन्द्रमा	14-08-2070	96.56

राहु अन्तर

(14:08:2070 To 14:08:2073)

राहु	25-01-2071	96.65
गुरू	20-06-2071	97.10
शनि	10-12-2071	97.50
बुध	14-05-2072	97.98
केतु	17-07-2072	98.40
शुक्र	16-01-2073	98.58
सूर्य	11-03-2073	99.08
चन्द्रमा	11-06-2073	99.23
मंगल	14-08-2073	99.48

गुरू अन्तर

(14:08:2073 To 13:04:2076)

गुरू	21-12-2073	99.65
शनि	24-05-2074	100.01
बुध	09-10-2074	100.43
केतु	05-12-2074	100.81
शुक्र	16-05-2075	100.97
सूर्य	04-07-2075	101.41
चन्द्रमा	23-09-2075	101.54
मंगल	19-11-2075	101.77
राहु	13-04-2076	101.92

शनि अन्तर

(13:04:2076 To 14:06:2079)

शनि	14-10-2076	102.32
बुध	27-03-2077	102.82
केतु	02-06-2077	103.27
शुक्र	12-12-2077	103.46
सूर्य	08-02-2078	103.98
चन्द्रमा	15-05-2078	104.14
मंगल	21-07-2078	104.41
राहु	11-01-2079	104.59
गुरू	14-06-2079	105.07

बुध अन्तर

(14:06:2079 To 14:04:2082)

बुध	07-11-2079	105.49
केतु	07-01-2080	105.89
शुक्र	27-06-2080	106.05
सूर्य	18-08-2080	106.53
चन्द्रमा	13-11-2080	106.67
मंगल	12-01-2081	106.90
राहु	16-06-2081	107.07
गुरू	01-11-2081	107.50
शनि	14-04-2082	107.87

केतु अन्तर

(14:04:2082 To 14:06:2083)

केतु	09-05-2082	108.32
शुक्र	19-07-2082	108.39
सूर्य	09-08-2082	108.58
चन्द्रमा	13-09-2082	108.64
मंगल	08-10-2082	108.74
राहु	11-12-2082	108.81
गुरू	06-02-2083	108.98
शनि	14-04-2083	109.14
बुध	14-06-2083	109.32

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(14:06:2083 To 14:06:2089)

सूर्य अन्तर

(14:06:2083 To 01:10:2083)

सूर्य	19-06-2083	109.49
चन्द्रमा	28-06-2083	109.50
मंगल	05-07-2083	109.53
राहु	21-07-2083	109.55
गुरू	05-08-2083	109.59
शनि	22-08-2083	109.63
बुध	07-09-2083	109.68
केतु	13-09-2083	109.72
शुक्र	01-10-2083	109.74

चन्द्रमा अन्तर

(01:10:2083 To 01:04:2084)

चन्द्रमा	16-10-2083	109.79
मंगल	27-10-2083	109.83
राहु	23-11-2083	109.86
गुरू	18-12-2083	109.93
शनि	16-01-2084	110.00
बुध	11-02-2084	110.08
केतु	21-02-2084	110.15
शुक्र	23-03-2084	110.18
सूर्य	01-04-2084	110.26

मंगल अन्तर

(01:04:2084 To 07:08:2084)

मंगल	08-04-2084	110.29
राहु	28-04-2084	110.31
गुरू	15-05-2084	110.36
शनि	04-06-2084	110.41
बुध	22-06-2084	110.46
केतु	30-06-2084	110.51
शुक्र	21-07-2084	110.53
सूर्य	27-07-2084	110.59
चन्द्रमा	07-08-2084	110.61

राहु अन्तर

(07:08:2084 To 02:07:2085)

राहु	25-09-2084	110.64
गुरू	08-11-2084	110.77
शनि	31-12-2084	110.89
बुध	15-02-2085	111.04
केतु	06-03-2085	111.16
शुक्र	30-04-2085	111.22
सूर्य	16-05-2085	111.37
चन्द्रमा	13-06-2085	111.41
मंगल	02-07-2085	111.49

गुरू अन्तर

(02:07:2085 To 20:04:2086)

गुरू	10-08-2085	111.54
शनि	25-09-2085	111.64
बुध	06-11-2085	111.77
केतु	23-11-2085	111.88
शुक्र	10-01-2086	111.93
सूर्य	25-01-2086	112.06
चन्द्रमा	18-02-2086	112.10
मंगल	07-03-2086	112.17
राहु	20-04-2086	112.22

शनि अन्तर

(20:04:2086 To 02:04:2087)

शनि	14-06-2086	112.34
बुध	02-08-2086	112.49
केतु	22-08-2086	112.62
शुक्र	19-10-2086	112.68
सूर्य	05-11-2086	112.84
चन्द्रमा	04-12-2086	112.88
मंगल	24-12-2086	112.96
राहु	14-02-2087	113.02
गुरू	02-04-2087	113.16

बुध अन्तर

(02:04:2087 To 06:02:2088)

बुध	16-05-2087	113.29
केतु	03-06-2087	113.41
शुक्र	24-07-2087	113.46
सूर्य	09-08-2087	113.60
चन्द्रमा	04-09-2087	113.64
मंगल	22-09-2087	113.71
राहु	07-11-2087	113.76
गुरू	19-12-2087	113.89
शनि	06-02-2088	114.00

केतु अन्तर

(06:02:2088 To 13:06:2088)

केतु	14-02-2088	114.14
शुक्र	06-03-2088	114.16
सूर्य	12-03-2088	114.22
चन्द्रमा	23-03-2088	114.23
मंगल	30-03-2088	114.26
राहु	19-04-2088	114.28
गुरू	06-05-2088	114.34
शनि	26-05-2088	114.38
बुध	13-06-2088	114.44

शुक्र अन्तर

(13:06:2088 To 14:06:2089)

शुक्र	13-08-2088	114.49
सूर्य	31-08-2088	114.65
चन्द्रमा	01-10-2088	114.70
मंगल	22-10-2088	114.79
राहु	16-12-2088	114.85
गुरू	03-02-2089	115.00
शनि	02-04-2089	115.13
बुध	23-05-2089	115.29
केतु	14-06-2089	115.43

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

अष्टोत्तरी दशा

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : मंगल : 7 व0 1 मा0 5 दि0

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का अरिद्रादी सिद्धान्त प्र ावी हो रहा है।

राहु लग्न में स्थित नहीं है, और लग्नाधिपति से केन्द्र या त्रिकोन में स्थित है। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।

कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।

मंगल (8 वर्ष)

18/12/1973 To 22/01/1981

8th भाव स्वराशि विशेष	मेष राशि अश्वि. (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 8 , 3 भावपति
मंगल	-------	-------
बुध	29-11-1974	00.00
शनि	27-08-1975	00.95
गुरू	22-01-1977	01.69
राहु	13-12-1977	03.10
शुक्र	03-07-1979	03.99
सूर्य	13-12-1979	05.54
चन्द्रमा	22-01-1981	05.99

बुध (17 वर्ष)

22/01/1981 To 22/01/1998

3rd भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबंध 10 , 1 भावपति
बुध	26-09-1983	07.10
शनि	23-04-1985	09.77
गुरू	19-04-1988	11.35
राहु	11-03-1990	14.34
शुक्र	30-06-1993	16.23
सूर्य	10-06-1994	19.53
चन्द्रमा	19-10-1996	20.48
मंगल	22-01-1998	22.84

शनि (10 वर्ष)

22/01/1998 To 22/01/2008

10th भाव वक्री विशेष	मिथुन राशि अरि. (1) नक्षत्र	सम संबंध 5 , 6 भावपति
शनि	26-12-1998	24.10
गुरू	29-09-2000	25.02
राहु	09-11-2001	26.78
शुक्र	20-10-2003	27.89
सूर्य	10-05-2004	29.84
चन्द्रमा	29-09-2005	30.39
मंगल	27-06-2006	31.78
बुध	22-01-2008	32.52

गुरू (19 वर्ष)

22/01/2008 To 22/01/2027

5th भाव नीच विशेष	मकर राशि श्रव. (3) नक्षत्र	सम संबंध 4 , 7 भावपति
गुरू	27-05-2011	34.10
राहु	07-07-2013	37.44
शुक्र	17-03-2017	39.55
सूर्य	07-04-2018	43.25
चन्द्रमा	26-11-2020	44.30
मंगल	23-04-2022	46.94
बुध	20-04-2025	48.35
शनि	22-01-2027	51.34

राहु (12 वर्ष)

22/01/2027 To 22/01/2039

4th भाव वक्री विशेष	धनु राशि मूला (2) नक्षत्र	सम संबंध भावपति
राहु	23-05-2028	53.10
शुक्र	23-09-2030	54.43
सूर्य	24-05-2031	56.76
चन्द्रमा	22-01-2033	57.43
मंगल	13-12-2033	59.10
बुध	02-11-2035	59.99
शनि	13-12-2036	61.88
गुरू	22-01-2039	62.99

शुक्र (21 वर्ष)

22/01/2039 To 22/01/2060

5th भाव विशेष	मकर राशि श्रव. (1) नक्षत्र	मित्र संबंध 9 , 2 भावपति
शुक्र	22-02-2043	65.10
सूर्य	23-04-2044	69.18
चन्द्रमा	24-03-2047	70.35
मंगल	13-10-2048	73.26
बुध	01-02-2052	74.82
शनि	12-01-2054	78.13
गुरू	23-09-2057	80.07
राहु	22-01-2060	83.76

सूर्य (6 वर्ष)

22/01/2060 To 22/01/2066

4th भाव विशेष	धनु राशि मूला (1) नक्षत्र	मित्र संबंध 12 भावपति
सूर्य	23-05-2060	86.10
चन्द्रमा	24-03-2061	86.43
मंगल	02-09-2061	87.26
बुध	13-08-2062	87.71
शनि	04-03-2063	88.65
गुरू	23-03-2064	89.21
राहु	22-11-2064	90.26
शुक्र	22-01-2066	90.93

चन्द्रमा (15 वर्ष)

22/01/2066 To 22/01/2081

1st भाव स्वनक्षत्र विशेष	कन्या राशि हस्ता (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 11 भावपति
चन्द्रमा	22-02-2068	92.10
मंगल	03-04-2069	94.18
बुध	13-08-2071	95.29
शनि	02-01-2073	97.65
गुरू	23-08-2075	99.04
राहु	23-04-2077	101.68
शुक्र	23-03-2080	103.35
सूर्य	22-01-2081	106.26

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(18:12:1973 To 22:01:1981)

मंगल अन्तर

मंगल	-------	--
बुध	-------	--
शनि	-------	--
गुरू	-------	--
राहु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--

बुध अन्तर

(18:12:1973 To 29:11:1974)

बुध	-------	--
शनि	19-12-1973	00.00
गुरू	10-03-1974	00.01
राहु	30-04-1974	00.23
शुक्र	29-07-1974	00.37
सूर्य	23-08-1974	00.61
चन्द्रमा	26-10-1974	00.68
मंगल	29-11-1974	00.86

शनि अन्तर

(29:11:1974 To 27:08:1975)

शनि	24-12-1974	00.95
गुरू	10-02-1975	01.02
राहु	12-03-1975	01.15
शुक्र	03-05-1975	01.23
सूर्य	18-05-1975	01.37
चन्द्रमा	25-06-1975	01.42
मंगल	15-07-1975	01.52
बुध	27-08-1975	01.57

गुरू अन्तर

(27:08:1975 To 22:01:1977)

गुरू	25-11-1975	01.69
राहु	21-01-1976	01.94
शुक्र	30-04-1976	02.09
सूर्य	29-05-1976	02.37
चन्द्रमा	08-08-1976	02.45
मंगल	15-09-1976	02.64
बुध	06-12-1976	02.75
शनि	22-01-1977	02.97

राहु अन्तर

(22:01:1977 To 13:12:1977)

राहु	27-02-1977	03.10
शुक्र	01-05-1977	03.20
सूर्य	19-05-1977	03.37
चन्द्रमा	03-07-1977	03.42
मंगल	27-07-1977	03.54
बुध	17-09-1977	03.61
शनि	17-10-1977	03.75
गुरू	13-12-1977	03.83

शुक्र अन्तर

(13:12:1977 To 03:07:1979)

शुक्र	02-04-1978	03.99
सूर्य	04-05-1978	04.29
चन्द्रमा	21-07-1978	04.38
मंगल	02-09-1978	04.59
बुध	30-11-1978	04.71
शनि	21-01-1979	04.95
गुरू	01-05-1979	05.10
राहु	03-07-1979	05.37

सूर्य अन्तर

(03:07:1979 To 13:12:1979)

सूर्य	12-07-1979	05.54
चन्द्रमा	04-08-1979	05.57
मंगल	16-08-1979	05.63
बुध	11-09-1979	05.66
शनि	26-09-1979	05.73
गुरू	24-10-1979	05.77
राहु	11-11-1979	05.85
शुक्र	13-12-1979	05.90

चन्द्रमा अन्तर

(13:12:1979 To 22:01:1981)

चन्द्रमा	07-02-1980	05.99
मंगल	08-03-1980	06.14
बुध	11-05-1980	06.22
शनि	18-06-1980	06.40
गुरू	28-08-1980	06.50
राहु	13-10-1980	06.70
शुक्र	31-12-1980	06.82
सूर्य	22-01-1981	07.04

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(22:01:1981 To 22:01:1998)

बुध अन्तर

(22:01:1981 To 26:09:1983)

बुध	25-06-1981	07.10
शनि	23-09-1981	07.52
गुरू	14-03-1982	07.77
राहु	01-07-1982	08.24
शुक्र	07-01-1983	08.53
सूर्य	02-03-1983	09.06
चन्द्रमा	16-07-1983	09.20
मंगल	26-09-1983	09.58

शनि अन्तर

(26:09:1983 To 23:04:1985)

शनि	18-11-1983	09.77
गुरू	27-02-1984	09.92
राहु	01-05-1984	10.20
शुक्र	21-08-1984	10.37
सूर्य	22-09-1984	10.68
चन्द्रमा	11-12-1984	10.76
मंगल	23-01-1985	10.98
बुध	23-04-1985	11.10

गुरू अन्तर

(23:04:1985 To 19:04:1988)

गुरू	01-11-1985	11.35
राहु	03-03-1986	11.87
शुक्र	01-10-1986	12.21
सूर्य	01-12-1986	12.79
चन्द्रमा	01-05-1987	12.95
मंगल	21-07-1987	13.37
बुध	09-01-1988	13.59
शनि	19-04-1988	14.06

राहु अन्तर

(19:04:1988 To 11:03:1990)

राहु	05-07-1988	14.34
शुक्र	17-11-1988	14.55
सूर्य	25-12-1988	14.92
चन्द्रमा	31-03-1989	15.02
मंगल	21-05-1989	15.28
बुध	06-09-1989	15.42
शनि	09-11-1989	15.72
गुरू	11-03-1990	15.89

शुक्र अन्तर

(11:03:1990 To 30:06:1993)

शुक्र	31-10-1990	16.23
सूर्य	06-01-1991	16.87
चन्द्रमा	23-06-1991	17.05
मंगल	20-09-1991	17.51
बुध	28-03-1992	17.76
शनि	18-07-1992	18.28
गुरू	16-02-1993	18.58
राहु	30-06-1993	19.17

सूर्य अन्तर

(30:06:1993 To 10:06:1994)

सूर्य	19-07-1993	19.53
चन्द्रमा	05-09-1993	19.59
मंगल	01-10-1993	19.72
बुध	24-11-1993	19.79
शनि	26-12-1993	19.94
गुरू	24-02-1994	20.02
राहु	04-04-1994	20.19
शुक्र	10-06-1994	20.29

चन्द्रमा अन्तर

(10:06:1994 To 19:10:1996)

चन्द्रमा	07-10-1994	20.48
मंगल	10-12-1994	20.81
बुध	25-04-1995	20.98
शनि	14-07-1995	21.35
गुरू	12-12-1995	21.57
राहु	17-03-1996	21.99
शुक्र	01-09-1996	22.25
सूर्य	19-10-1996	22.71

मंगल अन्तर

(19:10:1996 To 22:01:1998)

मंगल	23-11-1996	22.84
बुध	03-02-1997	22.93
शनि	18-03-1997	23.13
गुरू	06-06-1997	23.25
राहु	27-07-1997	23.47
शुक्र	25-10-1997	23.61
सूर्य	19-11-1997	23.85
चन्द्रमा	22-01-1998	23.92

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(22:01:1998 To 22:01:2008)

शनि अन्तर

(22:01:1998 To 26:12:1998)

शनि	22-02-1998	24.10
गुरू	23-04-1998	24.18
राहु	31-05-1998	24.35
शुक्र	04-08-1998	24.45
सूर्य	23-08-1998	24.63
चन्द्रमा	09-10-1998	24.68
मंगल	03-11-1998	24.81
बुध	26-12-1998	24.88

गुरू अन्तर

(26:12:1998 To 29:09:2000)

गुरू	18-04-1999	25.02
राहु	28-06-1999	25.33
शुक्र	31-10-1999	25.53
सूर्य	06-12-1999	25.87
चन्द्रमा	04-03-2000	25.97
मंगल	21-04-2000	26.21
बुध	31-07-2000	26.34
शनि	29-09-2000	26.62

राहु अन्तर

(29:09:2000 To 09:11:2001)

राहु	13-11-2000	26.78
शुक्र	31-01-2001	26.91
सूर्य	23-02-2001	27.12
चन्द्रमा	20-04-2001	27.18
मंगल	20-05-2001	27.34
बुध	23-07-2001	27.42
शनि	30-08-2001	27.60
गुरू	09-11-2001	27.70

शुक्र अन्तर

(09:11:2001 To 20:10:2003)

शुक्र	27-03-2002	27.89
सूर्य	05-05-2002	28.27
चन्द्रमा	12-08-2002	28.38
मंगल	03-10-2002	28.65
बुध	23-01-2003	28.79
शनि	30-03-2003	29.10
गुरू	02-08-2003	29.28
राहु	20-10-2003	29.62

सूर्य अन्तर

(20:10:2003 To 10:05:2004)

सूर्य	31-10-2003	29.84
चन्द्रमा	28-11-2003	29.87
मंगल	13-12-2003	29.95
बुध	14-01-2004	29.99
शनि	02-02-2004	30.07
गुरू	09-03-2004	30.13
राहु	31-03-2004	30.22
शुक्र	10-05-2004	30.29

चन्द्रमा अन्तर

(10:05:2004 To 29:09:2005)

चन्द्रमा	19-07-2004	30.39
मंगल	26-08-2004	30.59
बुध	14-11-2004	30.69
शनि	31-12-2004	30.91
गुरू	30-03-2005	31.04
राहु	26-05-2005	31.28
शुक्र	01-09-2005	31.44
सूर्य	29-09-2005	31.71

मंगल अन्तर

(29:09:2005 To 27:06:2006)

मंगल	19-10-2005	31.78
बुध	01-12-2005	31.84
शनि	26-12-2005	31.95
गुरू	11-02-2006	32.02
राहु	14-03-2006	32.15
शुक्र	05-05-2006	32.24
सूर्य	20-05-2006	32.38
चन्द्रमा	27-06-2006	32.42

बुध अन्तर

(27:06:2006 To 22:01:2008)

बुध	25-09-2006	32.52
शनि	17-11-2006	32.77
गुरू	26-02-2007	32.92
राहु	01-05-2007	33.19
शुक्र	21-08-2007	33.37
सूर्य	22-09-2007	33.67
चन्द्रमा	11-12-2007	33.76
मंगल	22-01-2008	33.98

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(22:01:2008 To 22:01:2027)

गुरू अन्तर

(22:01:2008 To 27:05:2011)

गुरू	24-08-2008	34.10
राहु	07-01-2009	34.69
शुक्र	02-09-2009	35.06
सूर्य	08-11-2009	35.71
चन्द्रमा	27-04-2010	35.89
मंगल	26-07-2010	36.36
बुध	03-02-2011	36.60
शनि	27-05-2011	37.13

राहु अन्तर

(27:05:2011 To 07:07:2013)

राहु	21-08-2011	37.44
शुक्र	18-01-2012	37.67
सूर्य	01-03-2012	38.09
चन्द्रमा	16-06-2012	38.20
मंगल	12-08-2012	38.50
बुध	12-12-2012	38.65
शनि	21-02-2013	38.98
गुरू	07-07-2013	39.18

शुक्र अन्तर

(07:07:2013 To 17:03:2017)

शुक्र	26-03-2014	39.55
सूर्य	09-06-2014	40.27
चन्द्रमा	13-12-2014	40.47
मंगल	23-03-2015	40.99
बुध	21-10-2015	41.26
शनि	23-02-2016	41.84
गुरू	18-10-2016	42.19
राहु	17-03-2017	42.84

सूर्य अन्तर

(17:03:2017 To 07:04:2018)

सूर्य	08-04-2017	43.25
चन्द्रमा	31-05-2017	43.30
मंगल	29-06-2017	43.45
बुध	28-08-2017	43.53
शनि	03-10-2017	43.70
गुरू	10-12-2017	43.79
राहु	22-01-2018	43.98
शुक्र	07-04-2018	44.10

चन्द्रमा अन्तर

(07:04:2018 To 26:11:2020)

चन्द्रमा	18-08-2018	44.30
मंगल	29-10-2018	44.67
बुध	29-03-2019	44.86
शनि	26-06-2019	45.28
गुरू	13-12-2019	45.52
राहु	29-03-2020	45.99
शुक्र	03-10-2020	46.28
सूर्य	26-11-2020	46.79

मंगल अन्तर

(26:11:2020 To 23:04:2022)

मंगल	03-01-2021	46.94
बुध	25-03-2021	47.04
शनि	11-05-2021	47.27
गुरू	10-08-2021	47.40
राहु	06-10-2021	47.64
शुक्र	14-01-2022	47.80
सूर्य	11-02-2022	48.07
चन्द्रमा	23-04-2022	48.15

बुध अन्तर

(23:04:2022 To 20:04:2025)

बुध	12-10-2022	48.35
शनि	21-01-2023	48.82
गुरू	01-08-2023	49.10
राहु	01-12-2023	49.62
शुक्र	30-06-2024	49.95
सूर्य	30-08-2024	50.54
चन्द्रमा	29-01-2025	50.70
मंगल	20-04-2025	51.12

शनि अन्तर

(20:04:2025 To 22:01:2027)

शनि	19-06-2025	51.34
गुरू	09-10-2025	51.50
राहु	20-12-2025	51.81
शुक्र	24-04-2026	52.01
सूर्य	29-05-2026	52.35
चन्द्रमा	27-08-2026	52.45
मंगल	13-10-2026	52.69
बुध	22-01-2027	52.82

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(22:01:2027 To 22:01:2039)

राहु अन्तर

(22:01:2027 To 23:05:2028)

राहु	17-03-2027	53.10
शुक्र	20-06-2027	53.25
सूर्य	17-07-2027	53.51
चन्द्रमा	23-09-2027	53.58
मंगल	29-10-2027	53.76
बुध	13-01-2028	53.86
शनि	27-02-2028	54.07
गुरू	23-05-2028	54.20

शुक्र अन्तर

(23:05:2028 To 23:09:2030)

शुक्र	05-11-2028	54.43
सूर्य	23-12-2028	54.88
चन्द्रमा	20-04-2029	55.01
मंगल	22-06-2029	55.34
बुध	03-11-2029	55.51
शनि	21-01-2030	55.88
गुरू	20-06-2030	56.09
राहु	23-09-2030	56.51

सूर्य अन्तर

(23:09:2030 To 24:05:2031)

सूर्य	06-10-2030	56.76
चन्द्रमा	09-11-2030	56.80
मंगल	27-11-2030	56.89
बुध	04-01-2031	56.94
शनि	27-01-2031	57.05
गुरू	11-03-2031	57.11
राहु	07-04-2031	57.23
शुक्र	24-05-2031	57.30

चन्द्रमा अन्तर

(24:05:2031 To 22:01:2033)

चन्द्रमा	16-08-2031	57.43
मंगल	30-09-2031	57.66
बुध	04-01-2032	57.79
शनि	01-03-2032	58.05
गुरू	16-06-2032	58.20
राहु	23-08-2032	58.50
शुक्र	19-12-2032	58.68
सूर्य	22-01-2033	59.01

मंगल अन्तर

(22:01:2033 To 13:12:2033)

मंगल	15-02-2033	59.10
बुध	07-04-2033	59.16
शनि	07-05-2033	59.30
गुरू	03-07-2033	59.39
राहु	08-08-2033	59.54
शुक्र	11-10-2033	59.64
सूर्य	29-10-2033	59.81
चन्द्रमा	13-12-2033	59.86

बुध अन्तर

(13:12:2033 To 02:11:2035)

बुध	31-03-2034	59.99
शनि	03-06-2034	60.28
गुरू	02-10-2034	60.46
राहु	18-12-2034	60.79
शुक्र	01-05-2035	61.00
सूर्य	08-06-2035	61.37
चन्द्रमा	12-09-2035	61.47
मंगल	02-11-2035	61.74

शनि अन्तर

(02:11:2035 To 13:12:2036)

शनि	10-12-2035	61.88
गुरू	19-02-2036	61.98
राहु	04-04-2036	62.17
शुक्र	22-06-2036	62.30
सूर्य	15-07-2036	62.51
चन्द्रमा	09-09-2036	62.57
मंगल	10-10-2036	62.73
बुध	13-12-2036	62.81

गुरू अन्तर

(13:12:2036 To 22:01:2039)

गुरू	27-04-2037	62.99
राहु	22-07-2037	63.36
शुक्र	19-12-2037	63.59
सूर्य	30-01-2038	64.00
चन्द्रमा	17-05-2038	64.12
मंगल	14-07-2038	64.41
बुध	12-11-2038	64.57
शनि	22-01-2039	64.90

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(22:01:2039 To 22:01:2060)

शुक्र अन्तर

(22:01:2039 To 22:02:2043)

शुक्र	08-11-2039	65.10
सूर्य	30-01-2040	65.89
चन्द्रमा	24-08-2040	66.12
मंगल	13-12-2040	66.69
बुध	05-08-2041	66.99
शनि	21-12-2041	67.63
गुरू	09-09-2042	68.01
राहु	22-02-2043	68.73

सूर्य अन्तर

(22:02:2043 To 23:04:2044)

सूर्य	17-03-2043	69.18
चन्द्रमा	15-05-2043	69.25
मंगल	16-06-2043	69.41
बुध	22-08-2043	69.49
शनि	30-09-2043	69.68
गुरू	14-12-2043	69.79
राहु	31-01-2044	69.99
शुक्र	23-04-2044	70.12

चन्द्रमा अन्तर

(23:04:2044 To 24:03:2047)

चन्द्रमा	18-09-2044	70.35
मंगल	06-12-2044	70.75
बुध	23-05-2045	70.97
शनि	29-08-2045	71.43
गुरू	05-03-2046	71.70
राहु	01-07-2046	72.21
शुक्र	24-01-2047	72.54
सूर्य	24-03-2047	73.10

मंगल अन्तर

(24:03:2047 To 13:10:2048)

मंगल	05-05-2047	73.26
बुध	02-08-2047	73.38
शनि	24-09-2047	73.62
गुरू	02-01-2048	73.77
राहु	05-03-2048	74.04
शुक्र	24-06-2048	74.21
सूर्य	26-07-2048	74.52
चन्द्रमा	13-10-2048	74.60

बुध अन्तर

(13:10:2048 To 01:02:2052)

बुध	21-04-2049	74.82
शनि	10-08-2049	75.34
गुरू	11-03-2050	75.65
राहु	23-07-2050	76.23
शुक्र	14-03-2051	76.60
सूर्य	20-05-2051	77.24
चन्द्रमा	04-11-2051	77.42
मंगल	01-02-2052	77.88

शनि अन्तर

(01:02:2052 To 12:01:2054)

शनि	07-04-2052	78.13
गुरू	11-08-2052	78.31
राहु	29-10-2052	78.65
शुक्र	16-03-2053	78.86
सूर्य	24-04-2053	79.24
चन्द्रमा	01-08-2053	79.35
मंगल	22-09-2053	79.62
बुध	12-01-2054	79.76

गुरू अन्तर

(12:01:2054 To 23:09:2057)

गुरू	06-09-2054	80.07
राहु	03-02-2055	80.72
शुक्र	23-10-2055	81.13
सूर्य	06-01-2056	81.85
चन्द्रमा	12-07-2056	82.05
मंगल	20-10-2056	82.57
बुध	21-05-2057	82.84
शनि	23-09-2057	83.42

राहु अन्तर

(23:09:2057 To 22:01:2060)

राहु	26-12-2057	83.76
शुक्र	10-06-2058	84.02
सूर्य	27-07-2058	84.48
चन्द्रमा	22-11-2058	84.61
मंगल	24-01-2059	84.93
बुध	08-06-2059	85.10
शनि	25-08-2059	85.47
गुरू	22-01-2060	85.69

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(22:01:2060 To 22:01:2066)

सूर्य अन्तर

(22:01:2060 To 23:05:2060)

सूर्य	29-01-2060	86.10
चन्द्रमा	15-02-2060	86.12
मंगल	24-02-2060	86.16
बुध	14-03-2060	86.19
शनि	26-03-2060	86.24
गुरू	16-04-2060	86.27
राहु	30-04-2060	86.33
शुक्र	23-05-2060	86.37

चन्द्रमा अन्तर

(23:05:2060 To 24:03:2061)

चन्द्रमा	05-07-2060	86.43
मंगल	27-07-2060	86.55
बुध	13-09-2060	86.61
शनि	11-10-2060	86.74
गुरू	04-12-2060	86.82
राहु	07-01-2061	86.96
शुक्र	07-03-2061	87.06
सूर्य	24-03-2061	87.22

मंगल अन्तर

(24:03:2061 To 02:09:2061)

मंगल	05-04-2061	87.26
बुध	01-05-2061	87.30
शनि	16-05-2061	87.37
गुरू	13-06-2061	87.41
राहु	01-07-2061	87.49
शुक्र	02-08-2061	87.54
सूर्य	11-08-2061	87.62
चन्द्रमा	02-09-2061	87.65

बुध अन्तर

(02:09:2061 To 13:08:2062)

बुध	27-10-2061	87.71
शनि	27-11-2061	87.86
गुरू	27-01-2062	87.94
राहु	06-03-2062	88.11
शुक्र	12-05-2062	88.22
सूर्य	01-06-2062	88.40
चन्द्रमा	18-07-2062	88.45
मंगल	13-08-2062	88.58

शनि अन्तर

(13:08:2062 To 04:03:2063)

शनि	01-09-2062	88.65
गुरू	06-10-2062	88.70
राहु	29-10-2062	88.80
शुक्र	07-12-2062	88.86
सूर्य	19-12-2062	88.97
चन्द्रमा	16-01-2063	89.00
मंगल	31-01-2063	89.08
बुध	04-03-2063	89.12

गुरू अन्तर

(04:03:2063 To 23:03:2064)

गुरू	11-05-2063	89.21
राहु	22-06-2063	89.39
शुक्र	05-09-2063	89.51
सूर्य	27-09-2063	89.72
चन्द्रमा	19-11-2063	89.78
मंगल	18-12-2063	89.92
बुध	16-02-2064	90.00
शनि	23-03-2064	90.17

राहु अन्तर

(23:03:2064 To 22:11:2064)

राहु	19-04-2064	90.26
शुक्र	06-06-2064	90.34
सूर्य	19-06-2064	90.47
चन्द्रमा	23-07-2064	90.51
मंगल	10-08-2064	90.60
बुध	18-09-2064	90.65
शनि	10-10-2064	90.75
गुरू	22-11-2064	90.81

शुक्र अन्तर

(22:11:2064 To 22:01:2066)

शुक्र	13-02-2065	90.93
सूर्य	09-03-2065	91.16
चन्द्रमा	07-05-2065	91.22
मंगल	08-06-2065	91.38
बुध	14-08-2065	91.47
शनि	22-09-2065	91.65
गुरू	06-12-2065	91.76
राहु	22-01-2066	91.97

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(22:01:2066 To 22:01:2081)

चन्द्रमा अन्तर

(22:01:2066 To 22:02:2068)

चन्द्रमा	08-05-2066	92.10
मंगल	03-07-2066	92.39
बुध	31-10-2066	92.54
शनि	09-01-2067	92.87
गुरू	23-05-2067	93.06
राहु	16-08-2067	93.43
शुक्र	10-01-2068	93.66
सूर्य	22-02-2068	94.07

मंगल अन्तर

(22:02:2068 To 03:04:2069)

मंगल	23-03-2068	94.18
बुध	26-05-2068	94.26
शनि	03-07-2068	94.44
गुरू	12-09-2068	94.54
राहु	27-10-2068	94.74
शुक्र	14-01-2069	94.86
सूर्य	06-02-2069	95.08
चन्द्रमा	03-04-2069	95.14

बुध अन्तर

(03:04:2069 To 13:08:2071)

बुध	17-08-2069	95.29
शनि	05-11-2069	95.66
गुरू	05-04-2070	95.88
राहु	10-07-2070	96.30
शुक्र	25-12-2070	96.56
सूर्य	10-02-2071	97.02
चन्द्रमा	10-06-2071	97.15
मंगल	13-08-2071	97.48

शनि अन्तर

(13:08:2071 To 02:01:2073)

शनि	29-09-2071	97.65
गुरू	27-12-2071	97.78
राहु	22-02-2072	98.03
शुक्र	30-05-2072	98.18
सूर्य	28-06-2072	98.45
चन्द्रमा	06-09-2072	98.53
मंगल	14-10-2072	98.72
बुध	02-01-2073	98.82

गुरू अन्तर

(02:01:2073 To 23:08:2075)

गुरू	20-06-2073	99.04
राहु	05-10-2073	99.51
शुक्र	11-04-2074	99.80
सूर्य	03-06-2074	100.31
चन्द्रमा	15-10-2074	100.46
मंगल	25-12-2074	100.83
बुध	26-05-2075	101.02
शनि	23-08-2075	101.44

राहु अन्तर

(23:08:2075 To 23:04:2077)

राहु	30-10-2075	101.68
शुक्र	25-02-2076	101.87
सूर्य	30-03-2076	102.19
चन्द्रमा	23-06-2076	102.28
मंगल	07-08-2076	102.51
बुध	11-11-2076	102.64
शनि	06-01-2077	102.90
गुरू	23-04-2077	103.05

शुक्र अन्तर

(23:04:2077 To 23:03:2080)

शुक्र	16-11-2077	103.35
सूर्य	15-01-2078	103.91
चन्द्रमा	11-06-2078	104.08
मंगल	29-08-2078	104.48
बुध	13-02-2079	104.70
शनि	22-05-2079	105.16
गुरू	26-11-2079	105.43
राहु	23-03-2080	105.94

सूर्य अन्तर

(23:03:2080 To 22:01:2081)

सूर्य	09-04-2080	106.26
चन्द्रमा	22-05-2080	106.31
मंगल	13-06-2080	106.43
बुध	31-07-2080	106.49
शनि	28-08-2080	106.62
गुरू	21-10-2080	106.70
राहु	24-11-2080	106.84
शुक्र	22-01-2081	106.94

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 1

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : संकटा (राहु) : 4 व0 4 मा0 21 दि0

संकटा (राहु) (हस्ता) दशा

18:12:1973 To 09:05:1978

प्रोफेक्शन प्वाइंट	051:11:32
संकटा (राहु)	09:05:1970
मंगला (चन्द्र)	17:02:1972
पिंगला (सुर्य)	08:05:1972
धन्या (गुरू)	18:10:1972
भ्रमरी (मंगल)	19:06:1973
भद्रिका (बुध)	09:05:1974
उल्का (शनि)	19:06:1975
सिद्धा (शुक्र)	18:10:1976

मंगला (चन्द्र) (चित्रा) दशा

09:05:1978 To 09:05:1979

प्रोफेक्शन प्वाइंट	170:43:15
मंगला (चन्द्र)	09:05:1978
पिंगला (सुर्य)	19:05:1978
धन्या (गुरू)	09:06:1978
भ्रमरी (मंगल)	09:07:1978
भद्रिका (बुध)	19:08:1978
उल्का (शनि)	08:10:1978
सिद्धा (शुक्र)	08:12:1978
संकटा (राहु)	17:02:1979

पिंगला (सुर्य) (स्वाति) दशा

09:05:1979 To 09:05:1981

प्रोफेक्शन प्वाइंट	127:26:24
पिंगला (सुर्य)	09:05:1979
धन्या (गुरू)	19:06:1979
भ्रमरी (मंगल)	19:08:1979
भद्रिका (बुध)	08:11:1979
उल्का (शनि)	17:02:1980
सिद्धा (शुक्र)	18:06:1980
संकटा (राहु)	07:11:1980
मंगला (चन्द्र)	19:04:1981

धन्या (गुरू) (विशाखा) दशा

09:05:1981 To 08:05:1984

प्रोफेक्शन प्वाइंट	215:53:18
धन्या (गुरू)	09:05:1981
भ्रमरी (मंगल)	08:08:1981
भद्रिका (बुध)	08:12:1981
उल्का (शनि)	09:05:1982
सिद्धा (शुक्र)	08:11:1982
संकटा (राहु)	09:06:1983
मंगला (चन्द्र)	07:02:1984
पिंगला (सुर्य)	08:03:1984

भ्रमरी (मंगल) (अनुराधा) दशा

08:05:1984 To 08:05:1988

प्रोफेक्शन प्वाइंट	072:54:51
भ्रमरी (मंगल)	08:05:1984
भद्रिका (बुध)	18:10:1984
उल्का (शनि)	09:05:1985
सिद्धा (शुक्र)	07:01:1986
संकटा (राहु)	18:10:1986
मंगला (चन्द्र)	08:09:1987
पिंगला (सुर्य)	18:10:1987
धन्या (गुरू)	07:01:1988

भद्रिका (बुध) (ज्येष्ठा) दशा

08:05:1988 To 09:05:1993

प्रोफेक्शन प्वाइंट	099:42:48
भद्रिका (बुध)	08:05:1988
उल्का (शनि)	18:01:1989
सिद्धा (शुक्र)	18:11:1989
संकटा (राहु)	08:11:1990
मंगला (चन्द्र)	18:12:1991
पिंगला (सुर्य)	07:02:1992
धन्या (गुरू)	19:05:1992
भ्रमरी (मंगल)	18:10:1992

उल्का (शनि) (मूला) दशा

09:05:1993 To 09:05:1999

प्रोफेक्शन प्वाइंट	133:23:08
उल्का (शनि)	09:05:1993
सिद्धा (शुक्र)	09:05:1994
संकटा (राहु)	09:07:1995
मंगला (चन्द्र)	07:11:1996
पिंगला (सुर्य)	07:01:1997
धन्या (गुरू)	09:05:1997
भ्रमरी (मंगल)	08:11:1997
भद्रिका (बुध)	09:07:1998

सिद्धा (शुक्र) (पूर्वाषाढ़) दशा

09:05:1999 To 09:05:2006

प्रोफेक्शन प्वाइंट	206:00:33
सिद्धा (शुक्र)	09:05:1999
संकटा (राहु)	18:09:2000
मंगला (चन्द्र)	09:04:2002
पिंगला (सुर्य)	19:06:2002
धन्या (गुरू)	08:11:2002
भ्रमरी (मंगल)	09:06:2003
भद्रिका (बुध)	19:03:2004
उल्का (शनि)	09:03:2005

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

योगिनी दशा – 2

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : संकटा (राहु) : 4 व0 4 मा0 21 दि0

संकटा (राहु) (उत्तराषाढ़) दशा

09:05:2006 To 09:05:2014

प्रोफेक्शन प्वाइंट	127:26:24
संकटा (राहु)	09:05:2006
मंगला (चन्द्र)	17:02:2008
पिंगला (सुर्य)	08:05:2008
धन्या (गुरू)	18:10:2008
भ्रमरी (मंगल)	19:06:2009
भद्रिका (बुध)	09:05:2010
उल्का (शनि)	19:06:2011
सिद्धा (शुक्र)	18:10:2012

मंगला (चन्द्र) (श्रवण) दशा

09:05:2014 To 09:05:2015

प्रोफेक्शन प्वाइंट	332:01:54
मंगला (चन्द्र)	09:05:2014
पिंगला (सुर्य)	19:05:2014
धन्या (गुरू)	09:06:2014
भ्रमरी (मंगल)	09:07:2014
भद्रिका (बुध)	19:08:2014
उल्का (शनि)	08:10:2014
सिद्धा (शुक्र)	08:12:2014
संकटा (राहु)	17:02:2015

पिंगला (सुर्य) (धनिष्ठा) दशा

09:05:2015 To 09:05:2017

प्रोफेक्शन प्वाइंट	246:58:07
पिंगला (सुर्य)	09:05:2015
धन्या (गुरू)	19:06:2015
भ्रमरी (मंगल)	19:08:2015
भद्रिका (बुध)	08:11:2015
उल्का (शनि)	17:02:2016
सिद्धा (शुक्र)	18:06:2016
संकटा (राहु)	07:11:2016
मंगला (चन्द्र)	19:04:2017

धन्या (गुरू) (शतभिषा) दशा

09:05:2017 To 08:05:2020

प्रोफेक्शन प्वाइंट	173:07:14
धन्या (गुरू)	09:05:2017
भ्रमरी (मंगल)	08:08:2017
भद्रिका (बुध)	08:12:2017
उल्का (शनि)	09:05:2018
सिद्धा (शुक्र)	08:11:2018
संकटा (राहु)	09:06:2019
मंगला (चन्द्र)	07:02:2020
पिंगला (सुर्य)	08:03:2020

भ्रमरी (मंगल) (पूर्वाभाद्र) दशा

08:05:2020 To 08:05:2024

प्रोफेक्शन प्वाइंट	292:38:57
भ्रमरी (मंगल)	08:05:2020
भद्रिका (बुध)	18:10:2020
उल्का (शनि)	09:05:2021
सिद्धा (शुक्र)	07:01:2022
संकटा (राहु)	18:10:2022
मंगला (चन्द्र)	08:09:2023
पिंगला (सुर्य)	18:10:2023
धन्या (गुरू)	07:01:2024

भद्रिका (बुध) (उत्तरभाद्र) दशा

08:05:2024 To 09:05:2029

प्रोफेक्शन प्वाइंट	298:03:58
भद्रिका (बुध)	08:05:2024
उल्का (शनि)	18:01:2025
सिद्धा (शुक्र)	18:11:2025
संकटा (राहु)	08:11:2026
मंगला (चन्द्र)	18:12:2027
पिंगला (सुर्य)	07:02:2028
धन्या (गुरू)	19:05:2028
भ्रमरी (मंगल)	18:10:2028

उल्का (शनि) (रेवती) दशा

09:05:2029 To 09:05:2035

प्रोफेक्शन प्वाइंट	298:03:58
उल्का (शनि)	09:05:2029
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2030
संकटा (राहु)	09:07:2031
मंगला (चन्द्र)	07:11:2032
पिंगला (सुर्य)	07:01:2033
धन्या (गुरू)	09:05:2033
भ्रमरी (मंगल)	08:11:2033
भद्रिका (बुध)	09:07:2034

सिद्धा (शुक्र) (अश्विनी) दशा

09:05:2035 To 09:05:2042

प्रोफेक्शन प्वाइंट	348:10:51
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2035
संकटा (राहु)	18:09:2036
मंगला (चन्द्र)	09:04:2038
पिंगला (सुर्य)	19:06:2038
धन्या (गुरू)	08:11:2038
भ्रमरी (मंगल)	09:06:2039
भद्रिका (बुध)	19:03:2040
उल्का (शनि)	09:03:2041

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

योगिनी दशा – 3

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:29:36) : संकटा (राहु) : 4 व0 4 मा0 21 दि0

संकटा (राहु) (भरणी) दशा

09:05:2042 To 09:05:2050

प्रोफेक्शन प्वाइंट	168:10:51
संकटा (राहु)	09:05:2042
मंगला (चन्द्र)	17:02:2044
पिंगला (सुर्य)	08:05:2044
धन्या (गुरू)	18:10:2044
भ्रमरी (मंगल)	19:06:2045
भद्रिका (बुध)	09:05:2046
उल्का (शनि)	19:06:2047
सिद्धा (शुक्र)	18:10:2048

मंगला (चन्द्र) (कृतिका) दशा

09:05:2050 To 09:05:2051

प्रोफेक्शन प्वाइंट	048:16:46
मंगला (चन्द्र)	09:05:2050
पिंगला (सुर्य)	19:05:2050
धन्या (गुरू)	09:06:2050
भ्रमरी (मंगल)	09:07:2050
भद्रिका (बुध)	19:08:2050
उल्का (शनि)	08:10:2050
सिद्धा (शुक्र)	08:12:2050
संकटा (राहु)	17:02:2051

पिंगला (सुर्य) (रोहिणी) दशा

09:05:2051 To 09:05:2053

प्रोफेक्शन प्वाइंट	048:16:46
पिंगला (सुर्य)	09:05:2051
धन्या (गुरू)	19:06:2051
भ्रमरी (मंगल)	19:08:2051
भद्रिका (बुध)	08:11:2051
उल्का (शनि)	17:02:2052
सिद्धा (शुक्र)	18:06:2052
संकटा (राहु)	07:11:2052
मंगला (चन्द्र)	19:04:2053

धन्या (गुरू) (मृगशिर) दशा

09:05:2053 To 08:05:2056

प्रोफेक्शन प्वाइंट	292:38:57
धन्या (गुरू)	09:05:2053
भ्रमरी (मंगल)	08:08:2053
भद्रिका (बुध)	08:12:2053
उल्का (शनि)	09:05:2054
सिद्धा (शुक्र)	08:11:2054
संकटा (राहु)	09:06:2055
मंगला (चन्द्र)	07:02:2056
पिंगला (सुर्य)	08:03:2056

भ्रमरी (मंगल) (अरिद्रा) दशा

08:05:2056 To 08:05:2060

प्रोफेक्शन प्वाइंट	249:52:53
भ्रमरी (मंगल)	08:05:2056
भद्रिका (बुध)	18:10:2056
उल्का (शनि)	09:05:2057
सिद्धा (शुक्र)	07:01:2058
संकटा (राहु)	18:10:2058
मंगला (चन्द्र)	08:09:2059
पिंगला (सुर्य)	18:10:2059
धन्या (गुरू)	07:01:2060

भद्रिका (बुध) (पुनर्वसु) दशा

08:05:2060 To 09:05:2065

प्रोफेक्शन प्वाइंट	157:48:03
भद्रिका (बुध)	08:05:2060
उल्का (शनि)	18:01:2061
सिद्धा (शुक्र)	18:11:2061
संकटा (राहु)	08:11:2062
मंगला (चन्द्र)	18:12:2063
पिंगला (सुर्य)	07:02:2064
धन्या (गुरू)	19:05:2064
भ्रमरी (मंगल)	18:10:2064

उल्का (शनि) (पुष्य) दशा

09:05:2065 To 09:05:2071

प्रोफेक्शन प्वाइंट	136:25:07
उल्का (शनि)	09:05:2065
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2066
संकटा (राहु)	09:07:2067
मंगला (चन्द्र)	07:11:2068
पिंगला (सुर्य)	07:01:2069
धन्या (गुरू)	09:05:2069
भ्रमरी (मंगल)	08:11:2069
भद्रिका (बुध)	09:07:2070

सिद्धा (शुक्र) (अश्लेषा) दशा

09:05:2071 To 09:05:2078

प्रोफेक्शन प्वाइंट	152:51:40
सिद्धा (शुक्र)	09:05:2071
संकटा (राहु)	18:09:2072
मंगला (चन्द्र)	09:04:2074
पिंगला (सुर्य)	19:06:2074
धन्या (गुरू)	08:11:2074
भ्रमरी (मंगल)	09:06:2075
भद्रिका (बुध)	19:03:2076
उल्का (शनि)	09:03:2077

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

जैमिनी चर दशा

जैमिनी चर दशा, जैसा कि ईरानगति रंगाचार्य द्वारा समझाया गया है, वैदिक ज्योतिष में एक सम्मानित प्रगति प्रणाली है जो महत्वपूर्ण जीवन की घटनाओं की भविष्यवाणी के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। यह गतिशील कारकों पर जोर देता है और ग्रहों की स्थिति के बजाय संकेतों के स्थान पर निर्भर करता है, जो इसे अद्वितीय बनाता है। रंगाचार्य की व्याख्या सूक्ष्म बारीकियों को सामने लाती है, जिससे सटीक और प्रासंगिक रूप से सुसंगत भविष्यवाणियां प्रदान करने में प्रणाली की प्रभावशीलता बढ़ जाती है।

कन्या दशा

(18:12:1973 - 18:12:1976)

वृश्चिक	18-12-1974	00.00
तुला	18-12-1975	01.00
कन्या	18-12-1976	02.00

वृष दशा

(18:12:1976 - 18:12:1985)

मकर	18-12-1977	03.00
धनु	18-12-1978	04.00
वृश्चिक	18-12-1979	05.00
तुला	18-12-1980	06.00
कन्या	18-12-1981	07.00
सिहं	18-12-1982	08.00
कर्क	18-12-1983	09.00
मिथुन	18-12-1984	10.00
वृष	18-12-1985	11.00

मकर दशा

(18:12:1985 - 18:12:1993)

मिथुन	18-12-1986	12.00
कर्क	18-12-1987	13.00
सिहं	18-12-1988	14.00
कन्या	18-12-1989	15.00
तुला	18-12-1990	16.00
वृश्चिक	18-12-1991	17.00
धनु	18-12-1992	18.00
मकर	18-12-1993	19.00

सिहं दशा

(18:12:1993 - 18:12:2002)

धनु	18-12-1994	20.00
मकर	18-12-1995	21.00
कुम्भ	18-12-1996	22.00
मीन	18-12-1997	23.00
मेष	18-12-1998	24.00
वृष	18-12-1999	25.00
मिथुन	18-12-2000	26.00
कर्क	18-12-2001	27.00
सिहं	18-12-2002	28.00

मेष दशा

(18:12:2002 - 18:12:2003)

मेष	18-12-2003	29.00

धनु दशा

(18:12:2003 - 18:12:2005)

मकर	18-12-2004	30.00
धनु	18-12-2005	31.00

कर्क दशा

(18:12:2005 - 18:12:2008)

कन्या	18-12-2006	32.00
सिहं	18-12-2007	33.00
कर्क	18-12-2008	34.00

मीन दशा

(18:12:2008 - 18:12:2019)

मकर	18-12-2009	35.00
धनु	18-12-2010	36.00
वृश्चिक	18-12-2011	37.00
तुला	18-12-2012	38.00
कन्या	18-12-2013	39.00
सिहं	18-12-2014	40.00
कर्क	18-12-2015	41.00
मिथुन	18-12-2016	42.00
वृष	18-12-2017	43.00
मेष	18-12-2018	44.00
मीन	18-12-2019	45.00

वृश्चिक दशा

(18:12:2019 - 18:12:2027)

मेष	18-12-2020	46.00
वृष	18-12-2021	47.00
मिथुन	18-12-2022	48.00
कर्क	18-12-2023	49.00
सिहं	18-12-2024	50.00
कन्या	18-12-2025	51.00
तुला	18-12-2026	52.00
वृश्चिक	18-12-2027	53.00

मिथुन दशा

(18:12:2027 - 18:12:2033)

वृश्चिक	18-12-2028	54.00
तुला	18-12-2029	55.00
कन्या	18-12-2030	56.00
सिहं	18-12-2031	57.00
कर्क	18-12-2032	58.00
मिथुन	18-12-2033	59.00

कुम्भ दशा

(18:12:2033 - 18:12:2042)

मिथुन	18-12-2034	60.00
कर्क	18-12-2035	61.00
सिहं	18-12-2036	62.00
कन्या	18-12-2037	63.00
तुला	18-12-2038	64.00
वृश्चिक	18-12-2039	65.00
धनु	18-12-2040	66.00
मकर	18-12-2041	67.00
कुम्भ	18-12-2042	68.00

तुला दशा

(18:12:2042 - 18:12:2046)

मकर	18-12-2043	69.00
धनु	18-12-2044	70.00
वृश्चिक	18-12-2045	71.00
तुला	18-12-2046	72.00

कन्या दशा

(18:12:1973 TO 18:12:1976)

वृश्चिक भुक्ति		
(18:12:1973 - 18:12:1974)		
मेष	17:01:1974	0.0
वृष	16:02:1974	0.1
मिथुन	19:03:1974	0.2
कर्क	18:04:1974	0.2
सिहं	19:05:1974	0.3
कन्या	18:06:1974	0.4
तुला	19:07:1974	0.5
वृश्चिक	18:08:1974	0.6
धनु	17:09:1974	0.7
मकर	18:10:1974	0.7
कुम्भ	17:11:1974	0.8
मीन	18:12:1974	0.9

तुला भुक्ति		
(18:12:1974 - 18:12:1975)		
मकर	17:01:1975	1.0
धनु	16:02:1975	1.1
वृश्चिक	19:03:1975	1.2
तुला	18:04:1975	1.2
कन्या	19:05:1975	1.3
सिहं	18:06:1975	1.4
कर्क	19:07:1975	1.5
मिथुन	18:08:1975	1.6
वृष	17:09:1975	1.7
मेष	18:10:1975	1.7
मीन	17:11:1975	1.8
कुम्भ	18:12:1975	1.9

कन्या भुक्ति		
(18:12:1975 - 18:12:1976)		
वृश्चिक	17:01:1976	2.0
तुला	17:02:1976	2.1
कन्या	18:03:1976	2.2
सिहं	18:04:1976	2.2
कर्क	18:05:1976	2.3
मिथुन	18:06:1976	2.4
वृष	18:07:1976	2.5
मेष	18:08:1976	2.6
मीन	17:09:1976	2.7
कुम्भ	18:10:1976	2.7
मकर	17:11:1976	2.8
धनु	18:12:1976	2.9

वृष दशा

(18:12:1976 TO 18:12:1985)

मकर भुक्ति		
(18:12:1976 - 18:12:1977)		
मिथुन	17:01:1977	3.0
कर्क	16:02:1977	3.1
सिहं	19:03:1977	3.2
कन्या	18:04:1977	3.2
तुला	19:05:1977	3.3
वृश्चिक	18:06:1977	3.4
धनु	19:07:1977	3.5
मकर	18:08:1977	3.6
कुम्भ	17:09:1977	3.7
मीन	18:10:1977	3.7
मेष	17:11:1977	3.8
वृष	18:12:1977	3.9

धनु भुक्ति		
(18:12:1977 - 18:12:1978)		
मकर	17:01:1978	4.0
धनु	16:02:1978	4.1
वृश्चिक	19:03:1978	4.2
तुला	18:04:1978	4.2
कन्या	19:05:1978	4.3
सिहं	18:06:1978	4.4
कर्क	19:07:1978	4.5
मिथुन	18:08:1978	4.6
वृष	17:09:1978	4.7
मेष	18:10:1978	4.7
मीन	17:11:1978	4.8
कुम्भ	18:12:1978	4.9

वृश्चिक भुक्ति		
(18:12:1978 - 18:12:1979)		
मेष	17:01:1979	5.0
वृष	16:02:1979	5.1
मिथुन	19:03:1979	5.2
कर्क	18:04:1979	5.2
सिहं	19:05:1979	5.3
कन्या	18:06:1979	5.4
तुला	19:07:1979	5.5
वृश्चिक	18:08:1979	5.6
धनु	17:09:1979	5.7
मकर	18:10:1979	5.7
कुम्भ	17:11:1979	5.8
मीन	18:12:1979	5.9

तुला भुक्ति		
(18:12:1979 - 18:12:1980)		
मकर	17:01:1980	6.0
धनु	17:02:1980	6.1
वृश्चिक	18:03:1980	6.2
तुला	18:04:1980	6.2
कन्या	18:05:1980	6.3
सिहं	18:06:1980	6.4
कर्क	18:07:1980	6.5
मिथुन	18:08:1980	6.6
वृष	17:09:1980	6.7
मेष	18:10:1980	6.7
मीन	17:11:1980	6.8
कुम्भ	18:12:1980	6.9

कन्या भुक्ति		
(18:12:1980 - 18:12:1981)		
वृश्चिक	17:01:1981	7.0
तुला	16:02:1981	7.1
कन्या	19:03:1981	7.2
सिहं	18:04:1981	7.2
कर्क	19:05:1981	7.3
मिथुन	18:06:1981	7.4
वृष	19:07:1981	7.5
मेष	18:08:1981	7.6
मीन	17:09:1981	7.7
कुम्भ	18:10:1981	7.7
मकर	17:11:1981	7.8
धनु	18:12:1981	7.9

सिहं भुक्ति		
(18:12:1981 - 18:12:1982)		
धनु	17:01:1982	8.0
मकर	16:02:1982	8.1
कुम्भ	19:03:1982	8.2
मीन	18:04:1982	8.2
मेष	19:05:1982	8.3
वृष	18:06:1982	8.4
मिथुन	19:07:1982	8.5
कर्क	18:08:1982	8.6
सिहं	17:09:1982	8.7
कन्या	18:10:1982	8.7
तुला	17:11:1982	8.8
वृश्चिक	18:12:1982	8.9

कर्क भुक्ति		
(18:12:1982 - 18:12:1983)		
कन्या	17:01:1983	9.0
सिहं	16:02:1983	9.1
कर्क	19:03:1983	9.2
मिथुन	18:04:1983	9.2
वृष	19:05:1983	9.3
मेष	18:06:1983	9.4
मीन	19:07:1983	9.5
कुम्भ	18:08:1983	9.6
मकर	17:09:1983	9.7
धनु	18:10:1983	9.7
वृश्चिक	17:11:1983	9.8
तुला	18:12:1983	9.9

मिथुन भुक्ति		
(18:12:1983 - 18:12:1984)		
वृश्चिक	17:01:1984	10.0
तुला	17:02:1984	10.1
कन्या	18:03:1984	10.2
सिहं	18:04:1984	10.2
कर्क	18:05:1984	10.3
मिथुन	18:06:1984	10.4
वृष	18:07:1984	10.5
मेष	18:08:1984	10.6
मीन	17:09:1984	10.7
कुम्भ	18:10:1984	10.7
मकर	17:11:1984	10.8
धनु	18:12:1984	10.9

वृष भुक्ति		
(18:12:1984 - 18:12:1985)		
मकर	17:01:1985	11.0
धनु	16:02:1985	11.1
वृश्चिक	19:03:1985	11.2
तुला	18:04:1985	11.2
कन्या	19:05:1985	11.3
सिहं	18:06:1985	11.4
कर्क	19:07:1985	11.5
मिथुन	18:08:1985	11.6
वृष	17:09:1985	11.7
मेष	18:10:1985	11.7
मीन	17:11:1985	11.8
कुम्भ	18:12:1985	11.9

मकर दशा

(18:12:1985 TO 18:12:1993)

मिथुन भुक्ति

(18:12:1985 - 18:12:1986)

वृश्चिक	17:01:1986	12.0
तुला	16:02:1986	12.1
कन्या	19:03:1986	12.2
सिहं	18:04:1986	12.2
कर्क	19:05:1986	12.3
मिथुन	18:06:1986	12.4
वृष	19:07:1986	12.5
मेष	18:08:1986	12.6
मीन	17:09:1986	12.7
कुम्भ	18:10:1986	12.7
मकर	17:11:1986	12.8
धनु	18:12:1986	12.9

कर्क भुक्ति

(18:12:1986 - 18:12:1987)

कन्या	17:01:1987	13.0
सिहं	16:02:1987	13.1
कर्क	19:03:1987	13.2
मिथुन	18:04:1987	13.2
वृष	19:05:1987	13.3
मेष	18:06:1987	13.4
मीन	19:07:1987	13.5
कुम्भ	18:08:1987	13.6
मकर	17:09:1987	13.7
धनु	18:10:1987	13.7
वृश्चिक	17:11:1987	13.8
तुला	18:12:1987	13.9

सिहं भुक्ति

(18:12:1987 - 18:12:1988)

धनु	17:01:1988	14.0
मकर	17:02:1988	14.1
कुम्भ	18:03:1988	14.2
मीन	18:04:1988	14.2
मेष	18:05:1988	14.3
वृष	18:06:1988	14.4
मिथुन	18:07:1988	14.5
कर्क	18:08:1988	14.6
सिहं	17:09:1988	14.7
कन्या	18:10:1988	14.7
तुला	17:11:1988	14.8
वृश्चिक	18:12:1988	14.9

कन्या भुक्ति

(18:12:1988 - 18:12:1989)

वृश्चिक	17:01:1989	15.0
तुला	16:02:1989	15.1
कन्या	19:03:1989	15.2
सिहं	18:04:1989	15.2
कर्क	19:05:1989	15.3
मिथुन	18:06:1989	15.4
वृष	19:07:1989	15.5
मेष	18:08:1989	15.6
मीन	17:09:1989	15.7
कुम्भ	18:10:1989	15.7
मकर	17:11:1989	15.8
धनु	18:12:1989	15.9

तुला भुक्ति

(18:12:1989 - 18:12:1990)

मकर	17:01:1990	16.0
धनु	16:02:1990	16.1
वृश्चिक	19:03:1990	16.2
तुला	18:04:1990	16.2
कन्या	19:05:1990	16.3
सिहं	18:06:1990	16.4
कर्क	19:07:1990	16.5
मिथुन	18:08:1990	16.6
वृष	17:09:1990	16.7
मेष	18:10:1990	16.7
मीन	17:11:1990	16.8
कुम्भ	18:12:1990	16.9

वृश्चिक भुक्ति

(18:12:1990 - 18:12:1991)

मेष	17:01:1991	17.0
वृष	16:02:1991	17.1
मिथुन	19:03:1991	17.2
कर्क	18:04:1991	17.2
सिहं	19:05:1991	17.3
कन्या	18:06:1991	17.4
तुला	19:07:1991	17.5
वृश्चिक	18:08:1991	17.6
धनु	17:09:1991	17.7
मकर	18:10:1991	17.7
कुम्भ	17:11:1991	17.8
मीन	18:12:1991	17.9

धनु भुक्ति

(18:12:1991 - 18:12:1992)

मकर	17:01:1992	18.0
धनु	17:02:1992	18.1
वृश्चिक	18:03:1992	18.2
तुला	18:04:1992	18.2
कन्या	18:05:1992	18.3
सिहं	18:06:1992	18.4
कर्क	18:07:1992	18.5
मिथुन	18:08:1992	18.6
वृष	17:09:1992	18.7
मेष	18:10:1992	18.7
मीन	17:11:1992	18.8
कुम्भ	18:12:1992	18.9

मकर भुक्ति

(18:12:1992 - 18:12:1993)

मिथुन	17:01:1993	19.0
कर्क	16:02:1993	19.1
सिहं	19:03:1993	19.2
कन्या	18:04:1993	19.2
तुला	19:05:1993	19.3
वृश्चिक	18:06:1993	19.4
धनु	19:07:1993	19.5
मकर	18:08:1993	19.6
कुम्भ	17:09:1993	19.7
मीन	18:10:1993	19.7
मेष	17:11:1993	19.8
वृष	18:12:1993	19.9

सिहं दशा

(18:12:1993 TO 18:12:2002)

धनु भुक्ति

(18:12:1993 - 18:12:1994)		
मकर	17:01:1994	20.0
धनु	16:02:1994	20.1
वृश्चिक	19:03:1994	20.2
तुला	18:04:1994	20.2
कन्या	19:05:1994	20.3
सिहं	18:06:1994	20.4
कर्क	19:07:1994	20.5
मिथुन	18:08:1994	20.6
वृष	17:09:1994	20.7
मेष	18:10:1994	20.7
मीन	17:11:1994	20.8
कुम्भ	18:12:1994	20.9

मकर भुक्ति

(18:12:1994 - 18:12:1995)		
मिथुन	17:01:1995	21.0
कर्क	16:02:1995	21.1
सिहं	19:03:1995	21.2
कन्या	18:04:1995	21.2
तुला	19:05:1995	21.3
वृश्चिक	18:06:1995	21.4
धनु	19:07:1995	21.5
मकर	18:08:1995	21.6
कुम्भ	17:09:1995	21.7
मीन	18:10:1995	21.7
मेष	17:11:1995	21.8
वृष	18:12:1995	21.9

कुम्भ भुक्ति

(18:12:1995 - 18:12:1996)		
मिथुन	17:01:1996	22.0
कर्क	17:02:1996	22.1
सिहं	18:03:1996	22.2
कन्या	18:04:1996	22.2
तुला	18:05:1996	22.3
वृश्चिक	18:06:1996	22.4
धनु	18:07:1996	22.5
मकर	18:08:1996	22.6
कुम्भ	17:09:1996	22.7
मीन	18:10:1996	22.7
मेष	17:11:1996	22.8
वृष	18:12:1996	22.9

मीन भुक्ति

(18:12:1996 - 18:12:1997)		
मकर	17:01:1997	23.0
धनु	16:02:1997	23.1
वृश्चिक	19:03:1997	23.2
तुला	18:04:1997	23.2
कन्या	19:05:1997	23.3
सिहं	18:06:1997	23.4
कर्क	19:07:1997	23.5
मिथुन	18:08:1997	23.6
वृष	17:09:1997	23.7
मेष	18:10:1997	23.7
मीन	17:11:1997	23.8
कुम्भ	18:12:1997	23.9

मेष भुक्ति

(18:12:1997 - 18:12:1998)		
मेष	17:01:1998	24.0
वृष	16:02:1998	24.1
मिथुन	19:03:1998	24.2
कर्क	18:04:1998	24.2
सिहं	19:05:1998	24.3
कन्या	18:06:1998	24.4
तुला	19:07:1998	24.5
वृश्चिक	18:08:1998	24.6
धनु	17:09:1998	24.7
मकर	18:10:1998	24.7
कुम्भ	17:11:1998	24.8
मीन	18:12:1998	24.9

वृष भुक्ति

(18:12:1998 - 18:12:1999)		
मकर	17:01:1999	25.0
धनु	16:02:1999	25.1
वृश्चिक	19:03:1999	25.2
तुला	18:04:1999	25.2
कन्या	19:05:1999	25.3
सिहं	18:06:1999	25.4
कर्क	19:07:1999	25.5
मिथुन	18:08:1999	25.6
वृष	17:09:1999	25.7
मेष	18:10:1999	25.7
मीन	17:11:1999	25.8
कुम्भ	18:12:1999	25.9

मिथुन भुक्ति

(18:12:1999 - 18:12:2000)		
वृश्चिक	17:01:2000	26.0
तुला	17:02:2000	26.1
कन्या	18:03:2000	26.2
सिहं	18:04:2000	26.2
कर्क	18:05:2000	26.3
मिथुन	18:06:2000	26.4
वृष	18:07:2000	26.5
मेष	18:08:2000	26.6
मीन	17:09:2000	26.7
कुम्भ	18:10:2000	26.7
मकर	17:11:2000	26.8
धनु	18:12:2000	26.9

कर्क भुक्ति

(18:12:2000 - 18:12:2001)		
कन्या	17:01:2001	27.0
सिहं	16:02:2001	27.1
कर्क	19:03:2001	27.2
मिथुन	18:04:2001	27.2
वृष	19:05:2001	27.3
मेष	18:06:2001	27.4
मीन	19:07:2001	27.5
कुम्भ	18:08:2001	27.6
मकर	17:09:2001	27.7
धनु	18:10:2001	27.7
वृश्चिक	17:11:2001	27.8
तुला	18:12:2001	27.9

सिहं भुक्ति

(18:12:2001 - 18:12:2002)		
धनु	17:01:2002	28.0
मकर	16:02:2002	28.1
कुम्भ	19:03:2002	28.2
मीन	18:04:2002	28.2
मेष	19:05:2002	28.3
वृष	18:06:2002	28.4
मिथुन	19:07:2002	28.5
कर्क	18:08:2002	28.6
सिहं	17:09:2002	28.7
कन्या	18:10:2002	28.7
तुला	17:11:2002	28.8
वृश्चिक	18:12:2002	28.9

मेष दशा

(18:12:2002 TO 18:12:2003)

मेष भुक्ति		
(18:12:2002 - 18:12:2003)		
मेष	17:01:2003	29.0
वृष	16:02:2003	29.1
मिथुन	19:03:2003	29.2
कर्क	18:04:2003	29.2
सिहं	19:05:2003	29.3
कन्या	18:06:2003	29.4
तुला	19:07:2003	29.5
वृश्चिक	18:08:2003	29.6
धनु	17:09:2003	29.7
मकर	18:10:2003	29.7
कुम्भ	17:11:2003	29.8
मीन	18:12:2003	29.9

जैमिनी चर दशा

धनु दशा
(18:12:2003 TO 18:12:2005)

मकर भुक्ति			धनु भुक्ति		
(18:12:2003 - 18:12:2004)			(18:12:2004 - 18:12:2005)		
मिथुन	17:01:2004	30.0	मकर	17:01:2005	31.0
कर्क	17:02:2004	30.1	धनु	16:02:2005	31.1
सिहं	18:03:2004	30.2	वृश्चिक	19:03:2005	31.2
कन्या	18:04:2004	30.2	तुला	18:04:2005	31.2
तुला	18:05:2004	30.3	कन्या	19:05:2005	31.3
वृश्चिक	18:06:2004	30.4	सिहं	18:06:2005	31.4
धनु	18:07:2004	30.5	कर्क	19:07:2005	31.5
मकर	18:08:2004	30.6	मिथुन	18:08:2005	31.6
कुम्भ	17:09:2004	30.7	वृष	17:09:2005	31.7
मीन	18:10:2004	30.7	मेष	18:10:2005	31.7
मेष	17:11:2004	30.8	मीन	17:11:2005	31.8
वृष	18:12:2004	30.9	कुम्भ	18:12:2005	31.9

कर्क दशा

(18:12:2005 TO 18:12:2008)

कन्या भुक्ति			सिहं भुक्ति			कर्क भुक्ति					
(18:12:2005 - 18:12:2006)			(18:12:2006 - 18:12:2007)			(18:12:2007 - 18:12:2008)					
वृश्चिक	17:01:2006	32.0	धनु	17:01:2007	33.0	कन्या	17:01:2008	34.0			
तुला	16:02:2006	32.1	मकर	16:02:2007	33.1	सिहं	17:02:2008	34.1			
कन्या	19:03:2006	32.2	कुम्भ	19:03:2007	33.2	कर्क	18:03:2008	34.2			
सिहं	18:04:2006	32.2	मीन	18:04:2007	33.2	मिथुन	18:04:2008	34.2			
कर्क	19:05:2006	32.3	मेष	19:05:2007	33.3	वृष	18:05:2008	34.3			
मिथुन	18:06:2006	32.4	वृष	18:06:2007	33.4	मेष	18:06:2008	34.4			
वृष	19:07:2006	32.5	मिथुन	19:07:2007	33.5	मीन	18:07:2008	34.5			
मेष	18:08:2006	32.6	कर्क	18:08:2007	33.6	कुम्भ	18:08:2008	34.6			
मीन	17:09:2006	32.7	सिहं	17:09:2007	33.7	मकर	17:09:2008	34.7			
कुम्भ	18:10:2006	32.7	कन्या	18:10:2007	33.7	धनु	18:10:2008	34.7			
मकर	17:11:2006	32.8	तुला	17:11:2007	33.8	वृश्चिक	17:11:2008	34.8			
धनु	18:12:2006	32.9	वृश्चिक	18:12:2007	33.9	तुला	18:12:2008	34.9			

मीन दशा

(18:12:2008 TO 18:12:2019)

मकर भुक्ति			धनु भुक्ति			वृश्चिक भुक्ति			तुला भुक्ति		
(18:12:2008 - 18:12:2009)			(18:12:2009 - 18:12:2010)			(18:12:2010 - 18:12:2011)			(18:12:2011 - 18:12:2012)		
मिथुन	17:01:2009	35.0	मकर	17:01:2010	36.0	मेष	17:01:2011	37.0	मकर	17:01:2012	38.0
कर्क	16:02:2009	35.1	धनु	16:02:2010	36.1	वृष	16:02:2011	37.1	धनु	17:02:2012	38.1
सिहं	19:03:2009	35.2	वृश्चिक	19:03:2010	36.2	मिथुन	19:03:2011	37.2	वृश्चिक	18:03:2012	38.2
कन्या	18:04:2009	35.2	तुला	18:04:2010	36.2	कर्क	18:04:2011	37.2	तुला	18:04:2012	38.2
तुला	19:05:2009	35.3	कन्या	19:05:2010	36.3	सिहं	19:05:2011	37.3	कन्या	18:05:2012	38.3
वृश्चिक	18:06:2009	35.4	सिहं	18:06:2010	36.4	कन्या	18:06:2011	37.4	सिहं	18:06:2012	38.4
धनु	19:07:2009	35.5	कर्क	19:07:2010	36.5	तुला	19:07:2011	37.5	कर्क	18:07:2012	38.5
मकर	18:08:2009	35.6	मिथुन	18:08:2010	36.6	वृश्चिक	18:08:2011	37.6	मिथुन	18:08:2012	38.6
कुम्भ	17:09:2009	35.7	वृष	17:09:2010	36.7	धनु	17:09:2011	37.7	वृष	17:09:2012	38.7
मीन	18:10:2009	35.7	मेष	18:10:2010	36.7	मकर	18:10:2011	37.7	मेष	18:10:2012	38.7
मेष	17:11:2009	35.8	मीन	17:11:2010	36.8	कुम्भ	17:11:2011	37.8	मीन	17:11:2012	38.8
वृष	18:12:2009	35.9	कुम्भ	18:12:2010	36.9	मीन	18:12:2011	37.9	कुम्भ	18:12:2012	38.9

कन्या भुक्ति			सिहं भुक्ति			कर्क भुक्ति			मिथुन भुक्ति		
(18:12:2012 - 18:12:2013)			(18:12:2013 - 18:12:2014)			(18:12:2014 - 18:12:2015)			(18:12:2015 - 18:12:2016)		
वृश्चिक	17:01:2013	39.0	धनु	17:01:2014	40.0	कन्या	17:01:2015	41.0	वृश्चिक	17:01:2016	42.0
तुला	16:02:2013	39.1	मकर	16:02:2014	40.1	सिहं	16:02:2015	41.1	तुला	17:02:2016	42.1
कन्या	19:03:2013	39.2	कुम्भ	19:03:2014	40.2	कर्क	19:03:2015	41.2	कन्या	18:03:2016	42.2
सिहं	18:04:2013	39.2	मीन	18:04:2014	40.2	मिथुन	18:04:2015	41.2	सिहं	18:04:2016	42.2
कर्क	19:05:2013	39.3	मेष	19:05:2014	40.3	वृष	19:05:2015	41.3	कर्क	18:05:2016	42.3
मिथुन	18:06:2013	39.4	वृष	18:06:2014	40.4	मेष	18:06:2015	41.4	मिथुन	18:06:2016	42.4
वृष	19:07:2013	39.5	मिथुन	19:07:2014	40.5	मीन	19:07:2015	41.5	वृष	18:07:2016	42.5
मेष	18:08:2013	39.6	कर्क	18:08:2014	40.6	कुम्भ	18:08:2015	41.6	मेष	18:08:2016	42.6
मीन	17:09:2013	39.7	सिहं	17:09:2014	40.7	मकर	17:09:2015	41.7	मीन	17:09:2016	42.7
कुम्भ	18:10:2013	39.7	कन्या	18:10:2014	40.7	धनु	18:10:2015	41.7	कुम्भ	18:10:2016	42.7
मकर	17:11:2013	39.8	तुला	17:11:2014	40.8	वृश्चिक	17:11:2015	41.8	मकर	17:11:2016	42.8
धनु	18:12:2013	39.9	वृश्चिक	18:12:2014	40.9	तुला	18:12:2015	41.9	धनु	18:12:2016	42.9

वृष भुक्ति			मेष भुक्ति			मीन भुक्ति					
(18:12:2016 - 18:12:2017)			(18:12:2017 - 18:12:2018)			(18:12:2018 - 18:12:2019)					
मकर	17:01:2017	43.0	मेष	17:01:2018	44.0	मकर	17:01:2019	45.0			
धनु	16:02:2017	43.1	वृष	16:02:2018	44.1	धनु	16:02:2019	45.1			
वृश्चिक	19:03:2017	43.2	मिथुन	19:03:2018	44.2	वृश्चिक	19:03:2019	45.2			
तुला	18:04:2017	43.2	कर्क	18:04:2018	44.2	तुला	18:04:2019	45.2			
कन्या	19:05:2017	43.3	सिहं	19:05:2018	44.3	कन्या	19:05:2019	45.3			
सिहं	18:06:2017	43.4	कन्या	18:06:2018	44.4	सिहं	18:06:2019	45.4			
कर्क	19:07:2017	43.5	तुला	19:07:2018	44.5	कर्क	19:07:2019	45.5			
मिथुन	18:08:2017	43.6	वृश्चिक	18:08:2018	44.6	मिथुन	18:08:2019	45.6			
वृष	17:09:2017	43.7	धनु	17:09:2018	44.7	वृष	17:09:2019	45.7			
मेष	18:10:2017	43.7	मकर	18:10:2018	44.7	मेष	18:10:2019	45.7			
मीन	17:11:2017	43.8	कुम्भ	17:11:2018	44.8	मीन	17:11:2019	45.8			
कुम्भ	18:12:2017	43.9	मीन	18:12:2018	44.9	कुम्भ	18:12:2019	45.9			

वृश्चिक दशा

(18:12:2019 TO 18:12:2027)

मेष भुक्ति (18:12:2019 - 18:12:2020)

मेष	17:01:2020	46.0
वृष	17:02:2020	46.1
मिथुन	18:03:2020	46.2
कर्क	18:04:2020	46.2
सिहं	18:05:2020	46.3
कन्या	18:06:2020	46.4
तुला	18:07:2020	46.5
वृश्चिक	18:08:2020	46.6
धनु	17:09:2020	46.7
मकर	18:10:2020	46.7
कुम्भ	17:11:2020	46.8
मीन	18:12:2020	46.9

वृष भुक्ति (18:12:2020 - 18:12:2021)

मकर	17:01:2021	47.0
धनु	16:02:2021	47.1
वृश्चिक	19:03:2021	47.2
तुला	18:04:2021	47.2
कन्या	19:05:2021	47.3
सिहं	18:06:2021	47.4
कर्क	19:07:2021	47.5
मिथुन	18:08:2021	47.6
वृष	17:09:2021	47.7
मेष	18:10:2021	47.7
मीन	17:11:2021	47.8
कुम्भ	18:12:2021	47.9

मिथुन भुक्ति (18:12:2021 - 18:12:2022)

वृश्चिक	17:01:2022	48.0
तुला	16:02:2022	48.1
कन्या	19:03:2022	48.2
सिहं	18:04:2022	48.2
कर्क	19:05:2022	48.3
मिथुन	18:06:2022	48.4
वृष	19:07:2022	48.5
मेष	18:08:2022	48.6
मीन	17:09:2022	48.7
कुम्भ	18:10:2022	48.7
मकर	17:11:2022	48.8
धनु	18:12:2022	48.9

कर्क भुक्ति (18:12:2022 - 18:12:2023)

कन्या	17:01:2023	49.0
सिहं	16:02:2023	49.1
कर्क	19:03:2023	49.2
मिथुन	18:04:2023	49.2
वृष	19:05:2023	49.3
मेष	18:06:2023	49.4
मीन	19:07:2023	49.5
कुम्भ	18:08:2023	49.6
मकर	17:09:2023	49.7
धनु	18:10:2023	49.7
वृश्चिक	17:11:2023	49.8
तुला	18:12:2023	49.9

सिहं भुक्ति (18:12:2023 - 18:12:2024)

धनु	17:01:2024	50.0
मकर	17:02:2024	50.1
कुम्भ	18:03:2024	50.2
मीन	18:04:2024	50.2
मेष	18:05:2024	50.3
वृष	18:06:2024	50.4
मिथुन	18:07:2024	50.5
कर्क	18:08:2024	50.6
सिहं	17:09:2024	50.7
कन्या	18:10:2024	50.7
तुला	17:11:2024	50.8
वृश्चिक	18:12:2024	50.9

कन्या भुक्ति (18:12:2024 - 18:12:2025)

वृश्चिक	17:01:2025	51.0
तुला	16:02:2025	51.1
कन्या	19:03:2025	51.2
सिहं	18:04:2025	51.2
कर्क	19:05:2025	51.3
मिथुन	18:06:2025	51.4
वृष	19:07:2025	51.5
मेष	18:08:2025	51.6
मीन	17:09:2025	51.7
कुम्भ	18:10:2025	51.7
मकर	17:11:2025	51.8
धनु	18:12:2025	51.9

तुला भुक्ति (18:12:2025 - 18:12:2026)

मकर	17:01:2026	52.0
धनु	16:02:2026	52.1
वृश्चिक	19:03:2026	52.2
तुला	18:04:2026	52.2
कन्या	19:05:2026	52.3
सिहं	18:06:2026	52.4
कर्क	19:07:2026	52.5
मिथुन	18:08:2026	52.6
वृष	17:09:2026	52.7
मेष	18:10:2026	52.7
मीन	17:11:2026	52.8
कुम्भ	18:12:2026	52.9

वृश्चिक भुक्ति (18:12:2026 - 18:12:2027)

मेष	17:01:2027	53.0
वृष	16:02:2027	53.1
मिथुन	19:03:2027	53.2
कर्क	18:04:2027	53.2
सिहं	19:05:2027	53.3
कन्या	18:06:2027	53.4
तुला	19:07:2027	53.5
वृश्चिक	18:08:2027	53.6
धनु	17:09:2027	53.7
मकर	18:10:2027	53.7
कुम्भ	17:11:2027	53.8
मीन	18:12:2027	53.9

मिथुन दशा

(18:12:2027 TO 18:12:2033)

वृश्चिक भुक्ति (18:12:2027 - 18:12:2028)

मेष	17:01:2028	54.0
वृष	17:02:2028	54.1
मिथुन	18:03:2028	54.2
कर्क	18:04:2028	54.2
सिहं	18:05:2028	54.3
कन्या	18:06:2028	54.4
तुला	18:07:2028	54.5
वृश्चिक	18:08:2028	54.6
धनु	17:09:2028	54.7
मकर	18:10:2028	54.7
कुम्भ	17:11:2028	54.8
मीन	18:12:2028	54.9

तुला भुक्ति (18:12:2028 - 18:12:2029)

मकर	17:01:2029	55.0
धनु	16:02:2029	55.1
वृश्चिक	19:03:2029	55.2
तुला	18:04:2029	55.2
कन्या	19:05:2029	55.3
सिहं	18:06:2029	55.4
कर्क	19:07:2029	55.5
मिथुन	18:08:2029	55.6
वृष	17:09:2029	55.7
मेष	18:10:2029	55.7
मीन	17:11:2029	55.8
कुम्भ	18:12:2029	55.9

कन्या भुक्ति (18:12:2029 - 18:12:2030)

वृश्चिक	17:01:2030	56.0
तुला	16:02:2030	56.1
कन्या	19:03:2030	56.2
सिहं	18:04:2030	56.2
कर्क	19:05:2030	56.3
मिथुन	18:06:2030	56.4
वृष	19:07:2030	56.5
मेष	18:08:2030	56.6
मीन	17:09:2030	56.7
कुम्भ	18:10:2030	56.7
मकर	17:11:2030	56.8
धनु	18:12:2030	56.9

सिहं भुक्ति (18:12:2030 - 18:12:2031)

धनु	17:01:2031	57.0
मकर	16:02:2031	57.1
कुम्भ	19:03:2031	57.2
मीन	18:04:2031	57.2
मेष	19:05:2031	57.3
वृष	18:06:2031	57.4
मिथुन	19:07:2031	57.5
कर्क	18:08:2031	57.6
सिहं	17:09:2031	57.7
कन्या	18:10:2031	57.7
तुला	17:11:2031	57.8
वृश्चिक	18:12:2031	57.9

कर्क भुक्ति (18:12:2031 - 18:12:2032)

कन्या	17:01:2032	58.0
सिहं	17:02:2032	58.1
कर्क	18:03:2032	58.2
मिथुन	18:04:2032	58.2
वृष	18:05:2032	58.3
मेष	18:06:2032	58.4
मीन	18:07:2032	58.5
कुम्भ	18:08:2032	58.6
मकर	17:09:2032	58.7
धनु	18:10:2032	58.7
वृश्चिक	17:11:2032	58.8
तुला	18:12:2032	58.9

मिथुन भुक्ति (18:12:2032 - 18:12:2033)

वृश्चिक	17:01:2033	59.0
तुला	16:02:2033	59.1
कन्या	19:03:2033	59.2
सिहं	18:04:2033	59.2
कर्क	19:05:2033	59.3
मिथुन	18:06:2033	59.4
वृष	19:07:2033	59.5
मेष	18:08:2033	59.6
मीन	17:09:2033	59.7
कुम्भ	18:10:2033	59.7
मकर	17:11:2033	59.8
धनु	18:12:2033	59.9

कुम्भ दशा

(18:12:2033 TO 18:12:2042)

मिथुन भुक्ति (18:12:2033 - 18:12:2034)

वृश्चिक	17:01:2034	60.0
तुला	16:02:2034	60.1
कन्या	19:03:2034	60.2
सिहं	18:04:2034	60.2
कर्क	19:05:2034	60.3
मिथुन	18:06:2034	60.4
वृष	19:07:2034	60.5
मेष	18:08:2034	60.6
मीन	17:09:2034	60.7
कुम्भ	18:10:2034	60.7
मकर	17:11:2034	60.8
धनु	18:12:2034	60.9

कर्क भुक्ति (18:12:2034 - 18:12:2035)

कन्या	17:01:2035	61.0
सिहं	16:02:2035	61.1
कर्क	19:03:2035	61.2
मिथुन	18:04:2035	61.2
वृष	19:05:2035	61.3
मेष	18:06:2035	61.4
मीन	19:07:2035	61.5
कुम्भ	18:08:2035	61.6
मकर	17:09:2035	61.7
धनु	18:10:2035	61.7
वृश्चिक	17:11:2035	61.8
तुला	18:12:2035	61.9

सिहं भुक्ति (18:12:2035 - 18:12:2036)

धनु	17:01:2036	62.0
मकर	17:02:2036	62.1
कुम्भ	18:03:2036	62.2
मीन	18:04:2036	62.2
मेष	18:05:2036	62.3
वृष	18:06:2036	62.4
मिथुन	18:07:2036	62.5
कर्क	18:08:2036	62.6
सिहं	17:09:2036	62.7
कन्या	18:10:2036	62.7
तुला	17:11:2036	62.8
वृश्चिक	18:12:2036	62.9

कन्या भुक्ति (18:12:2036 - 18:12:2037)

वृश्चिक	17:01:2037	63.0
तुला	16:02:2037	63.1
कन्या	19:03:2037	63.2
सिहं	18:04:2037	63.2
कर्क	19:05:2037	63.3
मिथुन	18:06:2037	63.4
वृष	19:07:2037	63.5
मेष	18:08:2037	63.6
मीन	17:09:2037	63.7
कुम्भ	18:10:2037	63.7
मकर	17:11:2037	63.8
धनु	18:12:2037	63.9

तुला भुक्ति (18:12:2037 - 18:12:2038)

मकर	17:01:2038	64.0
धनु	16:02:2038	64.1
वृश्चिक	19:03:2038	64.2
तुला	18:04:2038	64.2
कन्या	19:05:2038	64.3
सिहं	18:06:2038	64.4
कर्क	19:07:2038	64.5
मिथुन	18:08:2038	64.6
वृष	17:09:2038	64.7
मेष	18:10:2038	64.7
मीन	17:11:2038	64.8
कुम्भ	18:12:2038	64.9

वृश्चिक भुक्ति (18:12:2038 - 18:12:2039)

मेष	17:01:2039	65.0
वृष	16:02:2039	65.1
मिथुन	19:03:2039	65.2
कर्क	18:04:2039	65.2
सिहं	19:05:2039	65.3
कन्या	18:06:2039	65.4
तुला	19:07:2039	65.5
वृश्चिक	18:08:2039	65.6
धनु	17:09:2039	65.7
मकर	18:10:2039	65.7
कुम्भ	17:11:2039	65.8
मीन	18:12:2039	65.9

धनु भुक्ति (18:12:2039 - 18:12:2040)

मकर	17:01:2040	66.0
धनु	17:02:2040	66.1
वृश्चिक	18:03:2040	66.2
तुला	18:04:2040	66.2
कन्या	18:05:2040	66.3
सिहं	18:06:2040	66.4
कर्क	18:07:2040	66.5
मिथुन	18:08:2040	66.6
वृष	17:09:2040	66.7
मेष	18:10:2040	66.7
मीन	17:11:2040	66.8
कुम्भ	18:12:2040	66.9

मकर भुक्ति (18:12:2040 - 18:12:2041)

मिथुन	17:01:2041	67.0
कर्क	16:02:2041	67.1
सिहं	19:03:2041	67.2
कन्या	18:04:2041	67.2
तुला	19:05:2041	67.3
वृश्चिक	18:06:2041	67.4
धनु	19:07:2041	67.5
मकर	18:08:2041	67.6
कुम्भ	17:09:2041	67.7
मीन	18:10:2041	67.7
मेष	17:11:2041	67.8
वृष	18:12:2041	67.9

कुम्भ भुक्ति (18:12:2041 - 18:12:2042)

मिथुन	17:01:2042	68.0
कर्क	16:02:2042	68.1
सिहं	19:03:2042	68.2
कन्या	18:04:2042	68.2
तुला	19:05:2042	68.3
वृश्चिक	18:06:2042	68.4
धनु	19:07:2042	68.5
मकर	18:08:2042	68.6
कुम्भ	17:09:2042	68.7
मीन	18:10:2042	68.7
मेष	17:11:2042	68.8
वृष	18:12:2042	68.9

तुला दशा

(18:12:2042 TO 18:12:2046)

मकर भुक्ति			धनु भुक्ति			वृश्चिक भुक्ति			तुला भुक्ति		
(18:12:2042 - 18:12:2043)			(18:12:2043 - 18:12:2044)			(18:12:2044 - 18:12:2045)			(18:12:2045 - 18:12:2046)		
मिथुन	17:01:2043	69.0	मकर	17:01:2044	70.0	मेष	17:01:2045	71.0	मकर	17:01:2046	72.0
कर्क	16:02:2043	69.1	धनु	17:02:2044	70.1	वृष	16:02:2045	71.1	धनु	16:02:2046	72.1
सिहं	19:03:2043	69.2	वृश्चिक	18:03:2044	70.2	मिथुन	19:03:2045	71.2	वृश्चिक	19:03:2046	72.2
कन्या	18:04:2043	69.2	तुला	18:04:2044	70.2	कर्क	18:04:2045	71.2	तुला	18:04:2046	72.2
तुला	19:05:2043	69.3	कन्या	18:05:2044	70.3	सिहं	19:05:2045	71.3	कन्या	19:05:2046	72.3
वृश्चिक	18:06:2043	69.4	सिहं	18:06:2044	70.4	कन्या	18:06:2045	71.4	सिहं	18:06:2046	72.4
धनु	19:07:2043	69.5	कर्क	18:07:2044	70.5	तुला	19:07:2045	71.5	कर्क	19:07:2046	72.5
मकर	18:08:2043	69.6	मिथुन	18:08:2044	70.6	वृश्चिक	18:08:2045	71.6	मिथुन	18:08:2046	72.6
कुम्भ	17:09:2043	69.7	वृष	17:09:2044	70.7	धनु	17:09:2045	71.7	वृष	17:09:2046	72.7
मीन	18:10:2043	69.7	मेष	18:10:2044	70.7	मकर	18:10:2045	71.7	मेष	18:10:2046	72.7
मेष	17:11:2043	69.8	मीन	17:11:2044	70.8	कुम्भ	17:11:2045	71.8	मीन	17:11:2046	72.8
वृष	18:12:2043	69.9	कुम्भ	18:12:2044	70.9	मीन	18:12:2045	71.9	कुम्भ	18:12:2046	72.9

वैदिक ज्योतिष से आपकी जीवन यात्रा

आपकी लग्न राशि कन्या है। इस राशि को भौतिक, सामान्य या लचीली राशि के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। अन्य कई नैसर्गिक गुणात्मक विशेषताएं भी इसमें विद्यमान हैं। यह नीरस और मानवीय प्रकृति की राशि है।

आपकी कुण्डली के प्रथम भाव का विश्लेषण

सामान्य जानकारी, मानसिक शांति, व्यक्तित्व, अवसर और जीवन की दिशा

आप मेधावी, अध्ययनशील और विनोदपूर्ण प्रकृति के होंगे। आपके कार्य करने के तरीके बहुत नियमबद्ध और सुव्यवस्थित होंगे, आप बहुत ज्ञानी व्यक्ति होंगे– निपुणता प्राप्त करने के उद्देश्य से आप सदैव ज्ञान की खोज में लगे रहेंगे। आपका झुकाव निरन्तर अनौपचारिक अध्ययन अथवा अनुसंधान की ओर बना रहेगा, तंत्र–मंत्र और इससे संबंधित विषयों में भी आपकी रूचि हो सकती है। आपमें धैर्य व दृढ़ता का भण्डार हो सकता है।

आपके व्यक्तित्व में स्त्री गुण की प्रधानता अधिक हो सकती है। आपकी शारीरिक संरचना बहुत मजबूत नहीं हो सकती है, लेकिन दिखने में आप आकर्षक होंगे तथा स्वभाव से स्त्रियों वाले लक्षण अधिक दिख सकते हैं। आप तेज बुद्धि वाले तथा दूसरों के विचारों को सफलतापूर्वक व्यक्त करने में सक्षम होंगे। आप काम सुख के लिए आध्यात्मिक सुख का त्याग कर सकते हैं। आमतौर पर आप सम्मानित लोगों से घिरे रहना चाह सकते हैं, जो कि प्रसिद्ध लेखक, दस्तकार, वकील, राजनयिक एवं शहीद वीर जवान भी हो सकते है। आपको सारी भौतिक सुख–सुविधा प्राप्त होगी तथा देश के बाहर भी आपको सम्मान मिलेगा। आप बहुत जल्द निराश हो सकते हैं तथा अपनी भावुक प्रवृति के कारण मनोवैज्ञानिक समस्याओं के शिकार हो सकते हैं। आप धोखेबाज, गंभीर, जोड़–तोड़ करने वाले तथा दूसरे के धन पर अपनी नजर रखने वाले हो सकते हैं।

आपको कला और साहित्य में भी काफी रूचि हो सकती है। सामान्यतः अपने सभी मामलों में आप आदतन आलोचक और सख्त होंगे, तो भी आप कोमल वाणी, व्यावहारिक, परोपकारी और विवेकपूर्ण प्रकृति के होंगे। आप सादा जीवन और उच्च विचार में विश्वास रखेंगे और बहुत विवेकपूर्ण ढंग से अपने मौद्रिक मामलों का प्रबन्ध करेंगे। आप विचित्र वस्तुओं के उत्साही संग्रहकर्ता हो सकते हैं– संभवतः जिसने आपके जीवन के किसी समय के दौरान आपकी कल्पना को आकर्षित किया हो, लेकिन किसी भी संग्रहित वस्तु से अलग ना होने की आपकी एक विचित्र आदत हो सकती है।

आप गौर वर्ण के हो सकते हैं। आप मध्यम कद और गोल चेहरे व सुगठित छरहरी शारीरिक संरचना वाले हो सकते हैं। आपकी आँखें सुन्दर होंगी। आपकी आवाज कुछ–कुछ तेज हो सकती है। साथ ही आप कुछ हद तक अस्थिर मस्तिष्क वाले हो सकते हैं और बढ़ती उम्र के साथ उदास प्रवृत्ति अपना सकते हैं।

आपकी कुण्डली में पहले भाव में चन्द्रमा स्थित है। आपको आमदनी की कोई कमी नहीं होगी। हालांकि इसमें उतार–चढ़ाव हो सकता है। रोजगार से संबंधित आप लंबी दूरी की कई यात्रायें करेंगे तथा बड़े–बड़े लोगों के संपर्क में आयेंगे। आप व्यापारी के रुप में बहुत ज्यादा अनुभव एवं कौशल प्राप्त करेंगे तथा अंर्तराष्ट्रीय व्यापार में सफलता हासिल करेंगे।.एक कुशल राजनयिक के रुप में भी सफलता प्राप्त होगी। आमतौर पर आप बहुत ही शर्मिले एवं मिलनसार स्वभाव वाले होंगे तथा काल्पनिक दूरदृष्टि रखने वाले होंगे। कभी–कभी आप ऐसे होंगे कि कोई दूसरा व्यक्ति आपकी सोच का अनुमान नहीं लगा सकता।

सकारात्मक गुण

आपमें विश्लेषण करने की अनोखी क्षमता विद्यमान होगी। आप बुद्धिमान और धारणशील स्मृति

वाले होंगे। आप लड़ाई-झगड़ों से दूर रहने का प्रयास करेंगे और शांति व एकता आपको पसन्द होगी। आप बहुत नियमबद्ध ढंग से कार्य करेंगे। आपको कई क्षेत्रों का ज्ञान होगा। आप विवेकशील होंगे और व्यर्थ में धन खर्च नहीं करेंगे। आपको कला और संगीत में रूचि होगी।

नकारात्मक गुण

आप भ्रमित और अस्थिर दिमाग वाले हो सकते हैं। आपमें आत्म-विश्वास की कमी हो सकती है। आप यथार्थवादी नहीं हो सकते हैं और अज्ञात सपनों के पीछे भाग सकते हैं।

विशिष्ट गुण

1- आप बुद्धिजीवी और अत्यंत ग्रहणशील ब्यक्ति होंगे।

2- आप कर्तव्यनिष्ठ और अपने कार्यों में बहुत व्यवस्थित होंगे। आप प्रत्येक क्षण के बारे में विचार करेंगे।

3- आप विनम्र, धार्मिक और मधुर वाणी वाले ब्यक्ति होंगे।

खान-पान, स्वास्थ्य और ब्यायाम

आपको एक दिन में भारी मात्रा में तीन बार भोजन करने की बजाय, 5 या 6 बार थोड़ी-थोड़ी मात्रा में भोजन करना चाहिए। बढ़ती उम्र के साथ आपके शरीर का नीचला भाग अधिक वजनी हो सकता है। आपको प्रतिदिन टहलना या तेज कदमों से चलना चाहिए। आप अपने भोजन के साथ सदैव प्रयोग करने वाले हो सकते हैं, इसलिए आप स्थानीय खाद्य व पेय पदार्थों तथा शहर के नए भोजन को चखने में नहीं हिचकिचायेंगे। आपको उत्तम और अच्छी तरह से पका हुआ भोजन पसन्द होगा। आपमें कफ तत्व की अधिकता होगी।

आपके लिए गाजर शक्ति का खजाना है। आप इसे कच्चा या सलाद में खा सकते हैं, इसका जूस पी सकते हैं या पकाकर भी खा सकते हैं। आपकी राशि का स्वामीत्व शरीर के नीचले भाग पर है, इसलिए आपको अपने भोजन में अंडा, सोया, पनीर, साबूत अनाज, दाल, दूध आदि जैसे प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों का भी सेवन करना चाहिए, जिससे आपकी माँसपेशियां मजबूत होंगी। आपको लाल माँस और माँस आदि से भरे खाद्य पदार्थ का सेवन बहुत सीमित मात्रा में करना चाहिए। आपको फ्रिज में जमाए हुए, डिब्बे बन्द अथवा परिरक्षित खाद्य पदार्थों का भी सेवन नहीं करना चाहिए। आपके लिए ताजा भोजन करना लाभदायक होगा।

आपकी उम्र बढ़ने पर आपके शरीर के नीचले भाग का वजन बढ़ सकता है। आपको शारीरिक और मानसिक रूप से स्वच्छंद व स्वतंत्र होना पसन्द होगा। आपको घुड़सवारी, पर्वतारोहण आदि बहुत पसन्द होगा, लेकिन गांव में या देश के भीतर रहने पर इस तरह का कार्य कर पाना संभव नहीं होता है, इसलिए आपको इसके स्थान पर टहलना, दौड़ना, तेज चलना अथवा व्यायाम करना चाहिए। इससे आपका वजन कम होगा तथा आपका शरीर तन्दुरूस्त रहेगा। आपको अपने शारीरिक प्रशिक्षण व्यायाम को प्रतिदिन करना चाहिए। आपको अपने शरीर के नीचले भाग का वजन कम करने के लिए संभवतः विशेष ध्यान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली के द्वितीय भाव का विश्लेषण

धन-सम्पदा, परिवार, मान-सम्मान, भाषण कला और समाज में स्थान और सामाजिक संबंध

आप सुन्दर स्वरूप वाले होंगे। आपको अपने परिवार के साथ रहना पसन्द होगा। आप अपने जीवनसाथी के

साथ सहभागिता में व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं। आप परिवार एवं वित्त संबंधी मामलों में बहुत भाग्यशाली होंगे। आप संतुलित दृष्टिकोण वाले व्यक्ति होंगे तथा वित्तिय निर्णय लेने से पहले उसके अच्छे व बुरे दोनों पहलुओं पर अच्छी प्रकार से विचार करेंगे। आप जो धन प्राप्त करते हैं, उसके बारे में बहुत कठोर हो सकते हैं। आप काले धन से नफरत करेंगे। आप बहुत अधिक परिश्रम एवं सर्तकता के साथ कार्य करेंगे। आप दूसरों के धन एवं समृद्धि देखकर लालच में आ सकते हैं। आप बहुत ही नम्र होने की कोशिश करते हैं तथा चाहते हैं कि ईमानदार व्यक्ति के रुप में जाने जायें। आप जमीन के अंदर छुपे स्रोतों से धन हासिल कर सकते हैं। कृषि एवं खनन में लाभ प्राप्त करने की संभावना अधिक है। हालांकि आप बहुत लालची हो सकते हैं, लेकिन अपना लालच छिपाने की पूरी कोशिश कर सकते हैं। आप मिट्टी, अनाज, पत्थर या रत्नों से संबंधित व्यवसाय में संलग्न हो सकते हैं। आपकी सबसे बड़ी संतान मनोरंजन या सौन्दर्यविषयक कार्यों में संलग्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली के तृतीय भाव का विश्लेषण

साहस और पराक्रम, शौक और रूचियाँ, भाई–बहन और पड़ोसी

आपका व्यवहार असामाजिक हो सकता है। आपका परिवार व्यावसायिक पृष्ठभूमि वाला हो सकता है एवं इस क्षेत्र में उ कार्य कर सकता है। कभी–कभी आपको अपने प्रयासों में असफलता या आघात लग सकता है। यदि आप जल से संबं यात्राएं करते हैं, तो आपको उससे सावधान रहना चाहिए, क्योंकि आपको जल से खतरा हो सकता है। संभवतः आपको यात्राओं के दौरान गंभीर दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा आपको स्वयं के कारण ही चोट लग सकती ह आपके छोटे भाई/बहन दृढ़ निश्चयी व हठी प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा दूसरों की भावनाओं की कदर नहीं कर सकते आपका अपने छोटे सहोदरों के साथ मधुर संबंध नहीं हो सकता है तथा आप उनके साथ मिल–जुल कर नहीं रह सक आपके छोटे सहोदर आक्रामक स्वभाव के हो सकते हैं तथा उनमें से कुछ दुर्घटना व चोट से पीड़ित हो सकते हैं। आप माता–पिता का वैवाहिक संबंध सौहार्दपूर्ण नहीं हो सकता है। यहां तक कि प्रतिकूल परिस्थितियां उत्पन्न होने के कारण उनका परस्पर संबंध विच्छेद भी हो सकता है। आपके बड़े सहोदर सेना में उच्च अधिकारी के पद पर आसीन हो सकते तथा संभवतः भगवान विष्णु के उपासक हो सकते हैं। आपकी पत्नी भवन निर्माणकर्ता के घर से हो सकती हैं। वह धन मामलों में बहुत भाग्यशाली हो सकती हैं तथा पर्याप्त धन–संपदा से संपन्न हो सकती हैं। आपकी संतान भी पर्याप्त संप अर्जित कर सकती है। आप अशिष्ट व असामाजिक व्यक्तियों के साथ मित्रवत व्यवहार कर सकते हैं। आपके शत्रु या प्रतिद्वन्दी सशस्त्र या वर्दीधारी सेना में नियुक्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में बुध स्थित है, आप अपनी बुद्धि का उपयोग तो करते हैं, लेकिन परिणाम मददगार नहीं हो सकता। आप अजीब आदर्शों के शिकार हो सकते हैं तथा विदेशी या बिल्कुल भिन्न संस्कृतियों के साथ जुड़े हो सकते हैं। आप दूसरों को धोखा दे सकत हैं और दूसरों द्वारा धोखा खा भी सकते है।

आपकी कुण्डली के चतुर्थ भाव का विश्लेषण

माता, भूमि–भवन–वाहन, शिक्षा और स्वयं का परिवार और सुःख

आप बहुत गरिमापूर्ण व व्यवहारकुशल व्यक्ति होंगे। दर्शनशास्त्र में आपकी गहन रूचि हो सकती है तथा आपकी रूचि घोड़ों में भी हो सकती है। आपको अपनी स्वंतत्रता अधिक प्रिय हो सकती है। आप अपनी पसन्द के अनुसार निवास स्थान प्राप्त कर सकते हैं। संभवतः आप विदेश में निवास कर सकते हैं। आपका जीवन खुशहाल व सुख–सुविधा से पूर्ण होगा। आपको अचल संपत्ति के रूप में धन की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता दीर्घायु, भाग्यशाली, धार्मिक एवं उत्तम प्रकृत्ति की महिला होंगी तथा परोपकारी कार्यों में संलग्न हो सकती हैं। आपकी पत्नी घर के मामलों में अत्यधिक हस्तक्षेप करने वाली हो सकती हैं। आपके मित्र बहुत बुद्धिमान व निष्ठावान होंगे। आप असंभव को हासिल करने के लिए अपने मन में इच्छा बनाये रखेंगे। आप अपने प्रयासों में क्रूर हो सकते हैं, लेकिन आपके आदर्श जरुरत के समय उदार बना देंगे। आप गुप्त संबंधों में संलिप्त होना चाह सकते हैं, लेकिन आपकी शारीरिक एवं मानसिक सीमायें आपको अपना उद्देश्य प्राप्त करने में रोक सकती है।

आपकी कुण्डली के चौथे भाव में सूर्य स्थित है, आप लालची हो सकते हैं तथा अपनी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उंच–नीच का भेद खत्म करेंगे।

आपकी कुण्डली के चौथे भाव में राहु स्थित है, आप थोड़े घमंडी हो सकते हैं। इसके साथ ही आपको किसी तरह का अभाव हो सकता है। कुछ संभावना है कि आप मौज–मस्ती में संलग्न हो सकते हैं तथा दूसरों पर बुरा प्रभाव डाल सकते हैं।

आपकी कुण्डली के पंचम् भाव का विश्लेषण

सन्तान, विद्वता और बुद्धि, पूर्वपुण्य, लेखन, मानसिक स्थिति और ज्ञान

आप आराम करने वाले हो सकते हैं। आपको दुनिया के असामान्य स्रोतों के प्रति दिलचस्पी अधिक हो सकती है तथा जीवन प्रणाली के बारे में गहरा ज्ञान होगा। आप अपने प्रयासों को क्रियान्वित करने के लिए पूरी ताकत लगा देंगे। आपकी बातें भ्रमित करने वाली हो सकती हैं, जो कि आपको अक्सर गलत साबित कर सकती हैं। आपको जंगलों में भ्रमण करने में, गुफाओं का पता लगाने में तथा पानी के खेलों में अधिक आनन्द आ सकता है तथा आप इनके बारे में अत्यंत जानकार भी हो सकते हैं। आप कुछ हद तक अशांत प्रवृत्ति के व्यक्ति हो सकते हैं। आपको संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कन्या राशि में स्थित है– जो कि बुध द्वारा संचालित है। यह एक साधारण, नकारात्मक और भौतिक राशि है। आप शांत, मनमौजी और कुछ–कुछ ढुलमुल प्रकृति के होंगे, किन्तु आप बहुत ज्यादा महात्वाकांक्षी नहीं हो सकते हैं, आपमें डींग हाकने वाली आदतें बिल्कुल नहीं होंगी और आप मिथ्याभिमान से सदैव घृणा करेंगे। यद्यपि आपकी बौद्धिक क्षमता काफी ऊँची होगी और आप बौद्धिक कार्यो में संलग्न रहेंगे, तो भी आप उत्तरदायित्वपूर्ण एवं किसी के अधीन तक भी रहकर काम करना पसन्द कर सकते हैं। ऐसा आप अपने जीवन में शांति की कीमत व महत्ता को बढाने के लिए करेंगे और अनावश्यक तनावों से सदैव दूर रहना चाहेंगे।

आपको अपने घर से काफी लगाव होगा और आपके प्रिय पारिवारिक जन आपके जीवन को बहुत आनन्दमय व खुशहाल बनाएंगे। कृषि, कृषि संबंधी उत्पाद, दवाएं, औषधि, भोज्य–पदार्थ, बेकरी, मिष्ठान–भंडार, घरेलू उपभोग की वस्तुएं और अन्य घरेलू उपकरण आपको अपेक्षाकृत अधिक आकर्षित करेंगे। आपका अपने सहकर्मियों, वरिष्ठों व अधीनस्थों के साथ समान रूप से सौहार्दपूर्ण संबंध होगा और यदि आपका कोई घरेलू नौकर है, तो उसका व्यवहार भी आपके प्रति बहुत अच्छा होगा एवं आपको बहुत सम्मान देगा। फुर्तीला व चौकन्ना रहना आपका सहज स्वभाव होगा, साथ ही आप कुछ हद तक रहस्यात्मक भी हो सकते हैं– जो कि आपको असाधारण रूप से सहनशील बनाएगा। पारिवारिक भाग्य का अत्यधिक पतन, या जटिल घरेलू विवाद, अथवा अन्य प्रकार का थोपा हुआ अवरोध या प्रारम्भिक जीवन के अभाव आपको कुछ हद तक अन्तर्मुखी या एकान्तप्रिय बना सकते हैं।

आप विश्लेषण–विज्ञान का औपचारिक अध्ययन कर सकते हैं, किन्तु कला–कौशल में भी आपकी उतनी ही रूचि होगी– आपको ना केवल सैद्धान्तिक विषय–सामग्री के अध्ययन की तीव्र इच्छा होगी, बल्कि आप प्रयोगात्मक पक्ष या व्यावहारिक दृष्टिकोण में भी रूचि रखेंगे– जिसको आप अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण समझेंगे। आप अपने खुद के कुछ मौलिक निष्कर्ष निकाल सकते हैं अथवा कुछ तथ्यों की खोज कर सकते हैं या कुछ उपकरणों का अविष्कार कर सकते हैं– जो कि सांसारिक गतिविधियों में उपयोगी साबित होगी। जैसे–जैसे समय व्यतीत होगा, आपकी परिपक्वता व योगदान की क्षमता में वृद्धि होगी, आपमें जोशपूर्ण व हंसमुख प्रकृति का विकास होगा, बातचीत करने में कुशल और रमणीय संकेत करने में माहिर होंगे। संभवतः कुछ अन्तर्देशीय दूरस्थ स्थानों या विदेशों की भी यात्रा कर सकते हैं– शैक्षणिक या सांस्कृतिक उद्देश्य से।

आपकी कुण्डली के पांचवें भाव में बृहस्पति स्थित है। आपको कन्या संतान की प्राप्ति अधिक हो सकती है। आप अधार्मिक कार्य करने के प्रति अधिक इच्छुक हो सकते है, लेकिन आपकी आंतरिक इच्छा उसे दूर तक

ले जायेगी।

आपकी कुण्डली के पांचवें भाव में शुक्र स्थित है। आपके कामुक भावनाओं में बढ़ोतरी हो सकती है। आपके दिलो–दिमाग पर कामुक भावनायें बसी रह सकती हैं, जिससे कि कभी–कभी माता–पिता को भी बदनामी का सामना करना पड़ सकता है। आपकी संलग्नता के कारण आपकी कलात्मक प्रतिभायें दबी रह सकती हैं तथा आप अपने अन्य कार्यों से धन की प्राप्ति कर सकते हैं।

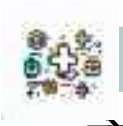

आपकी कुण्डली के षष्ट भाव का विश्लेषण

रोग और कष्ट, शत्रु, दुर्घटना, ननिहाल, नौकर और चोट

आपके द्वारा भूतकाल में किये हुए कर्म का फल प्राप्त होगा। आप विपरीत परिस्थितियों के साथ संघर्ष कर आगे बढ़ने में सक्षम होंगे। कुछ लोग आपके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार कर सकते हैं एवं आपके बारे में गलत अफवाहें फैला सकते हैं। आपको संतान की प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आपकी संतान शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं हो सकती है, उन्हें चोट लग सकती है, रोगादि से पीड़ित रह सकते हैं तथा उनके साथ आपका सौहार्दपूर्ण संबंध नहीं हो सकता है। आपको जलीय जीव–जन्तुओं या जलीय स्थानों से खतरा हो सकता है। आपको अपने शिक्षा के क्षेत्र में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है एवं अधिक शिक्षित नहीं हो सकते हैं। आप मनोदैहिक रोग से पीड़ित हो सकते हैं। आपको प्रेम संबंधों में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है तथा संभवतः आपका अपने जीवनसाथी से संबंध विच्छेद हो सकता है। आप पेट या पित्ताशय से संबंधित रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के सप्तम् भाव का विश्लेषण

जीवनसाथी, साझेदारी, वैवाहिक सुख, प्रतिष्ठा और जीवन के प्रति उत्साह

आप बहुत दयालु होंगे एवं अपनी दयालुता के लिए आप विख्यात होंगे, जबकि आपकी पत्नी धार्मिक व उतनी विनम्र नहीं हो सकती हैं। आपकी पत्नी अपने व्यावसायिक जीवन में कुशल होंगी एवं उत्तम कार्य करेंगी। आपकी पत्नी आपसे संवेदना, सहानुभूति व समर्थन की उम्मीद कर सकती हैं। आपको अपने घरेलू मामलों में अनुकूल फलों की प्राप्ति होगी। आप उत्तम उद्देश्य के लिए त्याग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको विपरीत लिंगी व्यक्तियों से निराशा प्राप्त हो सकती है। जिसकी वजह से आप आध्यामिकता की तरफ मुड़ सकते हैं। आप दुःख, हताशा, फिजूलखर्ची एवं दांपत्य सुख में कमी के कारण मानवीय रिश्तों में अस्थायी स्वभाव का अहसास कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के अष्टम् भाव का विश्लेषण

आयु, असाध्य रोग, मानसिक कष्ट, अप्रत्यासित लाभ–हानि, अड़चनें और छुपी हुई प्रतिभा

आपके बड़े सहोदर वर्दीधारी सेवा में संलग्न हो सकते हैं तथा उसमें उत्तम कार्य कर सकते हैं। आपके छोटे सहोदर को इस ग्रह स्थिति के कारण चोट लग सकती है। आप को विष अथवा ज्वर से आपको खतरा हो सकता है। आपकी संतान पर्याप्त धनोपार्जन करने में सफल हो सकती है।

आपकी कुण्डली के आठवें भाव में मंगल स्थित है, आपकी योजनायें अचानक से बेकार हो सकती हैं। जीवन से संबंधित आपकी कुछ उम्मीदें इतनी तेजी से नष्ट हो सकती हैं कि आपको कुछ करने या सोचने–समझने का भी मौका प्राप्त नहीं हो सकता है। आपका पारिवारिक जीवन खासकर अपने भाई–बहनों से संबंध पूरी तरह से खराब हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के नवम् भाव का विश्लेषण

पिता, गुरू, धार्मिक रूचि, तीर्थ यात्रा, दानशीलता और भाग्य

आपके परिवार का विदेश से संबंध हो सकता है। आप धार्मिक व दानशील प्रवृत्ति के व्यक्ति हो सकते हैं तथा दान–धर्म के लिए नियमित रूप से अन्न व भोजन दान कर सकते हैं। आपके पास जमा राशि उत्तम मात्रा में हो सकती है। धन संबधी मामलों में आप भाग्यशाली होंगे तथा आप उच्च शिक्षा से संबंधित मामलों पर अच्छी प्रकार से बोलने में सक्षम होंगे। आप धार्मिक या दार्शनिक माध्यमों से धनोपार्जन कर सकते हैं तथा आप स्वयं एक गुरु बन सकते हैं। आप अपने पिता को अपने धनी होने का मान करवा सकते हैं।

आपकी कुण्डली के दशम् भाव का विश्लेषण

व्यवसाय, कर्म, आजिविका के साधन, व्यापार और धार्मिक कार्य

आपको अपने जीवन के उद्देश्य स्पष्ट होंगे तथा आप अपनी जिम्मेदारियों से अवगत होंगे। आमतौर पर बौद्धिक रुप से आप बहुत उत्कृष्ट होंगे। आप अस्थायी एवं आध्यात्मिक दुनिया के बीच में फंसे हो सकते हैं। आप उच्च स्तर के नियम का पालन करके एवं अपनी चेतना को निचले स्तर पर छोड़कर समता प्राप्त करने में सफल होंगे। आपके कार्य का संबंध बौद्धिक क्षेत्र से हो सकता है। आप परिवर्तनशील, लचीले, व्यावहारिक एवं मिलनसार प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्य के प्रति आपका दृष्टिकोण बहुमुखी हो सकता है। हालांकि आप इसके प्रति गंभीर नहीं हो सकते हैं। आप मार्केटिंग संचालक, संपादक, व्यापारी, कमीशन एजेन्ट या प्रकाशक के रूप में उत्तम कार्य कर सकते हैं। संभवतः आपके कार्य का संबंध प्रकाशन, लेखन, पत्रकारिता, छपाई, विज्ञापन आदि जैसे क्षेत्रों से भी हो सकता है। आप शांत भाव से अपना कार्य कर सकते हैं एवं कई बार आपके योगदान को पहचान प्राप्त नहीं हो सकती है। आप शांत, निर्मल, मधुर व सामंजस्यपूर्ण वातावरण में कार्य करने का प्रयास करेंगे।

आपकी कुण्डली के दसवें भाव में शनि स्थित है। आपकी संतान विदेशों में सफलता प्राप्त करेगी। आप स्वयं अंर्तराष्ट्रीय कानून के विशेषज्ञ के रुप में जाने जायेंगे। मनोवैज्ञानिक रुप से आप बहुत व्यथित महसूस कर सकते हैं। शायद ही कभी आपको अपनी विशेष विशेषज्ञता व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हों। कभी–कभी आपको अपने पेशेवर जीवन में गंभीर झटके लग सकते हैं।

आपकी कुण्डली के दसवें भाव में केतु स्थित है। आपके लिए मानसिक शांति एवं व्यक्तिगत नैतिकता से संबंधित चुनौतीपूर्ण स्थिति उत्पन्न हो सकती है। दूसरे लोग आपके साथ मित्रता करना नहीं चाह सकते हैं।

आपकी कुण्डली के एकादश भाव का विश्लेषण

लाभ, भौतिक सुख की प्राप्ति, लोभ, पुरस्कार और दण्ड और स्वास्थ्य लाभ

आप सभ्य एवं विकसित लोगों के संपर्क में आयेंगे। आपका दिमाग विकसित होगा तथा पूरी दुनिया के लोगों पर होने वाली क्रूरता के प्रति संवेदनशील होंगे। आप अपने जीवन में महत्वाकांक्षी रुख अपनायेंगे, लेकिन बाद में आप अपना पेशा बदल सकते हैं तथा खेती या दूसरे व्यापारिक गतिविधियों से धनोपार्जन कर सकते हैं। आप धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करेंगे, जीवन की समस्याओं पर चिंतन करेंगे तथा चारों तरफ से प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आप उत्कृष्ट गुणवत्ता वाली सेवाओं, कृषि, बर्तनों व उपयोगी वस्तुओं के माध्यम से धनार्जन कर सकते हैं। चूंकि कर्क राशि चावल, दूध, पानी, स्त्री, दर्पण, सफेद फूल, ठण्डी वस्तुएं, जलीय जीव–जन्तु, जलस्थल आदि का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए आप इन वस्तुओं से संबंधित कार्य में संलग्न हो सकते हैं तथा उत्तम धनोपार्जन कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के द्वादश भाव का विश्लेषण

ब्यय, अलगाव, हानि, सुख, निद्रा, विदेश यात्रा और मानसिक संतुलन

आपकी प्रतिष्ठा पर आंच आ सकती है। आमलोग आप पर भरोसा नहीं कर सकते तथा आपकी निष्ठा पर सवाल खड़ा हो सकता है। आपके अंदर मौज–मस्ती की भावना अनियंत्रित हो सकती है, जिसकी वजह से आपके करीबी मित्र भी आपको छोड़ सकते है। आप परोपकारी प्रवृत्ति के होंगे एवं अपनी इस प्रवृत्ति के कारण अत्यधिक व्यय कर सकते हैं। आपको संतान से पर्याप्त सुख प्राप्त नहीं हो सकता है तथा वे संभवतः आपके लिए परेशानी का कारण बन सकते हैं अथवा वे आपको छोड़कर कहीं दूर निवास करने जा सकते हैं। आपमें अकेले रहने की अनोखी योग्यता विद्यमान हो सकती है तथा आप इसका प्रयोग किसी सार्थक उद्देश्य के लिए कर सकते हैं। जुआ व सट्टा आदि आपके लिए लाभपद्र नहीं हो सकता है। सरकारी कार्यवाही के कारण आपका धन समाप्त हो सकता है।

शुभ और अशुभ ग्रह

1– दूसरे व नौवें भाव का स्वामी शुक्र, शुभ है।

2– लग्नेश बुध, सर्वाधिक शुभ है।

3– सातवें भाव का स्वामी बृहस्पति, मारकेश है।

4– चंद्रमा अशुभ है।

5– तीसरे व आठवें भाव का स्वामी मंगल, सर्वाधिक अशुभ है।

6– सूर्य और शनि तटस्थ हैं।

सर्व ग्रह दोष और उपाय

वैदिक ज्योतिष में, मुख्य रूप से मंगल, शनि, राहु और केतु के अशुभ प्रभाव चुनौतियाँ ला सकते हैं लेकिन विकास और परिवर्तन के अवसर भी ला सकते हैं। ये ग्रह, हालांकि कठिन हैं, हमें हमारे सुविधा क्षेत्र से बाहर निकालते हैं और आत्म-सुधार के लिए प्रेरित करते हैं। रत्न, मंत्र, अनुष्ठान, उपवास और दान सहित वैदिक उपचारों का उपयोग इन हानिकारक प्रभावों को कम करने और हमारी ऊर्जा को ब्रह्मांडीय गति के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, शनि के प्रभाव को कम करने के लिए नीला नीलम पहनना, विशिष्ट मंत्रों का जाप करना या जरूरतमंदों को भोजन देना शामिल हो सकता है। ये उपाय तत्काल समाधान नहीं हैं, लेकिन इस सदियों पुराने ज्ञान में लगातार अभ्यास और विश्वास हमें जीवन की चुनौतियों से बेहतर ढंग से निपटने में सहायता कर सकता है। इसलिए, अशुभ ग्रहों का प्रभाव बाधाएं नहीं हैं, बल्कि आत्मनिरीक्षण और आध्यात्मिक विकास के संकेत हैं, जो वैदिक उपचारों द्वारा सुगम होते हैं।

सूर्य से संबंधित दोष और उनके उपाय

अमावस्या तिथि का जन्म

यदि आपका जन्म अमावस्या के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म होने के कारण आपके पारिवारिक और मानसिक सुख में कमी, संतान सुख में बाधा और यथोचित मान-सम्मान में कमी आ सकती है। आपको सफलता के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ सकता है और योग्यता होते हुए भी आपको मान्यता नहीं मिल सकती है।

आपका जन्म अमावस्या के दिन नहीं हुआ है।

शांति के उपाय -

अग्निकोण में एक कलश स्थापित करके उसमें जल भरें तथा नीम, आम, गूलर, बड़, पीपल आदि के पत्तों से युक्त टहनियों से सजायें। इस कलश को लाल सफेद कपड़े के जोड़े से लपेटें। मंत्रों से सभी देवों का आह्वान करें। तत्पश्चात, कलश पर आपोहिष्ठा मंत्र से जल

छिड़क कर अमावस्या की अधिष्ठात्री की पूजा करें। रूद्रसूक्त से रूद्राभिषेक करके घी से छायापात्र का दान करें, तील, चावल, घी से हवन करें और 108 आहुतियां दें। जरूरतमंदों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार सोना, चांदी, तांबा और अन्न का दान करें।

कार्तिक मास का जन्म –

सूर्य का अपनी नीच राशि तुला में रहने के दौरान जन्म लेने वाले जातक पर कार्तिक जन्म का दोष लागू होता है। अपने सबसे नीच बिन्दु के आस-पास कार्तिक जन्म दोष का प्रभाव सबसे अधिक होता है।

आपका जन्म लग्न कन्या है। शास्त्रों के अनुसार, कार्तिक मास में जन्म लेने के कारण, आपका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं हो सकता है। परिवार में बिखराव के कारण आपके किए हुए व्यवसाय में अस्थिरता आ सकती है। आपका अपने बड़े पुत्र से वियोग भी हो सकता है।

आपका जन्म कार्तिक मास में नहीं हुआ है।

शांति के उपाय –

कार्तिक जन्म शांति की पूजा किसी भी संक्रान्ति के दिन, सूर्य के तुला राशि में होने पर, रविवार व हस्त नक्षत्र का योग होने पर, जातक के जन्म नक्षत्र में, ग्रहण के दिन अथवा क्रान्तिसाम्य काल में किया जा सकता है।

ईशान कोण में पूजा वेदी का निर्माण करके गेंहू के ढेर पर एक कलश की स्थाना करें। पूजा बेदी के चारों तरफ प्रदक्षिणा क्रम में चार और कलशों की स्थापना करें। इन्हें भी गेहूँ के ढेर पर रखें। पूरब वाले कलश पर ब्रह्मा जी, दक्षिण वाले कलश पर विष्णु, पश्चिम वाले कलश पर रूद्र और उत्तर वाले कलश पर सूर्य देव की पूजा करें एवं उनके मंत्रों का हजार या दस हजार बार जप करें। त्र्यम्बकम मंत्र का भी इतना ही जप करें। जप संख्या का दशांश हवन, छाया पात्र दान और सूर्य को अर्घ्य दें। इसके पश्चात यथासंभव अन्न, वस्त्र व फलों का दान करें।

संक्रांति के दिन का जन्म –

जिस दिन सूर्य अपनी अगली राशि में प्रवेश करता है, वह दिन संक्राति दिन कहलाता है। यदि आपका जन्म संक्रांति के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म लेने के कारण आपके वंश वृद्धि, आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य पर सूर्य का अशुभ प्रभाव पड़ सकता है।

आपका जन्म संक्रांति के दिन नहीं हुआ है।

शांति के उपाय –

इस दोष के निवारण के लिए पूजा स्थान में गेहूँ, चावल और तिल से एक सीध में 4 : 2 : 1 के अनुपात में ढेर बनायें और उपर पर 3 कलश स्थापित करें। इन कलशों में पवित्र स्थान का जल, घी, दूध, दही, शहद और चुटकी भर रेत डालें। बीच वाले कलश पर संक्राति देवी, दायें कलश पर चंद्रमा और बायें कलश पर सूर्य की पूजा करें। सभी मंत्रों के पहले व्याहृतियों का उच्चारण अवश्य करें।

सार्पशीर्ष में जन्म –

यदि आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू हो रहा है, तो इस दोष के साथ जन्म लेने के कारण आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है तथा आप सब प्रकार के सुखों से हीन हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष के कुफल को कम करने के लिए शाम के समय शिवालय में घी का दीया जलायें, जब तक कि शांति ना हो जाये। जब सूर्य मूल या श्लेषा नक्षत्र में हो तो देव पूजन के पश्चात गणपति के वेदमंत्र, पुरूषसूक्त, सूर्यसूक्त और रूद्रसूक्त का पाठ करने के पश्चात रूद्राभिषेक करें। फिर विष्णु के मंत्र से 108 आहुतियां दें।

क्रांतिसाम्य या महापात में जन्म –

यदि आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में हुआ है, तो आपके स्वास्थ्य और शारीरिक सुखों में कमी आ सकती है। आप असहाय हो सकते हैं।

आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में नहीं हुआ है।

शांति के उपाय –

इस दोष के कुफल को कम करने के लिए शाम के समय शिवालय में घी का दीया जलायें, जब तक कि शांति ना हो जाये। जब सूर्य मूल या श्लेषा नक्षत्र में हो तो देव पूजन के पश्चात गणपति के वेदमंत्र, पुरूषसूक्त, सूर्यसूक्त और रूद्रसूक्त का पाठ करने के पश्चात रूद्राभिषेक करें। फिर विष्णु के मंत्र से 108 आहुतियां दें।

सपात सूर्य दोष –

यदि आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु के साथ स्थित है, तो आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रूद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से दूर रहें।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचें।

चन्द्रमा से संबंधित दोष और उनके उपाय

समान नक्षत्र दोष

यदि आपका जन्म आपके अपने भाई-बहनों अथवा अपने माता-पिता के नक्षत्र में हुआ है, तो एक नक्षत्र जन्मदोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार की सुख-शांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

शांति के उपाय –

अपने घर में किसी साफ-सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात सारे नक्षत्रों की पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से 108 आहुतियां देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लग्न हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण ना हो, तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

लग्नस्थ चन्द्र दोष –

यदि आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है, तो आपकी विचारधारा इस तरह से दृढ़ हो सकती है कि आप समयानुसार अपने को बदल नहीं सकते हैं, जिसकी वजह से आप हठी और काफी हद तक अव्यवहारिक दृष्टिकोण वाले बन सकते हैं। आपकी मानसिक स्थिति के कारण आपके कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

आपकी कुण्डली में लग्नस्थ चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको चंद्रमा के सरल उपाय करने के साथ-साथ रुद्रसूक्त का भी पाठ करना चाहिए।

क्षीण चंन्द्र दोष –

यदि आपका जन्म कृष्णपष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी के बीच में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू होता है। आप तुनकमिजाज, काम में लापरवाही बरतने वाले एवं बिना किसी लक्ष्य के काम करने वाले हो सकते हैं। कभी-कभी अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली में क्षीण चन्द्र दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ-साथ भगवान शंकर की पूजा करें। चंद्रमा जितना अधिक क्षीण हो, पूजा की मात्रा उतनी अधिक होनी चाहिए।

केमद्रुम योग दोष –

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा के आगे एवं पीछे के भावों में कोई ग्रह नहीं है, तो आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू होता है। आपको जीवन पर्यन्त धन की कमी लगी रह सकती है, जिसके कारण पारिवारिक सुख और मानसिक शांति में कमी हो सकती है। यदि कुण्डली में चंद्रमा के साथ कोई ग्रह स्थित है या किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है या चंद्रमा या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह स्थित है, तो केमद्रुम योग का प्रभाव कम हो जाता है।

आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ-साथ ऋषि वशिष्ठ के द्वारा लिखे हुए भगवान शंकर के दारिद्र्यदहन स्तोत्र का पाठ करें।

सपात (चंद्रमा राहु या केतु के साथ) चन्द्र दोष –

यदि आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा राहु या केतु के साथ स्थिति है, तो आपकी कुण्डली में सपात चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात चन्द्र दोष लागू हो नहीं रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रूद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

नींच चंन्द्र दोष –

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ है। शास्त्रों के अनुसार, आपकी कुण्डली में नीच चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस दोष के कारण आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में नीच चंन्द्र दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

रोजाना स्नान के पश्चात शिव संकल्प सूक्त का पाठ करें (कम से कम पहला मंत्र अवश्य जपें)। शिव मंत्र का जप करें एवं श्रीसूक्त का पाठ करें।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष –

आपका जन्म कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन हुआ है। आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में बाधा आ सकती है, परिवार में मान–सम्मान की कमी हो सकती है, धन की कमी हो सकती है तथा जीवनसाथी पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आपके मन में आत्मघात की प्रवृति ज्यादा हो सकती है।

आपकी कुण्डली में कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

चारों दिशाओं में चार कलश की स्थापना करें और पाँचवां कलश अग्निकोण में स्थापित करें (शिवजी के लिए)। सामान्य पूजा करने के पश्चात अग्निकोण वाले कलश पर त्र्यम्बकम मंत्र का जप करते हुए शिव जी की पूजा करें। पूर्व की ओर से शुरू करते हुए पूर्वी कलश पर 'आनो भद्राः', दक्षिणी कलश पर 'भद्रा अग्नेः', पश्चिमी कलश पर 'पुरुषसूक्त' और उत्तरी कलश पर 'कदुद्राय प्रचेतसे' मंत्र का जप करें। शिव जी का अभिषेक करने के पश्चात नौ ग्रहों की पूजा करें। सामर्थ्यानुसार अन्न, धन का दान करें।

गण्डमूल दोष –

यदि आपका जन्म नक्षत्र रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल, श्लेषा या मघा है, तो आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू होता है।

आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

भगवार शंकर की पूजा करें। गण्डमूल शांति के लिए जन्म के बारहवें दिन, सताइसवें दिन या एक साल के भीतर कभी भी जन्म नक्षत्र में गण्डमूल की शांति करवा लेनी चाहिए।

नक्षत्र गण्डांत दोष –

यदि आपका जन्म चंद्रमा के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरुआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत

दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

नक्षत्र गण्डान्त दोष के निवारण के लिए नक्षत्र के देवता और चंद्रमा की पूजा करनी चाहिए।

लग्न गण्डांत दोष –

यदि आपका जन्म लग्न के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में मूल गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न गण्डांत दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

लग्न गण्डान्त दोष के निवारण के लिए लग्नेश ग्रह की पूजा करनी चाहिए।

आपका लग्नेश बुध और उसका मंत्र निम्न है–

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वामिष्टापूर्तें सँ सृजेथामयं च।
अस्मिन् सदस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत्।।

तिथि गण्डांत दोष –

यदि आपका जन्म पूर्णा (5, 10, 15) तिथि के अंतिम 48 मिनट में या नन्दा (1, 6, 11) तिथि के शुरूआती 48 मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

तिथि गण्डान्त दोष के निवारण के लिए तिथि के देवता की पूजा करनी चाहिए।

तिथि देवता का मंत्र–

यमाय त्वागिंरस्यते पितृमते स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मपित्रे।

चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा–धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ऊँ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस–मदिरा का सेवन ना करें।

1– सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल–मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2– माता–पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3– मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग–द्वेष से बचना चाहिए।
4– अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

मंगल से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में मंगल मेष राशि में बैठा हुआ है। आप स्वभाव से उग्र और तानाशाह हो सकते हैं। विपरीत लिंग वाले आपके प्रति खास आकर्षण महसूस कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपका उनसे किसी कारणवश अलगाव भी हो सकता है।

यदि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, तो आप मंगल कष्ट निवारक मंत्र का प्रतिदिन 8 बार जप करें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी हो, तो आप रामचरितमानस के

सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

यदि आपके घर में अशांति हो तो ऊँ हां हां सः खं खः। मंत्र का 108 बार जाप करें। यदि यह पाठ घर के मुखिया या उनकी पत्नी के द्वारा किया जाता है, तो लाभ मिलने की संभावना अधिक हो सकती है।

यदि आपमें उत्साह की कमी या ज्यादा क्रोध अथवा अपने विचारों को व्यक्त ना कर पाने की कमी हो, तो आपको प्रतिदिन 28 बार मंगल गायत्री का जप करना चाहिए।

यदि मंगल दोष के कारण आपको बार-बार या साधारण चोट इत्यादि लगती है, तो आपको मंगल कवच का पाठ करना चाहिए।

यदि मंगल के कुप्रभाव आपकी संतान पर आ रहे हों तथा संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो अथवा आपकी बात ना मानते हों, तो आपको मंगल कष्ट निवारक मंत्र का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए।

यदि आप धन हानि, कर्ज में बढ़ोत्तरी आदि से परेशान हैं, तो आपको नियमित रूप से एक साल तक मंगलवार का व्रत करना चाहिए, जिससे मंगल के राशि जनित या भाव जनित दोष दूर हो सकते हैं।

मंगल ग्रह के साधारण उपाय

आपको रूद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रूद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यों अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रूद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

बुध से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में बुध वृश्चिक राशि में स्थित है। आप चालाक एवं झगड़ालू स्वभाव वाले हो सकते हैं। आपके मित्र स्वार्थी हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपको आर्थिक हानि हो सकती है।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे, छठे या बारहवें भाव में स्थित है। आपमें संकोच और निराशा की भावना कभी-कभी बहुत ही ज्यादा हो सकती है।

यदि आपकी वाणी में दोष है, जैसे हकलाना, तुतलाना इत्यादि अथवा बुद्धि कमजोर है या अपने जुबान पर नियंत्रण नहीं है, तो आप कार्तिकेय मंत्र का जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर दस बार करें। यह जप पुष्य नक्षत्र से शुरू करके अगले 27 दिनों तक करें।

यदि आप अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ है या जनसमुदाय इत्यादि के सामने आप नहीं बोल पा रहे हैं, तो आप बुध कवच का नियमित पाठ करें।

यदि आपको तनाव से नींद नहीं आती है या नींद आने पर बुरे सपने दिखाई देते हैं, तो आपको बुध गायत्री मंत्र का दिन में 3 बार जप करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि आपकी त्वचा में कोई विकार है, जैसे छोटे फुंसियों-फोड़े इत्यादि, तो इन विकारों को दूर करने के लिए शीतला माता के मंत्र का 10 हजार बार जप करें। जप समाप्त होने पर इसी मंत्र से 1000 आहूति दें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आपको व्यापार में सफलता नहीं मिल पाती है, तो बुध गायत्री का 10 हजार जप करें। जप के पश्चात अपने सामर्थ्य के अनुसार मूंग, घी, चाँदी या हाथी दाँत से बनी वस्तु का दान करें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आप किसी असाध्य रोग से पीड़ित है, तो आपको विष्णु सहस्त्र नाम का जप करना चाहिए।

बुध ग्रह के साधारण उपाय

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्त्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

1- बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।
2- अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
3- किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

गुरू से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति मकर राशि में स्थित है। आपमें धैर्य एवं बुद्धि की कमी हो सकती है। पर्याप्त मेहनत के बावजूद आपको उचित सफलता नहीं मिल सकती है। भाई-बन्धुओं से प्रेम एवं सहयोग की कमी हो सकती है। विवाहित जीवन में कटुता आ सकती है। आपमें अपना भला बुरा समझने की समझ कम हो सकती है।

यदि बृहस्पति की कमजोरी के कारण घर में पैसे की बरकत ना हो, तो गुरु गायत्री मंत्र का दिन में 10 बार पाठ करें।

व्यापार में वृद्धि के लिए आठ गुरु मंत्रों से गंगा जल को अभिमंत्रित करके अपने काम-धंधे की जगह पर छिड़कें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद हैं, तो गुरु गायत्री मंत्र का रोज सुबह 10 बार पाठ करें।

यदि आपके बीच कलह की स्थिति है, तो शिव एवं पार्वती की पूजा करें एवं अर्धनारीनटेश्वर स्त्रोत का पाठ सुबह-शाम करें।

यदि लड़की के विवाह में रूकावट आ रही हो या रिश्ता बनते-बनते रह जा रहा हो, तो तीन सौ पार्थिव लिंगों पर पूजा करने से इस समस्या का निवारण हो सकता है। यदि लड़के के विवाह में ऐसी स्थिति बन रही हो, तो दुर्गा सप्तशती का 17 बार पाठ करें।

गुरू ग्रह के साधारण उपाय

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

1- शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु-संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
2- कोर्ट-कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

शुक्र से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। विपरीत लिंग के अपने से बड़े व्यक्ति के साथ आपके नजदीकी संबंध हो सकते हैं, जिससे आपको हानि भी हो सकती है। आप हृदय रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

संतान सुख के लिए कन्याओं को किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुंचाना चाहिए। नवरात्र के दौरान कन्याओं का पूजन कर अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन एवं वस्त्र उपहार देना चाहिए। साल में किसी अवसर पर किसी व्यक्ति को शिव-पार्वती या विष्णु-लक्ष्मी का फोटो भेंट करना चाहिए या किसी ब्राह्मण को बिछाने योग्य चादर, तकिया या वस्त्रों का जोड़ा दान करना चाहिए। सौन्दर्य लहरी स्त्रोत या देवी सूक्त और श्रीकवच का रोजाना पाठ भी काफी लाभदायक होगा।

यदि शुक्र के दोष के कारण काम-वासना अनियंत्रित हो या अप्राकृतिक वासना के प्रति रूझान हो, तो आपको अथर्ववेद में कहे गये शिव संकल्प का रोजाना सोते समय एक बार पाठ करना चाहिए। आप शुक्र गायत्री का भी रोजाना 10 बार पाठ कर सकते हैं।

यदि घर में दरिद्रता हो या लक्ष्मी का वास ना हो, तो सुबह में अर्गला एवं कीलक स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण शरीर में आलस्य हो या अधिक सोने के कारण कार्य अधूरे रह जा रहे हो, तो सुबह एवं रात में सोते समय रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण विवाह में बाधा उत्पन्न होती है, या संबंध तय नहीं हो पा रहा है, तो शुक्र स्तवराज का पाठ करना चाहिए।

शुक्र के दोष के कारण यदि बार-बार चोट लगती है, या शरीर में विकार उत्पन्न होता है, तो शुक्र कवच का पाठ करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के साधारण उपाय

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

1- अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।
2- कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

शनि से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी जन्मकुण्डली में शनि मिथुन राशि में स्थित है। आप प्रायः कर्जदारी की वजह से परेशान

होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आपके मतभेद हो सकते हैं। आपके सिर या मस्तिष्क में किसी तरह के विकार होने की संभावना है। अपने ससुराल वालों के कारण कष्ट प्राप्त हो सकता है।

शनि के राशिगत अथवा भावगत दोष के निवारण के लिए शनि गायत्री मंत्र का जप रोजाना आसन पर खड़े होकर एक निश्चित संख्या में करें।

यदि शनि की दशा अथवा गोचर के दौरान किसी तरह के रोग या दुर्घटना की वजह से जीवन पर संकट आए, तो मार्कण्डेय जी द्वारा रचित भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि आपकी संतान आपके बताये रास्ते पर ना चलकर आपकी अवहेलना करती है, तो आपको शनि गायत्री का नियमित 28 या 108 बार जप करना चाहिए। शाम के समय हनुमान जी का ध्यान करते हुए हनुमान जी के भुजंग स्तोत्र या शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से आपको लाभ होगा।

शनि के साढ़ेसाती, गोचर काल अथवा शनि की दशा या अन्तर्दशा के अनुसार, यदि कुफल प्राप्त हो रहा हो, तो शनि स्तवराज मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि शनि की दशा या गोचर के दौरान आपको बार-बार चोट लगती हो अथवा कोई रोग आपको परेशान कर रहा हो, तो आपको शनैश्चराष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

शनि ग्रह के साधारण उपाय

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कड़ुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ-सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

स्वास्थ्य सुख

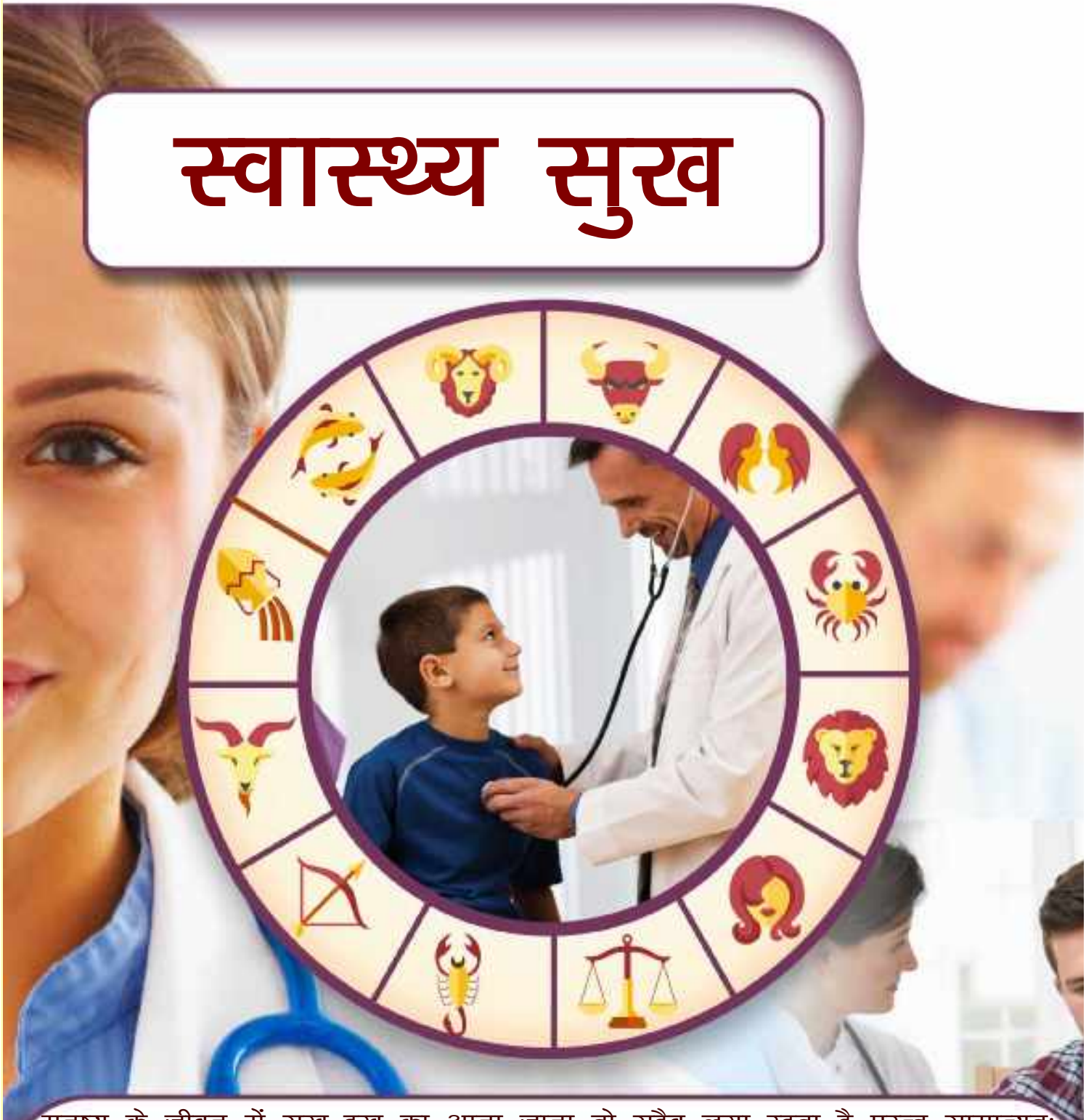

मनुष्य के जीवन में सुख–दुख का आना जाना तो सदैव लगा रहता है परन्तु सामान्यतः देखा जाए तो उसे सबसे अधिक कष्ट उसके शारीरिक अस्वस्थता के समय ही होता है। यदि शारीरिक रूप से व्यक्ति अस्वस्थ है तो उसके आस–पास का वातावरण कितना ही सुखमय क्यों न हो उससे उसको किसी प्रकार के सुख की अनुभूति नहीं होती। कहा जाता है कि जान है तो जहान है। वास्तविकता भी यही है कि व्यक्ति यदि स्वस्थ्य रहेगा तभी उसका जीवन जीवंत माना जाएगा, तभी उसे जीवन के अन्य सुखों का भरपूर आनन्द प्राप्त होगा अन्यथा जीवन के किसी भी प्रकार के सुख से वह वंचित रह जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना और उसके लिए सभी प्रकार के चिकित्सीय व आवश्यक होने पर ज्योतिषिय उपाय आदि भी करना चाहिए। चिकित्सा के बिना स्वास्थ्य का ठीक हो पाना संभव नहीं हो सकता, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सीय उपचार का व्यक्ति के रोग पर कोई असर ही नहीं होता ऐसी स्थिति में यदि ग्रहों की दशा को देखकर उपचार के साथ–साथ ज्योतिषिय उपाय भी किया जाय तो संभवतः रोग से निजात शीघ्रता से पाया जा सके।

स्वास्थ्य से संबंधित योग और उपाय

स्वास्थ्य सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव का स्वामी अपनी राशि में उपस्थित है। आपकी आयु लम्बी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि उच्च राशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में उपस्थित है। आप दीर्घायु होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी बली/शक्तिशाली होकर तीसरे, ग्यारहवें अथवा केन्द्र में स्थित है। आपकी आयु लम्बी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी सूर्य का मित्र है। आप दीर्घायु होंगे।

स्वास्थ्य सुख से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी एवं आठवें भाव का स्वामी एक दूसरे के सम ग्रह हैं। आप दीर्घ/मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा पहले भाव के स्वामी एवं चंद्र लग्न से आठवें भाव का स्वामी एक दूसरे के सम हैं। आप दीर्घ/मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का नवांशेश एवं लग्न से अष्टम भाव का नवांशेश एक दूसरे के सम हैं। आप दीर्घ/मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र नवांशेश एवं चंद्र लग्न से अष्टम भाव के नवांशेश परस्पर मित्र हैं। आप दीर्घ/मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवे, आठवें या ग्यारहवें भाव में एक से ज्यादा अशुभ ग्रह उपस्थित हैं। आप दीर्घ/मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में छठे भाव का स्वामी पहले, आठवें या दसवें भाव में पाप युक्त अथवा पाप दृष्ट है। आपको किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित होने की संभावना अधिक है। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – भाग–दौड़ वाले काम न करें।

स्वास्थ्य सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) यदि आये दिन परिवार में कोई बीमार रहता हो, दवाई न लगती हो, या कोई असाध्य बीमारी हो, तो ऐसी दशा में शिवमंदिर में सोमवार के दिन काली राई का दान करना चाहिए। शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से यह टोटका शुरू करें। साथ ही रुद्राक्ष की माला से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें। चमत्कारिक लाभ स्वयं महसूस करेंगे।

(2) पीपल के वृक्ष को प्रातः 12 बजे के पहले, जल में थोड़ा दूध मिला कर सींचें और शाम को तेल का दीपक और अगरबत्ती जलाएं। ऐसा किसी भी वार से शुरू करके 7 दिन तक करें। बीमार व्यक्ति को आराम मिलना प्रारम्भ हो

जायेगा।

शिक्षा, विद्या और विद्वता

प्राचीन समय में शिक्षा का स्वरूप वर्तमान शिक्षा से पूर्णतया भिन्न था। तब शिक्षा को अर्थोपार्जन का माध्यम न मानकर ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता था। इसलिए उस समय की शिक्षा में इस प्रकार की प्रतियोगिता नहीं थी जो कि वर्तमान समय की शिक्षा में दृष्टिगोचर होती है। इस वैज्ञानिक युग में जिस गति से विकास हुआ उसी गति से अर्थोपार्जन के लिए अनेकोंनेक स्रोत खुलते चले गए एवं इस विकास की गति को अत्यधिक गति प्रदान के लिए शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया। आज स्थिति यह है कि यदि कोई अशिक्षित रह जाता है तो उसे निश्चित तौर पर इस विकसित युग में अविकसित होकर ही जीना पड़ेगा। शिक्षा प्राप्त करना भी अब उतना आसान नहीं है। इस क्षेत्र में प्रतियोगिता ही एक मात्र बाधा नहीं है बल्कि अन्य अनेक बाधाएं भी हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली तो ऐसी हो गई है कि उससे धनोपार्जन का माध्यम बनाने के लिए पहले उसमें धन का निवेश करना भी आवश्यक है। ऐसी बाधाएं तो सामाजिक तौर पर सबको पार करनी पड़ती हैं, परन्तु जीवन में व्यक्तिगत रूप से भी कई बार शिक्षा के मार्ग में बाधाएं आने लगती हैं। इन बाधाओं के कारण व्यक्ति का भविष्य बाधित होता है, उसका विकास बाधित होता है या संक्षिप्त में कहा जाए तो उसके जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह या उसकी संतान उच्च से उच्च शिक्षा ग्रहण कर सके, किन्तु इन बाधाओं के कारण सबके लिए ऐसा संभव नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से व्यक्ति के शिक्षा में आने वाली बाधाओं में भी ग्रहों का प्रभाव समाहित होता है। ग्रहों के प्रतिकूल होने की दशा में शिक्षा बाधित होती है। इसलिए इन बाधाओं से सचेत रहने के लिए इसके बारे में जानना भी आवश्यक है।

शिक्षा, विद्या और विद्वता से संबंधित योग और उपाय

शिक्षा, विद्या और विद्वता से संबंधित शुभ योग

जन्मकुण्डली में गुरु केन्द्र अथवा त्रिकोण में उपस्थित है। आप बुद्धिमान होंगे एवं आपको उचित शिक्षा भी मिलेगी।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु पांचवें भाव में विद्यमान है। आप तीव्र स्मृति वाले होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु–शनि–राहु अथवा गुरु–शनि–केतु की युति है, जिस पर शुक्र की दृष्टि पड़ रही है। यदि आपका जन्म सामान्य या गरीब परिवार में भी हुआ होगा तो भी आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे एवं कुशाग्र बुद्धि वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी केन्द्र अथवा त्रिकोण में विराजमान है। आप विलक्षण प्रतिभा वाले व्यक्ति होंगे एवं आपको विभिन्न विषयों का ज्ञान होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ युति है तथा यह एक केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। यह समग्र योग बहुत अनुकूल है, इसे युक्ति समन्वित वाग्मि योग कहा जाता है। आप वाक्पटुता की प्रतिभा से सम्पन्न होंगे तथा अपनी अकाट्य तर्कशक्ति और भाषण दक्षता के कारण सुविख्यात होंगे। अत्यधिक संभावना है कि आप सभाओं में अपनी चमक बिखेर सकते हैं और ख्याति अर्जित कर सकते हैं।

शिक्षा, विद्या और विद्वता से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु अस्त या नीचस्थ है। आपको अपनी शिक्षा प्राप्त करने में समस्याओं से जूझना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – पुजारियों और साधुओं की सेवा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव में गुरु स्थित है एवं कारकत्व दोष उत्पन्न कर रहा है। आपकी शिक्षा में बाधाएं तो अवश्य आएंगी, परन्तु इनका उपाय करने पर शिक्षा रूकेगी नहीं, पूरी हो जाएगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – पुजारियों और साधुओं की सेवा करें।

शिक्षा बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) किसी भी कारण वश आपके शिक्षा में यदि कोई बाधा उत्पन्न हो रही है तो आपको यह उपाय करना चाहिए। इसके लिए आप तीन अभिमंत्रित गोमती चक्र, तीन कौड़ियां एवं तीन लघु नारियल, दो आटे के पेड़े, केसर की डिब्बी, गीली चने की दाल व गुड़ एकत्र लें। अब किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार के दिन किसी पीपल के वृक्ष के नीचे जाकर उस वृक्ष का पीले चंदन से तिलक करें एवं तीन शुद्ध घी के दीपक अर्पित कर अपनी शिक्षा मार्ग में आने वाली बाधा को दूर करने हेतु प्रार्थना करें। इसके बाद कोई भी पीला मिष्ठान भोग स्वरूप अर्पित करें व तीव्र सुगंध वाली धूप–अगरबत्ती जलाएं। फिर उपर्युक्त वर्णित सभी सामग्री भी अर्पित कर दें। उसके बाद थोड़ा सा कच्चा दूध लेकर वृक्ष की जड़ में स्थित मिट्टी पर डालें और उसके द्वारा जो मिट्टी गीली हुई हो उससे अपना तिलक करें और प्रणाम कर घर वापिस आ जाएं। इस उपाय को करने से भी आपके मार्ग में आने वाली बाधाएं दूर हो

जाएंगी।

(2) हर प्रकार से योग्य होने पर भी नौकरी मिलने में कठिनाई, साक्षात्कार में असफलता आदि हो रही हो, तो यह प्रयोग करें। शुक्ल पक्ष के सोमवार से यह साधना करें। राम दरबार का चित्र सामने रखें। घी का दीपक, धूप, अगरबत्ती जला लें। रुद्राक्ष माला पर निम्न लिखित दोहों की एक माला जाप रोज करें।

विश्व भरन पोषन कर जोई।
ताकर नाम भरत अस होई।
गई बहार गरीब नेवाजू।
सरल सबल साहिब रघराजू।

मंत्र जप के पश्चात ईश्वर से अपना मनोरथ पूर्ण होने की दीनता से प्रार्थना करें और गाय को चारा खिलाएं। नौकरी प्राप्ति के अवसर बनने लगेंगे।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय

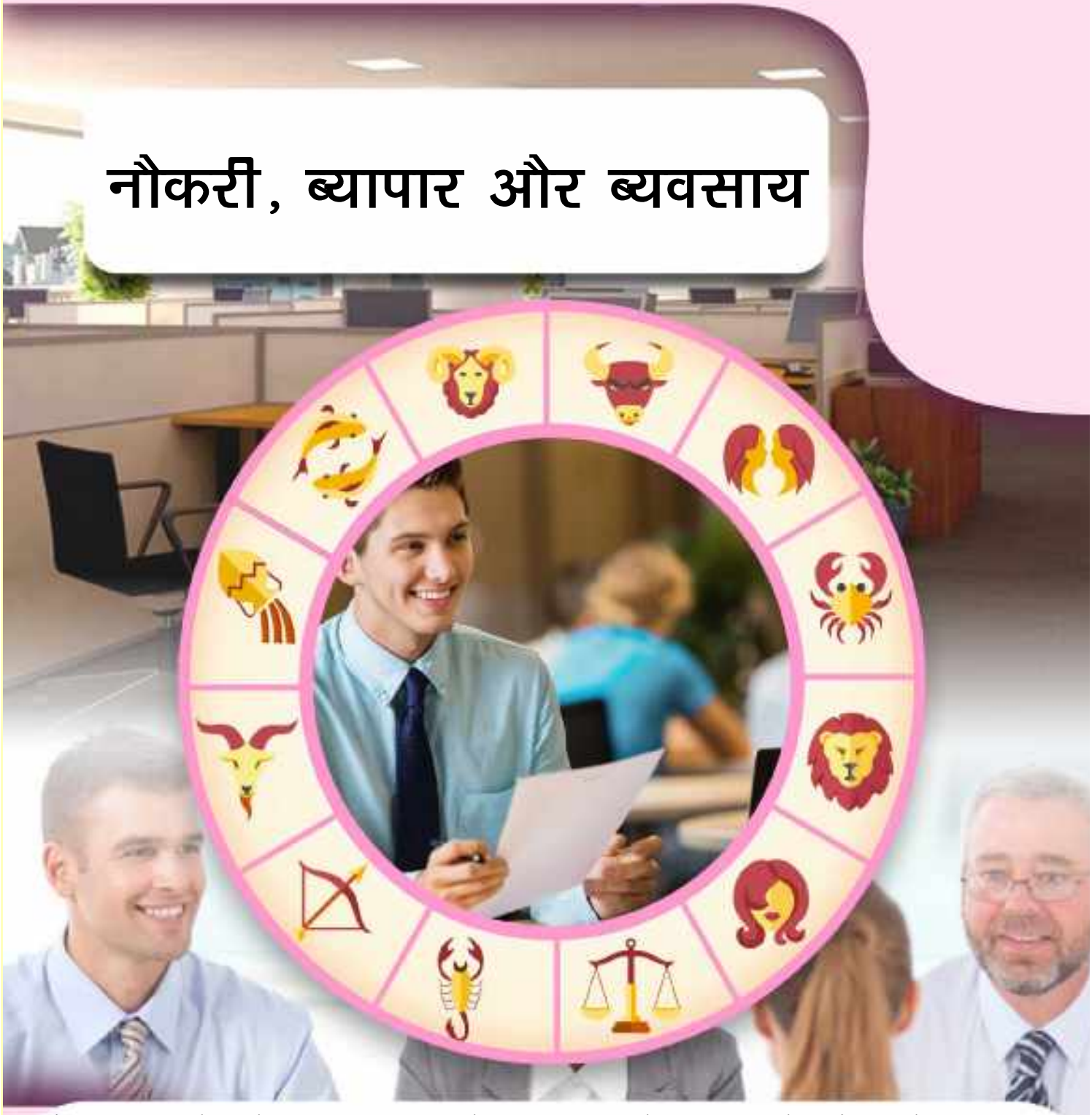

भौतिक संसार में रहते हुए मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं का जन्म होता है। जिन्हें पूरा करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के कार्य व व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। सभी प्रकार की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु मनुष्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। जबकि वर्तमान समय में इस तरह की परिस्थिति व प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बन गया है कि सभी एक दूसरे से आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आगे निकलना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कोई बहुत आगे निकल जाता है तथा कोई इतना पिछे रह जाता है कि उसके लिए अपनी आम जरूरतों को पूरा कर पाना भी कठिन होने लगता है। जीवन का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप से आर्थिक पक्ष से अवश्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में व्यवसाय, नौकरी आदि में किसी भी प्रकार की बाधा आना जीवन में कठिनाई उत्पन्न कर देता है। ये बाधाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी प्रकार की कोई व्यापारिक दुर्घटना, हानि, ऋण में वृद्धि, शत्रुओं द्वारा किया षडयंत्र आदि। यद्यपि बाह्य तौर पर इन्हें परिस्थितिजन्य माना जाता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की बाधाएं ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यक्ति अपनी जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों को समय रहते जान कर उसके लिए उपाय करे तो संभवतः वह इन बाधाओं को दूर करने में सफल भी हो सकता है।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित योग और उपाय

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन-समृद्धि व मान-सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश, नवमेश, चंद्रमा और बृहस्पति चारों ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति शक्तिशाली राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन-समृद्धि व मान-सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति द्वितीयेश के साथ शुभ भाव में स्थित है। आप सर्वोच्च पद व अधिकार का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, आठवें भाव का स्वामी मजबूत स्थिति में है, आप आर्थिक रूप से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त, आपको एक लाभप्रद पद प्राप्त होने की बहुत अधिक संभावना है एवं नौकरी में उत्तम स्थान प्राप्त करेंगे- आपके कार्य का कोई संबंध बीमा, प्रॉविडेन्ट फंड, कर संग्रह आदि से हो सकता है। या फिर, आपको अपने जीवनसाथी या व्यावसायिक साझेदार से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। या फिर, आप अपना स्वयं का उपक्रम प्रारम्भ करने के लिए कुछ प्रमुख वित्तीय संस्थानों से ऋण के रूप में बड़ी मात्रा में धन प्राप्त कर सकते हैं।

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, जैसाकि ये दोनों ही ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं, अतः यह योग बहुत शुभ होगा, क्योंकि सूर्य आपकी कुण्डली में शुभ-करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी शुभ करतरी योग कहा जाता है। जैसाकि यह योग अनेक अनुकूल परिणामों और शुभ घटनाओं का सूचक है, आपका जन्म एक धनी परिवार में हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन में काफी कम आयु में ही एक विशिष्ट स्थान तक पहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से लाभ प्राप्त करेंगे, जीवन की सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं का आनन्द लेंगे तथा आपका नाम व यश दूर-दूर तक फैलेगा।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में बुध मंगल की राशि में स्थित है। आपको अपने व्यापार में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा तथा आर्थिक हानि भी होगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव में कोई पापी ग्रह स्थित है। आपको अपने व्यवसाय या नौकरी अथवा जो भी कार्य आप करते हैं उसमें बाधाएं आती रहेंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव में कोई वक्री, अस्त अथवा नीच राशि का ग्रह स्थित है। आपको अपने आर्थिक क्रिया कलापों व जीविकोपार्जन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य ग्रहण योग बना रहा है। इसलिए आपको सरकारी नौकरी मिलने की उम्मीद अत्यंत कम है। यदि किसी अन्य योग के प्रभाव से सरकारी नौकरी आपको प्राप्त हो भी जाएगी तो भी आपको उसमें अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – बन्दर को गुड़ खिलायें। घर में या आंगन में धुआं न करें।

जीविकोपार्जन/नौकरी/ब्यापार बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) कार्यक्षेत्र में आने वाली कठिनाईयों को समाप्त करने के लिए मंगल वार के दिन किसी भी सिद्ध श्री हनुमानजी के मंदिर में जाकर उनसे प्रार्थना करते हुए उनको एक पान के पत्ते पर मक्खन, गुड़, सिंदूर, कर्पूर, 11 चने के दाने और एक जनेउ अर्पित करें। अपनी समस्या का समाधान करने के लिए प्रार्थना करने के बाद श्री बजरंग बाण का पाठ करें और उनके बाएं चरण से सिन्दूर लेकर तिलक करें। इस उपाय से भी आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा।

(2) यदि परिश्रम के पश्चात भी कारोबार ठप्प हो, या धन आकर खर्च हो जाता हो तो यह टोटका काम में लें। गुरू पुष्य योग और शुभ चन्द्रमा के दिन प्रातः हरे रंग के कपड़े की छोटी थैली तैयार करें। श्री गणेश के चित्र अथवा मूर्ति के आगे संकटनाशन गणेश स्तोत्र के 11 पाठ करें। तत्पश्चात इस थैली में 7 मूंग, 10 ग्राम साबुत धनिया, एक पंचमुखी रूद्राक्ष, एक चांदी का रूपया या 2 सुपारी, 2 हल्दी की गांठ रख कर दाहिने मुख के गणेश जी को शुद्ध घी के मोदक का भोग लगाएं। फिर यह थैली तिजोरी या कैश ब०क्स में रख दें। गरीबों और ब्राह्मणों को दान करते रहें। आर्थिक स्थिति में शीघ्र सुधार आएगा। 1 साल बाद नयी थैली बना कर बदलते रहें।

विवाह

सामान्यतः गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के लिए प्रथम और अनिवार्य शर्त विवाह को माना जाता है। इसलिए इसका हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएं आती हैं जिनमें विवाह से संबधित बाधाएं भी होती हैं। जैसे इच्छानुकुल वर या वधु का न मिलना, विवाह योग्य आयु होने पर विवाह न हो पाना, विवाह में किन्ही कारणवश विलम्ब होना, वर या वधु के सर्वगुण सम्पन्न होने के बाद भी विवाह न हो पाना, विवाह के लिए आर्थिक अभाव का आड़े आना आदि। ज्योतिषिय दृष्टिकोण से ऐसी बाधाओं या कठिनाईयों का कारण व्यक्ति के जन्म कुंडली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव के कारण होता है। विवाह तथा वैवाहिक जीवन को ग्रहों के अच्छे व बुरे प्रभाव सर्वथा प्रभावित करते हैं। यदि इनके अशुभ प्रभावों को विवाह के पूर्व ही ज्ञात कर लिया जाए तो इन प्रतिकूल प्रभावों का निवारण कर वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है। यहाँ हम जातक/जातिका की कुण्डली में स्थित ऐसे योग की जाँच करेंगे, इन बाधक योगों की संख्या जितनी अधिक होगी विवाह में उतना ही विलम्ब/कष्ट आदि की मात्रा उतनी ही अधिक होगी।

विवाह से संबंधित योग और उपाय

विवाह से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश व सप्तमेश की केन्द्र या त्रिकोण भाव में युति है। आपका एक ही विवाह होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें अथवा पांचवें भाव के स्वामी की युति नौवें भाव के स्वामी के साथ है। संभावना है कि आप प्रेम विवाह कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र जन्म लग्न अथवा चंद्र लग्न से पांचवें भाव में उपस्थित है। आपके प्रेम विवाह करने की संभावना अधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव के स्वामी की शुभ ग्रहों से युति है अथवा शुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ रही है अथवा शुभ नवांश में होकर केंद्र में स्थित है। आपका विवाह सुन्दर, सुशील, सद्गुणी एवं पतिव्रता धर्म का पालन करने वाली कन्या से होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक (शुक्र) वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी सर्वोत्तम नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

विवाह से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, सप्तमेश चर राशि में स्थित है। यह योग आपका दो विवाह होने की संभावना को दर्शाता है।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी अपनी नीच राशि में स्थित है। आपके विवाह में अड़चनें व रुकावटें आएंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से रुकावटें खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – चोटी रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव पर शनि की दृष्टि पड़ रही है तथा शनि सातवें भाव का स्वामी नहीं है। आपका विवाह सामान्यतः 28 वर्ष की आयु में होगा अर्थात विलम्ब से होगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से विवाह में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – रोटी पर सरसों का तेल लगाकर कौओं और कुत्तों को खिलायें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव के स्वामी की दूसरी राशि में कोई पापी ग्रह बैठा हुआ है। आपके विवाह में अनेक बाधाएं आएंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से विवाह में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – विष्णु भगवान की पूजा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे, चौथे तथा सातवें भाव पर पाप प्रभाव है। आपके विवाह में कई रुकावटें उत्पन्न होंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से विवाह में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी किसी त्रिक भाव में स्थित है अथवा नीच या अस्त है। आपके विवाह में अड़चनें आएंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से विवाह में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – मंदिर से प्रसाद न लें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी अथवा शुक्र नीच नवांश में स्थित है। आपका विवाह खूबसूरत कन्या से नहीं हो सकता है तथा साथ ही वे रोगग्रस्त, कटु वचन बोलने वाली एवं कर्कश स्वभाव की हो सकती हैं। समुचित ध्यान देने और उपाय करने से स्थिति में बदलाव हो जायेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने घर में गेंदा या सूर्यमुखी का पौधा लगायें। अपने पहनावें पर ध्यान दें।

विवाह बाधा समाप्ति के सरल उपाय

(1) प्रत्येक मंगलवार के दिन मंगलदेव के 108 नाम, मंगल कवच तथा स्तोत्र का पाठ करने से भी विवाह में आने वाली बाधाएं समाप्त होती है। मंगल चंडिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभदायक होता है।

दाम्पत्य सुख

व्यक्ति के विवाहोपरान्त दाम्पत्य जीवन की शुरुआत होती है। यह जीवन का वह भाग है जिसमें व्यक्ति का सर्वाधिक समय व्यतीत होता है। इसलिए इसके सुखमय अथवा कष्टमय होने से व्यक्ति का सारा जीवन प्रभावित होता है। दाम्पत्य जीवन पति–पत्नी दोनों के आपसी समझ, सामंजस्य, प्रेम, समर्पण, सहानुभूति, मधुरता, अपनापन आदि से मिलकर बनता है। यदि इनके विपरीत गुणों का समावेश दाम्पत्य जीवन में होने लगता है, तो परिस्थिति सुखमय होने की बजाय कष्टमय होने लगती है। सामान्यतः पति–पत्नी दोनों की ही यह जिम्मेदारी होती है कि वे अपने–अपने दायित्वों का पालन निष्ठा व प्रेम से करें। जिससे कि घर–परिवार में कलह क्लेश की स्थिति उत्पन्न न हो, परन्तु किन्हीं कारण वश ऐसा सदैव कर पाना संभव नहीं हो पाता है और दाम्पत्य सुख लुप्त होने लगता है। ज्योतिषशास्त्र में दाम्पत्य जीवन में होने वाले वाद–विवाद, कलह, अशांति आदि को दाम्पत्य सुख में बाधक माना गया है, जो कि ग्रहों के प्रतिकूल होने के कारण उत्पन्न होता है। यदि ग्रहों की प्रतिकूलता को पहले ही ज्ञात करके उसके अनुसार आचरण व उपाय किया जाय तो दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है। यहाँ हम जातक/जातिका की कुण्डली में स्थित ऐसे योग की जाँच करेंगे, इन बाधक योगों की संख्या जितनी अधिक होगी दाम्पत्य सुख में प्रतिकूलता, वाद–विवाद, कलह, अशांति आदि की मात्रा उतनी ही अधिक होगी।

दाम्पत्य सुख से संबंधित योग और उपाय

दाम्पत्य सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेष विषम राशि में स्थित है। आप एक पुरुष देवता की अराधना करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, पाँचवें भाव में सम राशि है। आप एक देवी की अराधना करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश व सप्तमेश की केन्द्र या त्रिकोण भाव में युति है। आपका एक ही विवाह होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक (शुक्र) वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी सर्वोत्तम नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

आपकी कुण्डली में दामिनी योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक प्रशंसनीय ग्रह स्थिति है। आप बहुत समृद्ध होंगे, पूर्णतः सभ्य प्रकृति, धैर्यवान और बहुत विद्वान होंगे। आप उदार प्रवृति वाले होंगे तथा सदैव दूसरों के प्रति करूणा का भाव रखेंगे। आप जानवरों के प्रति दयालु होंगे एवं उनकी किसी प्रकार से सेवा भी करेंगे। आप पारम्परिक धार्मिक रीतियों का निर्वाहन करेंगे, सुखमय व शांतिपूर्ण वैवाहिक जीवन का आनन्द लेंगे तथा आपकी संतानें योग्य और कर्तव्यनिष्ठ होंगी। आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, जैसाकि ये दोनों ही ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं, अतः यह योग बहुत शुभ होगा, क्योंकि सूर्य आपकी कुण्डली में शुभ–करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी शुभ

करतरी योग कहा जाता है। जैसाकि यह योग अनेक अनुकूल परिणामों और शुभ घटनाओं का सूचक है, आपका जन्म एक धनी परिवार में हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन में काफी कम आयु में ही एक विशिष्ट स्थान तक पहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से लाभ प्राप्त करेंगे, जीवन की सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं का आनन्द लेंगे तथा आपका नाम व यश दूर-दूर तक फैलेगा।

दाम्पत्य सुख से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीचस्थ है तथा द्वादशेश चौथे भाव में बैठा हुआ है। आपका जीवन सार्थक नहीं हो सकता है, आप इर्ष्यालु प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा आपको दुखी व कष्टमय जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। आपको अपना व्यवहार संतुलित रखने से लाभ होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - मंदिर से प्रसाद न लें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी एवं चन्द्र राशि का स्वामी दोनों में से कोई अपनी नीच राशि में है। आपके दाम्पत्य जीवन में अनेक बाधाएं उत्पन्न होंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से दाम्पत्य सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - हरे रंग और साली से बचें। पीपल के पेड़ की सेवा करें। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - गणेश जी की पूजा करें। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - अपना चरित्र ठीक रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र एवं शनि एक दूसरे से छठे व आठवें भाव में स्थित हैं। आपको जननांग से संबंधित रोग होने की संभावना अधिक हो सकती है। हांलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और आप इससे बाहर निकल जायेंगे और स्वस्थ होंगे। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि आठवें या दसवें भाव में स्थित है एवं उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं पड़ रही है। आपमें प्रजनन क्षमता की कमी हो सकती है। हांलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और आप इससे बाहर निकल जायेंगे और स्वस्थ होंगे। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में एक से अधिक पाप ग्रह चौथे भाव में उपस्थित हैं एवं दूसरे पाप ग्रह की उन पर दृष्टि पड़ रही है। आपको अपना चाल-चलन ठीक रखना चाहिए। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र से चौथे अथवा आठवें भाव में पाप ग्रह उपस्थित है। आपकी

पत्नी को आग से खतरा होने की संभावना है। आपको सावधान रहने की जरूरत है।

दाम्पत्य सुख प्राप्ति के सरल उपाय

(1) एक पतंग ले कर उस पर अपने कष्ट तथा परेशानियां लिखें। उसको हवा में उड़ा कर छोड दें। ऐसा सात दिन लगातार करें। सब कष्ट तथा परेशानियां दूर हो जाएंगी तथा घर में सुख–शंति होगी।

(2) यदि आपका पति आपसे झगड़ा करता है और आपसे दूर होते जा रहा है तो – आप अपने पति को पाने के लिए बुधवार के दिन तीन घण्टे का मौन रखें और शुक्रवार के दिन अपने हाथ से साबूदाने की खीर बनाकर तथा उसमें मिश्री डालकर पति को खिला दें। इसके बाद आप इत्र दान करें तथा अपने शयनकक्ष में रखें।

माता–पिता, भाई–बन्धु और संतान

परिवार की बात की जाए तो यह मात्र पति–पत्नी से पूर्ण नहीं माना जाता जब तक कि इसमें संतान का प्रवेश न हो जाए। ऐसा प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों में होता है। संतान के बिना समाज, देश या विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए संतान की प्राप्ति किसी भी दम्पति के लिए सबसे अधिक खुशी प्रदान करने वाली होती है। खासकर हिन्दू समाज में अपने संतान तथा पुत्र संतान को अधिक मान्यता प्राप्त है क्योंकि पुत्र संतान को वंश परम्परा को आगे बढ़ाने वाला, पित्तरों का तर्पण करने वाला, पिता की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा की शांति हेतु क्रिया–कर्म करने वाला आदि माना जाता है। परन्तु पुत्र अथवा पुत्री कोई भी संतान न होने की स्थिति में पुत्री संतान की भी उतनी ही तीव्र अभिलाषा लोगों में होने लगती है। चूंकि संतान सुख की इच्छा सभी को होती है, परन्तु इसकी प्राप्ति में बाधाओं का सामना भी करना पड़ता है। ज्योतिषशास्त्र में संतान सुख में आने वाली बाधाओं को ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव का कारण माना जाता है। पति अथवा पत्नी या दोनों की कुण्डलियों में यदि कोई ग्रह अशुभ व बाधक योग बनाता है तो उस दम्पति को संतान सुख प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पडता है।

परिवार और संतान से संबंधित योग और उपाय

परिवार और संतान से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न पर बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही है। आप दुराचारी प्रवृत्तियों से मुक्त रहेंगे तथा आगे चलकर लोकप्रियता व प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में पाचवें भाव के स्वामी का नवांशधिपति शुभ ग्रहों से युति अथवा दृष्टि संबंध स्थापित कर रहा है। आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें एवं पहले भाव के स्वामी पुरुष राशि के ही नवांश में स्थित हैं। आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में पुरुष ग्रहों की दृष्टि पांचवें भाव पर पड़ रही है। आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में स्त्री राशि एवं स्त्री राशि का नवांश पांचवें भाव में स्थित है। आपको पुत्री की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेश बलशाली नहीं है– उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं होने के कारण। इसके अतिरिक्त, यह एक केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। इस विशिष्ट योग को एक–पुत्र योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो आपको केवल एक संतान की प्राप्ति हो सकती है– जिसके पुत्र होने की संभावना अत्यधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की चतुर्थेश के साथ युति है या उसपर इसकी दृष्टि है, जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है, इसे मातृ मूलत धन योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपको अपनी माता से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और शुक्र की पांचवें भाव में युति है। पांचवें भाव में कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही दृष्टि डाल रहा है। यह एक अनुकूल योग है, इसे अपत्य सुख योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आप योग्य संतानों की प्राप्ति के संदर्भ में विशेष रूप से भाग्यशाली होंगे– जो आपके परिवार के लिए सदैव गर्व व आनन्द का स्रोत बनेंगे।

आपकी कुण्डली में दामिनी योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक प्रशंसनीय ग्रह स्थिति है। आप बहुत समृद्ध होंगे, पूर्णतः सभ्य प्रकृति, धैर्यवान और बहुत विद्वान होंगे। आप

उदार प्रवृति वाले होंगे तथा सदैव दूसरों के प्रति करूणा का भाव रखेंगे। आप जानवरों के प्रति दयालु होंगे एवं उनकी किसी प्रकार से सेवा भी करेंगे। आप पारम्परिक धार्मिक रीतियों का निर्वाहन करेंगे, सुखमय व शांतिपूर्ण वैवाहिक जीवन का आनन्द लेंगे तथा आपकी संतानें योग्य और कर्तव्यनिष्ठ होंगी। आपका नाम व यश दूर-दूर तक फैलेगा।

परिवार और संतान से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा जिस राशि में स्थित है उस राशि का स्वामी तीसरे भाव में स्थित है। आप अपने माता-पिता की इकलौती संतान हो सकते हैं अथवा यदि आपका कोई भाई या बहन होता भी है, तो उसकी स्थिति ठीक नहीं हो सकती है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और आपके प्रयास से स्थिति में सुधार होगाा और उनका जीवन खुशहाल हो जायेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश पाँचवें भाव में स्थित है, जबकि अष्टमेश आठवें भाव में स्थित है। आपको संतान की प्राप्ति होने की संभावना कम है। आपको किसी अनुभवी डाक्टर से इलाज कराना होगा तथा उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - पूजा स्थल की नियमित सफाई करें। अपने घर में एक अंधेरी कोठरी बनवायें।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश और पंचमेश परस्पर शत्रु हैं। आपके व आपके पिता के मध्य भी समान रूप से शत्रुता के भाव होंगे। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए ही होगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - नाक छेदवायें। 43 दिन तक लगातार चने की दाल बहते हुए पानी में बहायें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवे भाव का स्वामी किसी पापी ग्रह के साथ स्थित है। आपको संतान बाधा का सामना करना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - रोटी पर सरसों का तेल लगाकर कौओं और कुत्तों को खिलायें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी किसी वक्री, अस्त अथवा नीच ग्रह के साथ स्थित है। आपको संतान सुख की प्राप्ति में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से संतान सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी और आपको उत्तम संतान का सुख प्राप्त होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - रोटी पर सरसों का तेल लगाकर कौओं और कुत्तों को खिलायें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी अस्त, पापी अथवा नीच ग्रहों के साथ स्थित है एवं चंद्रमा केंद्र में स्थित है। आपको संतान बाधा का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से संतान सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी और आपको उत्तम संतान का सुख प्राप्त होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय

करें – जीव हत्या न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। आपको संतान बाधा का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से संतान सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी और आपको उत्तम संतान का सुख प्राप्त होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – मजदूरों का पैसा अपने पास न रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव पर मंगल या शुक्र की दृष्टि नहीं है। आपको संतान प्राप्ति की में बाधा आ सकती है। आपको किसी अनुभवी डाक्टर से इलाज कराना होगा तथा उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – 4 किलो रेवड़ी या बताशे बहते पानी में बहायें। पत्नी का कहना मानें और उनसे झगड़ा न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें अथवा सातवें भाव में मन्दी उपग्रह द्वारा अधिष्ठित राशि उपस्थित है। आपको संतान प्राप्ति की में बाधा आ सकती है। आपको किसी अनुभवी डाक्टर से इलाज कराना होगा तथा

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीच का है या एक शत्रु की राशि में स्थित है अथवा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है या एक बुरे षष्ठीआंश में स्थित है। यह योग काफी प्रतिकूल है, इसे बन्धुभिसत्याक्त योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुंछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योग के होने के कारण आपके संबंधियों और मित्रों द्वारा जीवन में कभी आपका परित्याग किया जा सकता है– भले ही आपकी कोई छोटी गलती हो या वास्तव में कोई गलती ना हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य और राहु आपके चौथे भाव में स्थित हैं– जबकि इनमें से कोई भी उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अरिष्ट योग कहते हैं। आपके पिता को आपके जन्म के आस–पास किसी समय कष्ट सहन करना पड़ा होगा तथा उनका स्वास्थ्य व सुख आपके पारिवारिक सदस्यों की गंभीर चिन्ता का कारण बना होगा। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपके पिता की सोच उनके जीवनकाल में किसी समय कुछ–कुछ भ्रमित हो सकती है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – सोने, चाँदी अथवा कपड़ों का व्यापार उत्तम होगा। सरस्वती जी की पूजा अर्चना करें।

संतान सुख प्राप्ति के सरल उपाय

(1) संतान बाधा को दूर करने के लिए श्री तुलसीकृत रामायण के बालकाण्ड का पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से भी आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा।

धन – संपत्ति

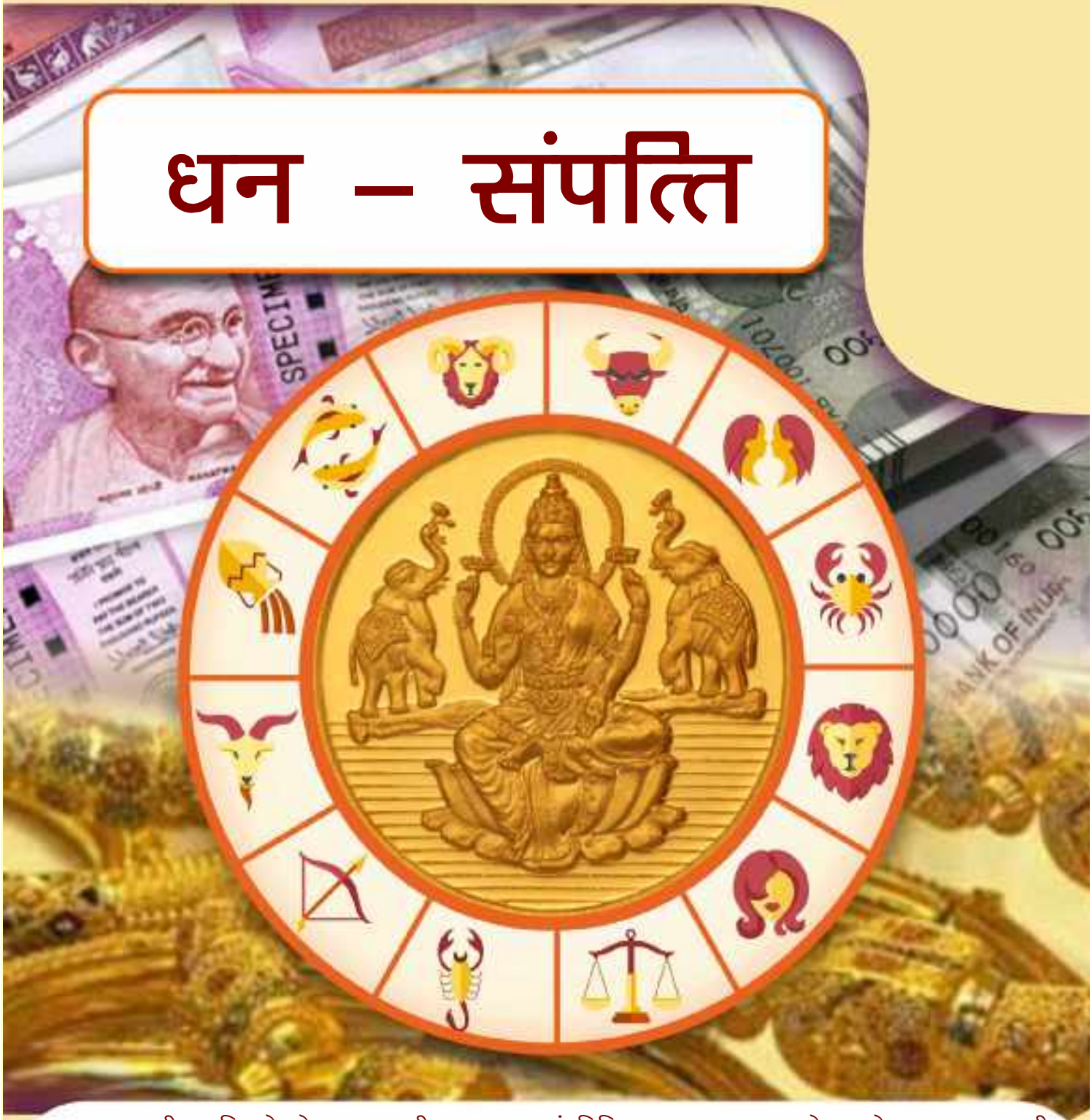

मनुष्य का जीवन मिलने के बाद उसकी आवश्यकताएं विभिन्न रूप धारण करके उसके समक्ष आ खड़ी होती हैं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे किसी न किसी रूप में धन की आवश्यकत जरूर पड़ती है। मनुष्य का वर्तमान हो अथवा भविष्य आर्थिक पक्ष से अधिक प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति का आर्थिक पक्ष सुदृढ़ है तो उसकी अनेक समस्याएं आसानी से दूर हो जाती हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं सबकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ ही हो। किसी के पास अपार धन होता है तो कोई धन के अभाव में अपना जीवन बहुत ही कठिनाई में व्यतीत करता है। जीवन में धन से जुड़ी हुई बाधाएं अनेक रूप में आती हैं। यह आवश्यक नहीं कि जिसके पास धनार्जन के अच्छे साधन हो अथवा जिसका व्यापा व आय अधिक हो उसे धन का कभी अभाव नहीं होता, एवं जिसकी आय कम होती है उसे ही धन बाधा का सामना करना पड़ता है। धन संबंधी बाधा तो किसी के भी जीवन में किसी भी स्वरूप में आ सकती है। ऐसी परिस्थिति जब व्यक्ति को धन की आवश्यकता हो और उसके पास प्रत्यक्ष रूप से धन उपलब्ध न हो तो उसे धन बाधा कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस प्रकार की परिस्थितियां ग्रहों के योग से निर्मित होती हैं। यही कारण है कि एक ही माता–पिता की दो संतान माता–पिता द्वारा समान रूप से धन वितरण करने के बाद भी कोई धनवान व कोई गरीब हो जाती है। इसलिए इन ग्रह के योग को जानना व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है।

धन – संपत्ति से संबंधित योग और उपाय

धन – संपत्ति से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश, नवमेश और एकादशेश में से कोई एक चंद्रमा से केन्द्र भाव में स्थित है तथा उस पर बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही है। आप बहुत धनी व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश, द्वितीयेश और एकादशेश केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। आपको उत्तम धन–संपत्ति का सुख प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश और चतुर्थेश की त्रिकोण में युति है। आप धनोपार्जन के लिए उचित साधनों का प्रयोग करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश, नवमेश, चंद्रमा और बृहस्पति चारों ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति शक्तिशाली राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश व नवमेश एक साथ मित्र राशि में स्थित हैं तथा बृहस्पति अशुभ ग्रह से पीड़ित नहीं है। आपको अपार धन–संपदा की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में काहल योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, आठवें भाव का स्वामी मजबूत स्थिति में है, आप आर्थिक रूप से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त, आपको एक लाभप्रद पद प्राप्त होने की बहुत अधिक संभावना है एवं नौकरी में उत्तम स्थान प्राप्त करेंगे– आपके कार्य का कोई संबंध बीमा, प्रॉविडेन्ट फंड, कर संग्रह आदि से हो सकता है। या फिर, आपको अपने जीवनसाथी या व्यावसायिक साझेदार से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। या फिर, आप अपना स्वयं का उपक्रम प्रारम्भ करने के लिए कुछ प्रमुख वित्तीय संस्थानों से ऋण के रूप में बड़ी मात्रा में धन प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक

प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की बृहस्पति के साथ युति है– जो कि एक अनुकूल स्थिति में है। एक शुभ योग का निर्माण हो रहा है। आप धन संबंधी मामलों में भाग्यशाली होंगे, अत्युत्तम आय होगी तथा निश्चित रूप से बहुत धनवान होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश द्वितीयेश के साथ संबद्ध है (या इस पर उसकी दृष्टि है)– जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह किसी प्रकार से पीड़ित नहीं है। आप अपनी माता के संबंध में भाग्यशाली होंगे तथा उनसे आपको धन–सम्पदा की प्राप्ति होगी। आपको अपने संबंधियों तथा कृषि से भी लाभ मिलेगा।

जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक जल तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से उत्तर दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, जैसाकि ये दोनों ही ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं, अतः यह योग बहुत शुभ होगा, क्योंकि सूर्य आपकी कुण्डली में शुभ–करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी शुभ करतरी योग कहा जाता है। जैसाकि यह योग अनेक अनुकूल परिणामों और शुभ घटनाओं का सूचक है, आपका जन्म एक धनी परिवार में हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन में काफी कम आयु में ही एक विशिष्ट स्थान तक पहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से लाभ प्राप्त करेंगे, जीवन की सभी प्रकार की सुख–सुविधाओं का आनन्द लेंगे तथा आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

धन – संपत्ति से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु एक अशुभ ग्रह के साथ चौथे भाव में स्थित है तथा उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। यह एक प्रतिकूल योग है। संभवतः आपका अपना कोई घर नहीं हो सकता है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने पास हथियार न रखें। 400 ग्राम या एक किलो धनियां बहते पानी में सात बुधवार तक बहायें।

आपकी जन्मकुण्डली में, षष्ठेश एक अशुभ ग्रह के साथ स्थित है तथा द्वादशेश पर दृष्टि डाल रहा है। संभवतः आप अपने प्रारम्भिक जीवन में ही धन–संपदा को खो सकते हैं तथा आपको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए

होगी और आप इससे बाहर निकल जायेंगे और उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – जीव हत्या न करें। बुआ के लड़के की सेवा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु अपनी नीच राशि में स्थित है। आपको अपने जीवन में धन संबंधी बाधाओं को सदैव झेलना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित परिश्रम से आप अपने जीवन में आने वाली आर्थीक परेशानियों को पूरी तरह से खत्म कर देंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – स्कूल अध्यापक की सेवा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवे भाव का स्वामी छठे या दसवें भाव में उपस्थित है एवं उस पर मारकेश अर्थात दूसरे या सातवें भाव के स्वामी की दृष्टि पड़ रही है अथवा छठे, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी की दृष्टि पड़ रही है। आपकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हो सकती है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, एक घोर अशुभ ग्रह आपके आठवें भाव में स्थित है– जो कि किसी शुभ ग्रह से प्रभावित नहीं है। यद्यपि आप काफी सम्पन्न होंगे, तो भी आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए एवं अनावश्यक रूप से अत्यधिक जोखिम नहीं उठाना चाहिए। आपको गम्भीर प्रकार की अशुभ घटना का सामना करना पड़ सकता है। इस बात की भी संभावना है, कि आप किसी अन्य व्यक्ति/व्यक्तियों को गंभीर चोट पहुंचा सकते हैं– जिसके लिए आपकी पेशी हो सकती है या दंडित तक किया जा सकता है।

धन बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) आप अधिक समृद्धि चाहते हैं तो 7 अभिमंत्रित गोमती चक्र को काली हल्दी के साथ पीले वस्त्र में बांध कर रखने से कुछ ही दिनो में आपके धन में वृद्धि होना शुरू हो जायेगा।

मकान/आवास सुख

मनुष्य का जीवन प्राप्त होने के बाद उसके जीवन में तरह–तरह की जरूरतें आती हैं, परन्तु जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं उनमें से सबसे पहले वह भोजन और फिर वस्त्र के बारे में सोचता है और जब उसे पूरा कर लेता है तो उसके बाद उसे अपने रहने के लिए एक ऐसे आवास की जरूरत महसूस होती है जिसमें वह सुख–शांति से अपने परिवार के साथ रह सके। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसके पास उसका स्वयं का घर व सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हों, परन्तु वास्तव में सब कुछ हासिल कर पाना इतना आसान भी नहीं होता है। इन्हें प्राप्त करनें में अनेक बाधाएं आती हैं। किसी के जीवन में ये बाधाएं अधिक होती हैं तो किसी में कुछ कम एवं किसी को बहुत आसानी से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है। ज्योतिष में इसी उतार–चढ़ाव के खेल को ग्रहों व भाग्य का खेल कहा जाता है जो कि सबका अलग–अलग होने के कारण सबको अलग–अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

मकान/आवास सुख से संबंधित योग और उपाय

मकान/आवास सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश व नवमेश द्वादशेश से दूसरी राशि में स्थित हैं। आप एक भव्य भवन में निवास करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में काहल योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

मकान/आवास सुख से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु एक अशुभ ग्रह के साथ चौथे भाव में स्थित है तथा उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। यह एक प्रतिकूल योग है। संभवतः आपका अपना कोई घर नहीं हो सकता है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दूसरों का सम्मान करें। सीढ़ियों के नीचे रसोई घर नहीं होना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में, षष्ठेश एक अशुभ ग्रह के साथ स्थित है तथा द्वादशेश पर दृष्टि डाल रहा है। संभवतः आप अपने प्रारम्भिक जीवन में ही धन–संपदा को खो सकते हैं तथा आपको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और आप इससे बाहर निकल जायेंगे और उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – धार्मिक स्थानों की यात्रा करें। सोने, चाँदी अथवा कपड़ों का व्यापार उत्तम होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव में कोई पापी ग्रह स्थित है। आपको आवास सुख की प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से दाम्पत्य सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव में किसी अशुभ भाव का स्वामी स्थित है। आपके आवास सुख में कठिनाईयां आएंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से दाम्पत्य सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव पर पापी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। आपको अपने आवास सुख की प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से दाम्पत्य सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव का स्वामी अपनी नीच राशि में स्थित है। यदि आपको

अन्य ग्रहों के प्रभाव से आवास सुख प्राप्त हो भी जाएगा तो भी आपके पास वह भवन अधिक समय तक नहीं रहेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित प्रबन्ध/मेहनत करने से आवास सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी और आपको सुन्दर आवास का सुख प्राप्त होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने घर में गेंदा या सूर्यमुखी का पौधा लगायें।

भवन/आवास सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) चांदी का सर्प–सर्पणी का जोड़ा भूमि पूजन करके मकान की नींव में डालना चाहिए। एक पात्र या शीशी में शहद भी रखें। इससे मकान की नींव मजबूत होती है। भूकंप भी आए तो भी मकान सुरक्षित रहता है, दीवारों पर दरारें नहीं पड़ती, उनमें कभी सांप–बिच्छू नहीं निकलते हैं।

(2) वास्तु दोष दूर करने हेतु, अमरबेल को छाया में सुखाकर बारीक पीस कर शुद्ध गोरोचन और काली हल्दी में मिलाकर इसे तांबे के तावीज़ में सदैव के लिए गले में धारण किये रहने से आश्चर्यजनक वशीकरण होता है इसमें किसी मंत्र की आवश्यकता नही होती।

वाहन/सवारी सुख

आधुनिक समय में भौतिक भोग विलास की वस्तुएं इस प्रकार से जीवन में अपना स्थान बनाती जा रहीं हैं कि उनके बिना जीवन कठिन प्रतीत होने लगता है। इस वैज्ञानिक युग में जितनी तेज गति से विकास हो रहा है व्यक्ति को भी उसी के अनुसार अपनी गति बढ़ानी पड़ रही है। अब वो समय नहीं रहा कि लोग बैलगाड़ी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई–कई दिन में जाएं। इसके लिए आधुनिक वाहनों का जीवन में महत्व बढ़ता ही जा रहा है, बल्कि ये कह सकते हैं कि यह इच्छा ही नहीं आवश्यकता बन गई है। चूंकि सभी के लिए वाहन आवश्यक होता जा रहा है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि सबको वाहन सुख प्राप्त ही हो। किसी के पास अनेकोनेक वाहन होते हैं तो कोई उसे लाख प्रयत्न करने के बाद भी प्राप्त नहीं कर पाता है, कोई व्यक्ति वाहन होते हुए भी उसका भरपूर सुख नहीं उठा पाता है आदि की तरह जीवन में अनेक ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। ज्योतिष की दृष्टि से देखा जाय तो यह अन्तर व्यक्ति के जन्म के समय में स्थित ग्रहों के प्रभाव के कारण होता है। यदि व्यक्ति अपने जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रभाव को पहले ही जान कर उसके अनुसार वाहन का जीवन में प्रयोग करे तो वह स्वयं की सुरक्षा के साथ–साथ वाहन का सुख भी भरपूर प्राप्त कर सकता है।

वाहन/सवारी सुख से संबंधित योग और उपाय

वाहन/सवारी सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश व नवमेश एक साथ मित्र राशि में स्थित हैं तथा बृहस्पति अशुभ ग्रह से पीड़ित नहीं है। आपको अपार धन–संपदा की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में काहल योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन–सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव का स्वामी गुरु, शुक्र या चंद्र के साथ केंद्र या त्रिकोण में स्थित है। आपको अनेक वाहनों का सुख अपने जीवन में प्राप्त होगा।

वाहन/सवारी सुख से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु एक अशुभ ग्रह के साथ चौथे भाव में स्थित है तथा उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। यह एक प्रतिकूल योग है। संभवतः आपका अपना कोई घर नहीं हो सकता है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – 43 दिन तक लगातार चने की दाल बहते हुए पानी में बहायें। कैसा भी गंदा पानी आपके घर के चाहरदीवारी के अन्दर नहीं जमा होना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में, षष्ठेश एक अशुभ ग्रह के साथ स्थित है तथा द्वादशेश पर दृष्टि डाल रहा है। संभवतः आप अपने प्रारम्भिक जीवन में ही धन–संपदा को खो सकते हैं तथा आपको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और आप इससे बाहर निकल जायेंगे और उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – माँस–मदिरा का सेवन न करें। सोना पहनें।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव में कोई अस्त, वक्री अथवा नीच का ग्रह स्थित है जिससे चौथा भाव दूषित हो गया है। आपको वाहन सुख प्राप्त करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित प्रबन्ध/मेहनत करने से वाहन सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी और आपको वाहन का सुख प्राप्त होगा।

वाहन सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) यदि आपको ऐसा लगता है कि आप जब भी वाहन खरीदने की योजना बनाते हैं तो कोई न कोई बाधा आ जाती है जिससे आप वाहन नहीं खरीद पाते हैं तो माह के प्रथम बुधवार के दिन सायंकाल के समय स्नान आदि करके कोई भी गहरे रंग का स्वच्छ वस्त्र

धारण करें और अपने घर पर ही बैठकर अपने इष्टदेव को धूप, दीप अर्पित कर उनसे अपनी समस्या के समाधान के लिए निवेदन करें। उसके बाद 21 बार ''द्रीं द्रीं द्रों सः बाधा निवाराणाय कार्य सिद्धि देहि दापाय नमो नमः'' इस मंत्र का जाप करें। जाप करने के बाद एक नीले रंग के वस्त्र में एक जटा नारियल, एक लकड़ी के कोयले का बड़ा टुकड़ा, 3 अभिमंत्रित गोमती चक्र, 100 ग्राम काला तिल और एक लोहे की कील रखकर उसे बांध दें। अब 'भ्रां भ्रीं भ्रों सः राहवे नमः' मंत्र का उच्चारण करते हुए उस पोटली को अपने ऊपर से सात बार उल्टा उसारें। ध्यान रहे मंत्र का उच्चारण जितनी बार उसारे उतनी ही बार करें अर्थात सात बार उसारें व हर उसारे में एक बार ही मंत्र कहें। इसके बाद उस पोटली को किसी तेज बहती धारा में प्रवाहित कर प्रणाम करके वापिस घर आ जाएं, परन्तु प्रवाहित करने के बाद लौटते समय पीछे मुड़कर कदापि न देखें। वापिसी में एक इमरती किसी कुत्ते को खिलाएं और घर आ जाएं, परन्तु घर में बिना हाथ पैर धोए प्रवेश न करें। इस उपाय को आपको लगातार सात बुधवार को विश्वास के साथ करना है। इससे वाहन क्रय करने में आने वाली बाधा अवश्य दूर हो जाएगी।

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण

व्यक्ति किसी भी क्षेत्र चाहे सरकारी हो या गैर–सरकारी या व्यवसाय, वह अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करते हुए अपने विकास की तीव्र इच्छा रखता है। वह जीवन भर एक ही स्तर को नहीं जीना चाहता है बल्कि सदैव अपने स्तर से ऊपर उठना चाहता है। उसकी यही इच्छा उसके कार्यक्षेत्र में उन्नति पाने की इच्छा को तीव्र करती है। वह अपनी आय में, अपने लाभ में, अपनी शक्ति में वृद्धि चाहता है। कई बार वह अपनी पदोन्नति सिर्फ आय में वृद्धि के लिए ही नहीं बल्कि अपने शक्ति व प्रभाव में वृद्धि के लिए भी चाहता है। इसके लिए वह भरपूर प्रयत्न भी करता है, लेकिन उसके प्रयत्न का प्रतिफल उसके परिश्रम के अनुरूप ही प्राप्त हो यह सदैव और सभी के साथ संभव नहीं होता। कई बार किसी को बिना अधिक परिश्रम के ही आय में वृद्धि व पदोन्नति प्राप्त हो जाती है, परन्तु किसी किसी को कठिन परिश्रम के बाद भी प्राप्त नहीं होती। ज्योतिष की मानें तो यदि व्यक्ति इमानदारी से अपना कर्म करता है एवं अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करता है, परन्तु उसके बाद भी उसके जीवन में बार–बार इस प्रकार की कठिनाई अथवा बाधा का आती है तो यह उसके जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रभाव से भी हो सकता है। ग्रहों की प्रतिकूलता व्यक्ति के उन्नति के मार्ग को बाधित करती हैं। इसलिए इसे जानना व्यक्ति के लिए आवश्यक है जिससे कि वह उचित मार्ग अपनाकर अपनी उन्नति में आने वाली बाधाओं को दूर कर सके।

पदोन्नति और स्थानान्तरण से संबंधित योग और उपाय

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति द्वितीयेश के साथ शुभ भाव में स्थित है। आप सर्वोच्च पद व अधिकार का सुख प्राप्त करेंगे।

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य ग्रहण योग बना रहा है। आपको अपनी पदोन्नति में अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और अपने अधिकारियों/अधिनस्थ कर्मचारियों का साथ लेकर आप अपनी पदोन्नति में आने वाली बाधाओं को समाप्त कर देंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – माँस–मदिरा का सेवन न करें। गोमेद धारण करें।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य राहु के साथ स्थित है एवं दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। आपको अपनी पदोन्नति के लिए अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और अपने अधिकारियों/अधिनस्थ कर्मचारियों का साथ लेकर आप अपनी पदोन्नति में आने वाली बाधाओं को समाप्त कर देंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – लोहे अथवा लकड़ी की वस्तुओं का व्यापार न करें। कैसा भी गंदा पानी आपके घर के चाहरदीवारी के अन्दर नहीं जमा होना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है और वह उच्च या स्वराशि का नहीं है। आपको पदोन्नति प्राप्त करने के लिए अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और अपने अधिकारियों/अधिनस्थ कर्मचारियों का साथ लेकर आप अपनी पदोन्नति में आने वाली बाधाओं को समाप्त कर देंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – जीव हत्या न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि पहले, चौथे या आठवें भाव में स्थित नहीं है एवं उच्च का या स्वराशि का नहीं है। आपकी पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न होंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दूसरों का सम्मान करें।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव में छठें, आठवें या बारहवें भाव का स्वामी स्थित है। आपको अपनी पदोन्नति के लिए अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और अपने अधिकारियों/अधिनस्थ कर्मचारियों का साथ लेकर आप अपनी पदोन्नति में आने वाली बाधाओं को समाप्त कर देंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में किसी भी त्रिक भाव अर्थात छठवें, आठवें या बारहवें भाव का स्वामी

दसवें भाव अथवा दसवें भाव के स्वामी पर दृष्टि डाल रहा है। आपकी पदोन्नति के मार्ग में अनेक बाधाएं उत्पन्न होंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और अपने अधिकारियों/अधिनस्थ कर्मचारियों का साथ लेकर आप अपनी पदोन्नति में आने वाली बाधाओं को समाप्त कर देंगे।

पदोन्नति बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) इस नाम का जाप करने के बाद '' ऊँ ह्रीं शं शनये नमः'' या ''ऊँ प्रां प्रीं प्रौं शं शनये नमः'' का काले हकीक की माला से विषम संख्या में जाप करें और फिर प्रणाम करके उठ जाएं। सभी सामग्री वहीं रहने दें। अगले दिन तिलक को छोड़कर बाकी सभी क्रियाएं जैसे धुप, दीप, अगरबत्ती व शनिदेव की पत्नी के नाम का स्मरण व शनिदेव के मंत्र का जाप आदि सब पुनः करें। इस प्रक्रिया को 43 दिन तक नियमित रूप से करें। यदि आपके लिए इतने लम्बे समय तक कर पाना संभव न हो तो आप एक दिन में भी इसे कर सकते हैं, परन्तु एक दिन में समापन करने पर आपको 51 माला जाप अवश्य करना होगा। इस प्रक्रिया के पूर्ण हो जाने पर यंत्र एवं सभी सामग्री को उस काले कपड़े में बांधकर बहते जल में प्रवाहित कर दें। फिर यथाशक्ति 1 अथवा 11 गरीब मजदूरों को भोजन कराएं जो कि सरसों के तेल में निर्मित हो और उन्हें वस्त्र व दक्षिणा भी दें।

कर्ज/अपव्यय और लोन

मनुष्य के गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के साथ ही असीमित आवश्यकताएं उत्पन्न होने लगती हैं। वह अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने की इच्छा करता है, परन्तु आर्थिक परिस्थितियां सदैव अनुकूल नहीं होतीं और वह अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय करने लगता है। उसे जिस प्रकार से उचित लगता है वह प्रयत्न करता है कि उसकी व उसके परिवार की सभी आवश्यकताएं पूर्ण हो जाएं। इसी प्रयत्न में वह कई बार कर्जदार बनता चला जाता है। संभवतः कई बार जीवन में अकस्मात ऐसी परिस्थितियां भी उत्पन्न हो जाती हैं। जब व्यक्ति को ना चाहते हुए भी ऋण लेना पड़ता है। जीवन में ऋण लेना और उसे समय से चुका पाना कठिन कार्य होता है। कई बार स्थिति इतनी कष्टमय हो जाती है कि व्यक्ति का जीना दूभर हो जाता है। ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में ऐसी परिस्थितियां ग्रहों के प्रभाव से उत्पन्न होती हैं। आर्थिक रूप से कर्जदार बनने की स्थिति में ज्योतिष में छठवें भाव व उसके स्वामी शनि को उसका कारण माना जाता है। ऐसी ही अनेक ग्रह स्थिति होती हैं जिसके कारण व्यक्ति को कर्ज लेना पड़ता है। इसे यदि पहले से जान लिया जाए तो कुछ हद तक परिस्थिति को अनुकूल बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

कर्ज/अपव्यय और लोन से संबंधित योग और उपाय

कर्ज/अपव्यय और लोन से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में छठवें भाव का स्वामी अस्त, वक्री अथवा नीच का है। आपको कर्ज लेना पड़ेगा। आपको किसी से कर्ज लेने में सावधानी से काम लेना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित परिश्रम से आप अपने जीवन में आने वाली आर्थीक परेशानियों को पूरी तरह से खत्म कर देंगे और आपको किसी से भी कर्ज नहीं लेना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – 43 दिन तक लगातार चने की दाल बहते हुए पानी में बहायें।

कर्ज/ऋण बाधा मुक्ति के सरल उपाय

(1) ऋण मुक्ति और धन वापसी के लिये किसी भी महीने के शुक्ल पक्ष के मंगलवार के दिन प्रदोष काल में यह पूजा प्रारंभ करें। किसी भी प्राण प्रतिष्ठित शिव मंदिर में जाकर श्रद्धापूर्वक शिव की उपासना करें। शिव पूजन के उपरांत अपने सामने दो दोने रख दें। एक दोने में यानी बायें हाथ वाले दोनें में 108 बिल्वपत्र पीले चंदन से प्रत्येक बिल्व पत्र में ओम् नमः शिवाय लिखकर रख दें। तत्पश्चात शुद्ध आसन बिछाकर एक बिल्वपत्र अपने दाहिनी हाथ में लें और इस पर ओम् ऋणमुक्तेश्वर महादेवाय नमः। मंत्र का जाप करें, और दाहिने हाथ वाले दोने में बिल्व पत्र को रख दें। ऐसा 108 बार करें। जाप पूरा होने के उपरांत एक पाठ ऋणमोचन मंगल स्तोत्र का करें। साथ ही सर्वारिष्ट शान्त्यर्थ शनि स्तोत्र का पांच पाठ भी करें। ऐसा नियमित 40 दिन तक पूजा करने से ऋण से छुटकारा मिल जाएगा।

(2) कर्ज़ से पीड़ित व्यक्ति को चाहिए कि दोनों मुट्ठी में काली राई लें। चौराहे पर पूर्व दिशा की ओर मुंह रखें तथा दाहिने हाथ की राई को बायीं और बायीं हाथ की राई को दाहिनी दिशा में फेंक दें। एक साथ राई को फेंकना चाहिए। राई फेंकने के पश्चात् चौराहे पर, सरसों का तेल डाल कर, दोमुखी दीपक जला देना चाहिए। दिया मिट्टी का रखना चाहिए। यह प्रयोग शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार को संध्या के समय करें। श्रद्धा द्वारा किया गया यह उपाय अवश्य कर्ज़ से मुक्ति दिलवाता है। एक बार सफलता न प्राप्त हो, तो दुबारा फिर कर लेना चाहिए। जिस चौराहे पर टोटका किया जा चुका हो, उस दिन उस चौराहे पर टोटका नहीं करना चाहिए। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। यदि अमावस्या हो और शनिवार हो, तो विशेष फलदायी होता है। तब यह टोटका करना जादुई चमत्कार से कम नहीं है।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध

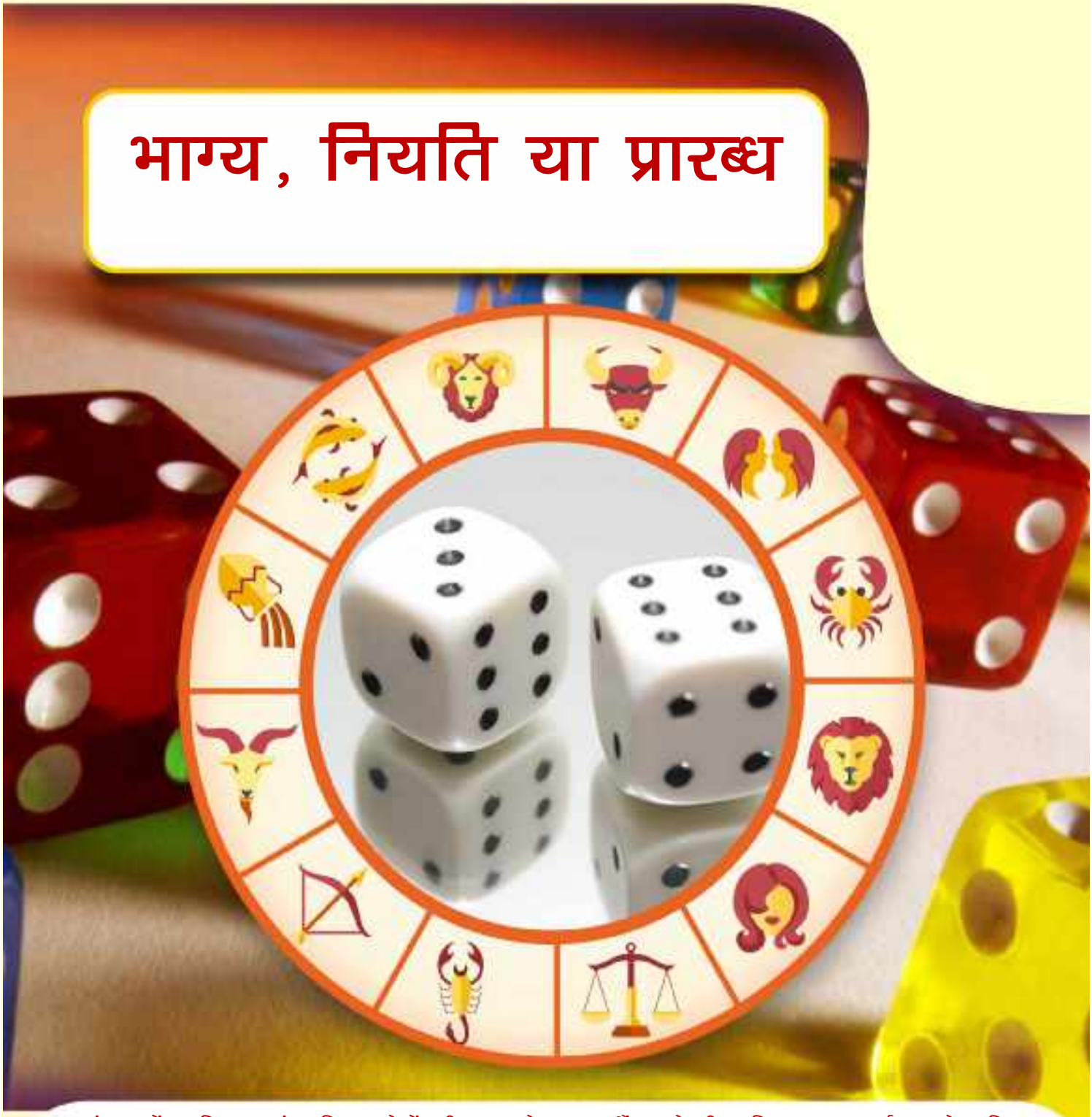

इस संसार में आस्तिक एवं नास्तिक दोनों की तरह के मनुष्य हैं। भले ही नास्तिक मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं। इसलिए उनके लिए भाग्य भी जीवन में कोई मायने नहीं रखता है, परन्तु चाहे अनचाहे ढंग से सबको इस सत्य को कभी न कभी स्वीकार करना पड़ता है कि ऐसी कोई शक्ति अवश्य है जो हमारे कर्मों के आधार पर हमारे भाग्य का निर्माण करती है। ऐसी धारणा है कि व्यक्ति के पूर्व जन्म में किए गए कर्मों का फल उसे अगले जन्म में प्राप्त होता है एवं इस कर्मों के फल को ही सामान्य शब्दों में भाग्य व लिखा माना जाता है जो कि व्यक्ति को वर्तमान में प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य का जीवन केवल भाग्य से ह प्रभावित नहीं होता अपितु उसे उसका कर्म भी उतना ही प्रभावित करता है अर्थात व्यक्ति के भाग्य का निर्माण उसके कर्मों के आधार पर ही होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि हमारा भाग्य हमारे किए गए कर्मों से बनता है तो क्यों कोई व्यक्ति वर्तमान में इमानदारी, सच्चाई, परोपकार आदि सद्गुणों का अनुसरण करने के बाद भी जीवन में अनेक कठिनाईयों को झेलता है, जबकि दूसरा व्यक्ति कुमार्ग पर चलते हुए भी सुखी जीवन व्यतीत करता है। यदि ध्यान से देखा जाय तो यह ज्ञात होता है कि कुमार्ग पर चलकर अर्जित की हुई खुशियां अधिक समय तक नहीं टिकतीं हैं। जबकि व्यक्ति के सद्कर्म उसके भाग्य में आने वाले अवरोधों को समाप्त करने में मदद करते हैं। यह विषय अत्यंत जटिल एवं तर्क योग्य है कि भाग्य श्रेष्ठ है या कर्म तथा भाग्य की वास्तविकता क्या है ? साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि जैसे ईश्वर सत्य है उसी प्रकार व्यक्ति का भाग्य भी उसके साथ होता है जो कि उसके कर्मों के आधार पर परिवर्तित होता रहता है।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित योग

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन-समृद्धि व मान-सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश, नवमेश, चंद्रमा और बृहस्पति चारों ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति शक्तिशाली राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन-समृद्धि व मान-सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव में शक्तिशाली ग्रह स्थित है। आपको अपने भाग्य का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव का स्वामी केन्द्र, त्रिकोण या ग्यारहवें भाव में उच्च राशि, मित्र राशि अथवा स्व राशि में उपस्थित है। आप भाग्यशाली व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में काहल योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन-सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की बृहस्पति के साथ युति है- जो कि एक अनुकूल स्थिति में है। एक शुभ योग का निर्माण हो रहा है। आप धन संबंधी मामलों में भाग्यशाली होंगे, अत्युत्तम आय होगी तथा निश्चित रूप से बहुत धनवान होंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है। यह वेशि योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न कर रहा है। जैसा कि संबंधित ग्रह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है, अतः यह एक शुभ योग है। इस समग्र योग को शुभ-वेशि योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप लम्बे कद और सम दृष्टि वाले होंगे। इसके अतिरिक्त, आप सत्यनिष्ठ और आशावादी दृष्टिकोण वाले होंगे। हालांकि, आप बहुत उर्जावान प्रवृत्ति के नहीं हो सकते हैं। यद्यपि आप बहुत धनी नहीं हो सकते हैं, फिर भी, आप अपने भाग्य से खुश रहेंगे तथा चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीचस्थ है तथा द्वादशेश चौथे भाव में बैठा हुआ है। आपका जीवन सार्थक नहीं हो सकता है, आप इर्ष्यालु प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा आपको दुखी व कष्टमय जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। आपको अपना व्यवहार संतुलित रखने से लाभ

होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – पुजारियों और साधुओं की सेवा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी वक्री या नीच का है या त्रिक भाव में स्थित है। आपके भाग्य में बाधाएं अवश्य उत्पन्न होंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित परिश्रम करने से आप अपना भाग्य खुद ही निर्मित करेंगे, उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – मजदूरों का पैसा अपने पास न रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव में गुरु अपनी ही नीच राशि में स्थित है। आपको अपने भाग्य से किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं मिलेगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित परिश्रम करने से आप अपना भाग्य खुद ही निर्मित करेंगे, उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – पूजा स्थल की नियमित सफाई करें।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पर वक्री शनि की दृष्टि पड़ रही है। आपको अपने भाग्य का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित परिश्रम करने से आप अपना भाग्य खुद ही निर्मित करेंगे, उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – सोना पहनें। दस अंधों को खाना खिलायें।

आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव के स्वामी के साथ गुरु अपनी नीच राशि में स्थित है। आपके भाग्य में बाधाएं आएंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित परिश्रम करने से आप अपना भाग्य खुद ही निर्मित करेंगे, उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – गाय की सेवा करें। अपना चरित्र ठीक रखें।

भाग्य बाधा दूर करने के लिए सरल उपाय

(1) प्रातः काल सर्वप्रथम झाड़ू लगायें, परन्तु शाम होने के बाद भूलकर भी झाड़ू न लगायें।

(2) कभी कोई ऐसा कर्म न करें जिससे किसी की आत्मा अथवा शरीर को लेशमात्र भी कष्ट पहुँचे।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि

मनुष्य के मन में असीमित इच्छाएं होती हैं। वह संसार के समस्त भौतिक भोग विलास की वस्तुएं, धन–संपदा, सुख–समृद्धि इन सब को प्राप्त करना चाहता है एवं इन्हें प्राप्त करने के लिए आजीवन अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रयत्न भी करता है। इसके साथ–साथ उसकी एक और इच्छा भी होती है वह है समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान की प्राप्ति। वह चाहता है उसके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना हो, उसे सब लोग सम्मान दें उसकी ख्याति दूर–दूर तक फैले इत्यादि। इतना ही नहीं वह अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए चाहता है कि उसके घर–परिवार के सदस्य भी ऐसा कोई कार्य न करें जिससे उसे अपयश मिले। यह सर्वथा सत्य है कि मनुष्य चाहे इस संसार में कितनी ही भौतिक संपदा एकत्र कर ले, परन्तु उसकी मृत्यु के उपरांत उसके साथ मात्र उसके अच्छे कर्म ही जाते हैं एवं इस भौतिक संसार में भी उसे उसके कर्मों के अनुसार ही आजीवन याद किया जाता है। व्यक्ति का एक गलत आचरण उसके जीवन के समस्त अच्छे कार्यों को अपयश में बदल देता है इसलिए यश की कामना करने वाले व्यक्ति को सदैव अपने कार्यों का चयन बुद्धिमतापूर्ण ढंग से करना चाहिए। किन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि व्यक्ति को अपयश उसके या उसके पारिवारिक जनों के कार्यों के कारण नहीं मिलता अपितु अनचाहे, अनजाने अथवा विपरित परिस्थितियों के कारण मिल जाता है। ज्योतिषिय दृष्टि से इसमें व्यक्ति का दोष नहीं होता बल्कि उसके ग्रहों की प्रतिकूलता के कारण ऐसा होता है जो कि उसके भाग्य में सम्मिलित होने के कारण उसे उसका भुगतान करना पड़ता है। इस प्रकार की यश बाधाएं व्यक्ति को मानसिक रूप से बहुत पीड़ा देती हैं। इसलिए इन्हें जानकर इसके लिए उचित उपाय करना चाहिए।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित योग

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध तीसरे भाव में स्थित है तथा बृहस्पति त्रिकोण में बैठा हुआ है। आप अत्यंत साहसी व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन-समृद्धि व मान-सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश, नवमेश, चंद्रमा और बृहस्पति चारों ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति शक्तिशाली राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन-समृद्धि व मान-सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न पर बृहस्पति की दृष्टि पड़ रही है। आप दुराचारी प्रवृत्तियों से मुक्त रहेंगे तथा आगे चलकर लोकप्रियता व प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में काहल योग बन रहा है। इस योग में जन्म होने के कारण आप अत्यन्त भाग्यवान, धन-सम्पदा सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीचस्थ है तथा द्वादशेश चौथे भाव में बैठा हुआ है। आपका जीवन सार्थक नहीं हो सकता है, आप इर्ष्यालु प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा आपको दुखी व कष्टमय जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। आपको अपना ब्यवहार संतुलित रखने से लाभ होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - विष्णु भगवान की पूजा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में, षष्ठेश की बारहवें भाव पर दृष्टि पड़ रही है। आप पापी/नास्तिक प्रवृति के हो सकते हैं, हॉलाकि, ये स्थिति आपके जीवन में कुछ समय के लिए ही होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव का स्वामी अस्त अथवा अपनी नीच राशि में स्थित है। आपको ख्याति आसानी से प्राप्त नहीं होगी, इसमें आपको बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। आपको सबसे मेलजोल बना के रखना चाहिए, और समाज के बेहतरी में अपना योगदान करने से आपके सामाजिक दायरे में बढ़ोत्तरी होगी और आपकी कीर्ति चारो ओर फैलेगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - फिटकरी से दाँत साफ करें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव में सूर्य अपनी नीच राशि में स्थित है या राहु के साथ स्थित है। आपको अपने जीवन में यश प्राप्त करने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। आपको सबसे मेलजोल बना के रखना चाहिए, और समाज के बेहतरी में अपना योगदान करने से आपके सामाजिक दायरे में बढ़ोत्तरी होगी और आपकी कीर्ति चारो ओर फैलेगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – खाकी रंग के धागे में ताँबे का सिक्का डालकर पहनें।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु मकर राशि में है और मकर राशि का स्वामी शनि दसवें भाव में स्थित है तथा सूर्य पर दृष्टि डाल रहा है। आपके जीवन में यश प्राप्ति में अवरोधों का सामना निश्चित रूप से करना पड़ेगा। आपको सबसे मेलजोल बना के रखना चाहिए, और समाज के बेहतरी में अपना योगदान करने से आपके सामाजिक दायरे में बढ़ोत्तरी होगी और आपकी कीर्ति चारो ओर फैलेगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने घर में गेंदा या सूर्यमुखी का पौधा लगायें।

यश बाधा दूर करने के लिए सरल उपाय

(1) आप अपना काम कर रहे हो कठिन परिश्रम के बावजूद भी लोग आपका हक मार देते हैं। अनावश्यक कार्य अवरोध उत्पन्न करते हों। आपकी गलती न होने के बावजूद भी आपको हानि पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा हो तो यह प्रयोग आपके लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा। रात्रि में 10 बजे से 12 बजे के बीज में यह उपाय करना बहुत ही शुभ रहेगा। एक चौकी के ऊपर लाल कपड़ा बिछा कर उसके ऊपर 11 जटा वाले नारियल। प्रत्येक नारियल के ऊपर लाल कपड़ा लपेट कर कलावा बांध दें। इन सभी नारियल को चौकी के ऊपर रख दें। घी का दीपक जला करके धूप–दीप नैवेद्य पुष्प और अक्षत अर्पित कर, नारियल के ऊपर कुमकुम से स्वास्तिक बनाए और उन प्रत्येक स्वास्तिक के ऊपर पांच–पांच लौंग रखें और एक सुपारी रखें। माँ भगवती का ध्यान करें। कष्टों से मुक्ति के लिए मां से प्रार्थना करें। कम्बल का आसन बिछा कर ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाय विच्चे ओम् शैलपुत्री देव्यै नमः11 माला जाप करें, तत्पश्चात नारियल सहित समस्त सामग्री को सफेद कपड़े में बांध कर अपने ऊपर से 11 बार वार कर सोने वाले पलंग के नीचे रख दें। सुबह ब्रह्म मुहूर्त में बिना किसी से बात किए यह सामग्री कुएं, तालाब या किसी बहते हुए पानी में प्रवाह कर दें। कैसी भी कानूनी समस्या होगी उससे छुटकारा मिल जाएगा।

(2) यदि आपको समाजिक प्रतिष्ठा नहीं मिल रही है, तो तांबे के बर्तन में जल भरकर उसमें शहद व सोना या चांदी का सिक्का डाल दें और नित्य सुबह उठ कर उस जल को पी जायें। इससे आपको लाभ की अनभूति होगी।

शत्रु/कोर्ट कचहरी

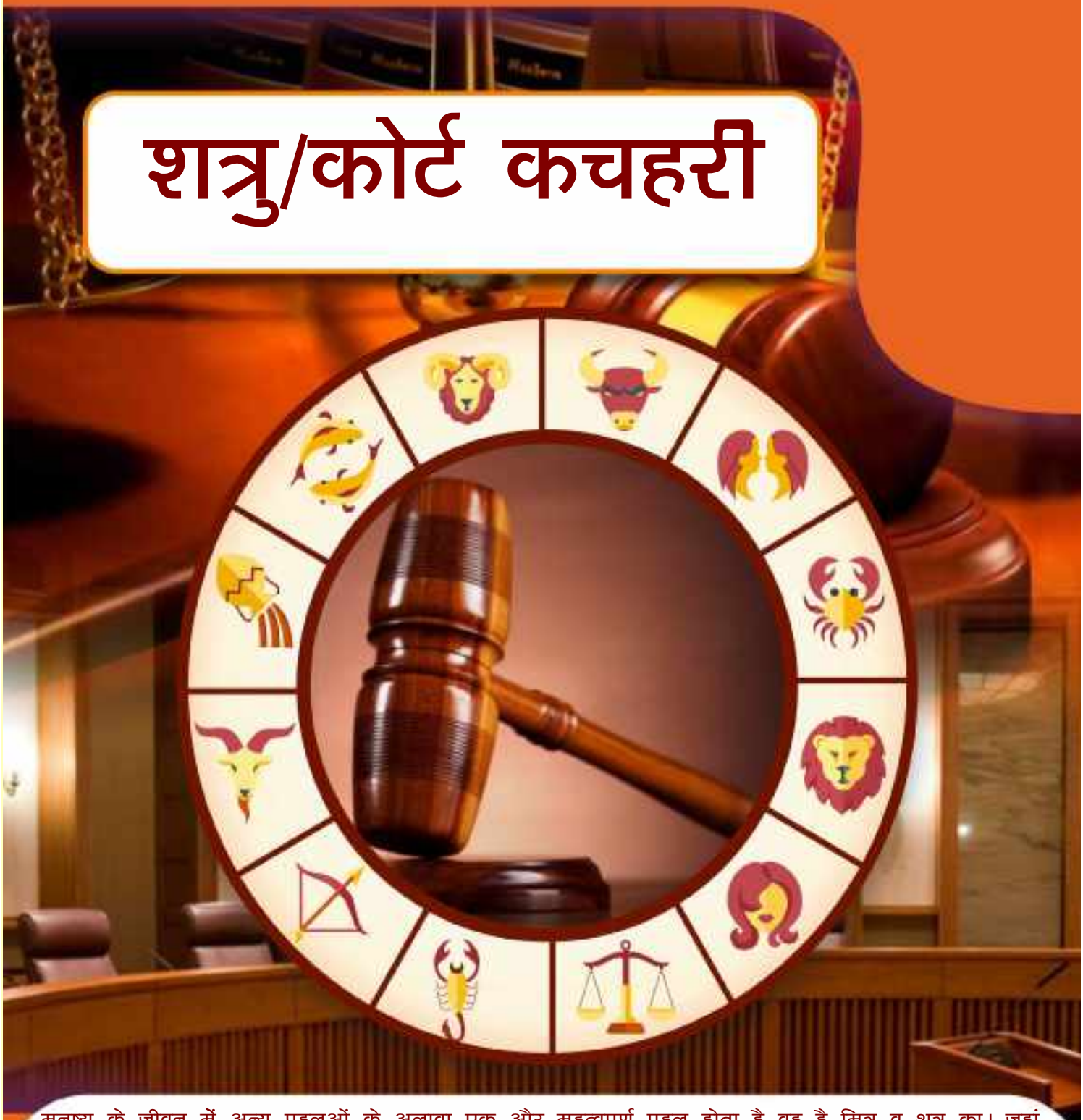

मनुष्य के जीवन में अन्य पहलुओं के अलावा एक और महत्वपूर्ण पहलु होता है वह है मित्र व शत्रु का। जहां व्यक्ति मित्रों व सहयोगियों के सहयोग से सफलता अर्जित करता है, वहीं शत्रु उसे सफलता के मुकाम से पिछे ढकेलने का भरपूर प्रयत्न करता है। मित्रों का चयन करना और मित्र बनाना जितना ही मुश्किल होता है, शत्रु बनाना उतना ही आसान अथवा इसे ऐसे भी कहा जा सकता है कि शत्रु बिना बनाए भी बन जाते हैं। शत्रु बनने में किसी एक कारण की भूमिका नहीं होती, अपितु अनेक कारण हो सकते हैं। आपकी सफलता, आपका योग्यता, आपका सम्मान, आपका धन, आपकी कर्मठता, लोगों में प्रतिस्पर्द्धा की भावना, आगे निकलने की होड़ आदि अनेक ऐसे कारण हैं जिससे अन्य लोगों को आपसे इर्ष्या होने लगती है। यही इर्ष्या व्यक्ति के लिए शत्रु पैदा करती है। आपके मित्र आपको समय पर सहायता पहुंचाएं या ना पहुंचाएं परन्तु आपके शत्रु समय पाते ही आपका अहित करने का पूरा प्रयास करते हैं। जीवन में शत्रुओं का सक्रिय होना अत्यंत समस्याएं उत्पन्न करता है। शत्रु का होना भी एक प्रकार का रोग होता है जो व्यक्ति को हानि अवश्य पहुंचाता है। ज्योतिष में हर उस कारक को शत्रु की संज्ञा दी गई है जो व्यक्ति को हानि पहुंचाता है अथवा हानि पहुचाने का प्रयास करता है। शत्रुओं का व्यक्ति के जीवन में सक्रिय होना ग्रहों की उपस्थिति से प्रभावित होता है। यही कारण है कि कोई व्यक्ति अनेक शत्रुओं के होते हुए भी वह उनका दलन करते हुए सफलता अर्जित कर लेता है, जबकि अन्य को शत्रुओं के कारण जीवन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इसलिए ग्रहों के प्रभाव को जानना आवश्यक हो जाता है।

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित योग और उपाय

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध तीसरे भाव में स्थित है तथा बृहस्पति त्रिकोण में बैठा हुआ है। आप अत्यंत साहसी व्यक्ति होंगे।

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीचस्थ है तथा द्वादशेश चौथे भाव में बैठा हुआ है। आपका जीवन सार्थक नहीं हो सकता है, आप इर्ष्यालु प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा आपको दुखी व कष्टमय जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है। आपको अपना व्यवहार संतुलित रखने से लाभ होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – माँस–मदिरा का सेवन न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आपको अपने शत्रुओं के कारण हानि होगी। आपको अनावश्यक रूप से किसी से शत्रुता करने से बचना चाहिए। हॉलाकि, आप किसी भी प्रकार के शत्रु का सामना करने और उसको समुचित जवाब देने में पूर्णतः सक्षम होंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – विधवा स्त्रियों का आशीर्वाद लें।

शत्रु वर्ग से सुरक्षा के लिए सरल उपाय

(1) यदि आपको कोई व्यक्ति ज्यादा परेशान करता है तो पलंग के नीचे कांस्य के वर्तन में जल भर कर उसमें लाल चन्दन व सोना या चांदी का सिक्का रखें। अगले दिन उस जल को किसी पेड़ की जड़ में डाल दें।

(2) गुंडों से तकलीफ होने पर महिलाएं अपने पर्स में 5 अशोक वृक्ष के पत्ते रखें। पत्तों को पहले पूजा में रखें, उनपर रोली का तिलक लगाएं। धूप–दीप दिखाएं और रामाय नमः कहते हुए, भगवान् के उस स्वरूप का ध्यान करें, जिसमें उन्होंने धनुष–वाण लिया हुआ है। भगवान् हमारी रक्षा करेंगे, ऐसा सोचते हुए पर्स में पत्ते रख लें। इन पत्तों को शुक्ल पक्ष के शुक्रवार से रख सकते हैं। जब पत्ते सूख जाएं, चूरा हो जाएं, तो नवीन पत्ते रखें और पुराने पत्तों को, वृक्ष के नीचे, पवित्र स्थान पर रख दें।

Disclaimer

(1) Please note that an astrological prediction is just an opinion of the astrologer on the basis of the Horoscope and has no scientific authenticity. These predictions are based upon the characteristics, placements, aspects, associations, strengths, weaknesses of the planets and the ability, command over the astrology subject and experience and competence of the astrologer in the Indian Vedic Astrology.

(2) Recommendation for astrological remedies such as gemstones, mantras, yantras etc are often prescribed after diligent study of the client's birth chart and with due exercise of his prudence and judgment. It must be clearly understood that every such prescription is accompanied by a prescribed method and procedure, which is expected to be followed by our clients with diligence MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) is not responsible for any claims for negative functioning of any prescription of astrological remedy provided. The remedies you receive should not be used as a substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as lawyer, doctor, psychiatrist, or financial advisor.

(3) The spiritual and material benefits stated with respect to various astrological forecasts, mantras, yantras, pujas, stones or any other spiritual items as well as other products and services are as per th ancient Indian Scriptures and literature. However, as the socio-economic and religious circumstances have changed a lot since then, neither MindSutra Software Technologies and its Software Users (Whicl Provided this Report) can be held responsible for non functioning or non fructification of the stated results.

(4) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) makes no guarantees or representations vis-a-vis the accuracy or consequence of any aspect of the astrological remedy and predictive advice imparted and cannot be held accountable for any interpretation, action, or use that may be made because of information given.

(5) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) ensures complete confidentiality of customer's identity, birth details and the prediction details. MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) further ensures that no use will be made of the information that may come to the knowledge of the management of the site or revealed in the horoscope of the customer. Such information will only be used to communicate to the customer or will be retained in the databank for referencing purpose if you may need to consult in future.

(6) Any type of Legal Claim shall be limited to any amounts you may have paid to MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) shall have no other Liability except to the extent permitted by applicable law. In no event will MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) be liable for any indirect, consequential, incidental, special, multiple, punitive, or similar damages.

(7) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) reserves the right to change, modify, add or delete portions of the Terms of Use at any time. Your continued use following any changes in the terms indicates your acceptance to the changes.